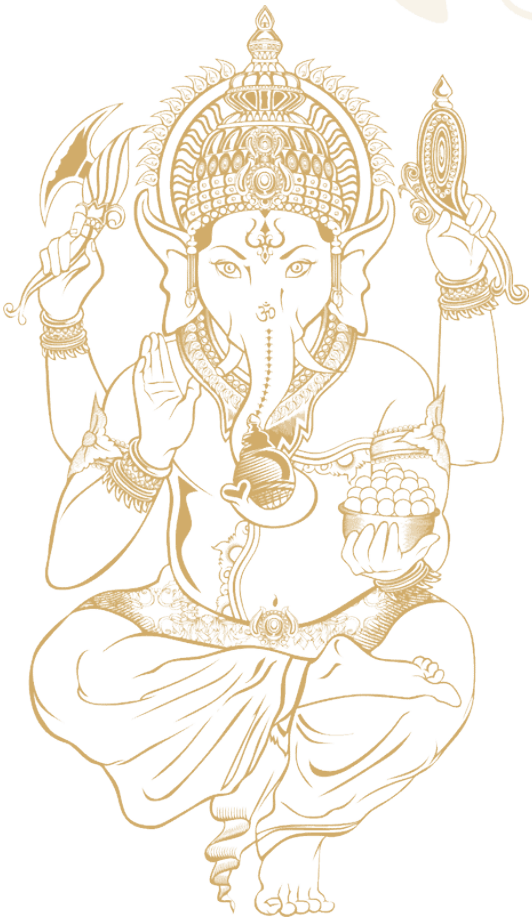

Mr. Manwendra Sharma

08 May 1965

10:45 AM

Forbesganj

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120177201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**08/05/1965**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**10:45:00 घंटे**
इष्ट	14:24:55 घटी
स्थान	**Forbesganj**
राज्य	Bihar
देश	India

अक्षांश	26:18:00 उत्तर
रेखांश	87:16:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:19:04 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	11:04:04 घंटे
वेलान्तर	00:03:33 घंटे
साम्पातिक काल	02:07:23 घंटे
सूर्योदय	04:59:02 घंटे
सूर्यास्त	18:16:16 घंटे
दिनमान	13:17:14 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	24:02:02 मेष
लग्न के अंश	15:20:08 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी	**कर्क - चन्द्र**
नक्षत्र-चरण	**आश्लेषा - 3**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	वृद्धि
करण	विष्टि
गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डे-डेविड
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1887	वैशाख	18
पंजाबी	संवत : 2022	वैशाख	26
बंगाली	सन् : 1372	वैशाख	25
तमिल	संवत : 2022	चिथिराई	26
केरल	कोल्लम : 1140	मेदम	25
नेपाली	संवत : 2022	वैशाख	26
चैत्रादि	संवत : 2022	वैशाख	शुक्ल 8
कार्तिकादि	संवत : 2022	वैशाख	शुक्ल 8

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 8
तिथि समाप्ति काल _____: 22:48:38
जन्म तिथि _____: 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:55:20 घंटे
जन्म योग _____: आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग ____: वृद्धि
योग समाप्ति काल _____: 25:24:51 घंटे
जन्म योग _____: वृद्धि
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 11:49:31 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 28:44:26
भभोग _____: 56:40:16
भोग्य दशा काल _____: बुध 8 वर्ष 4 मा 8 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: तुला
सूर्य _____: सिंह
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

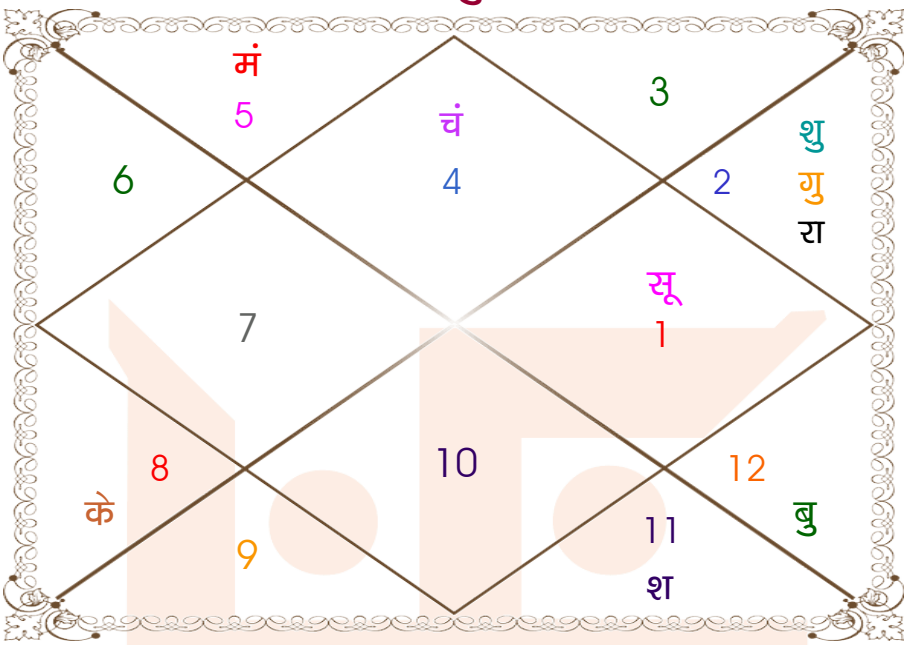

चन्द्र कुंडली

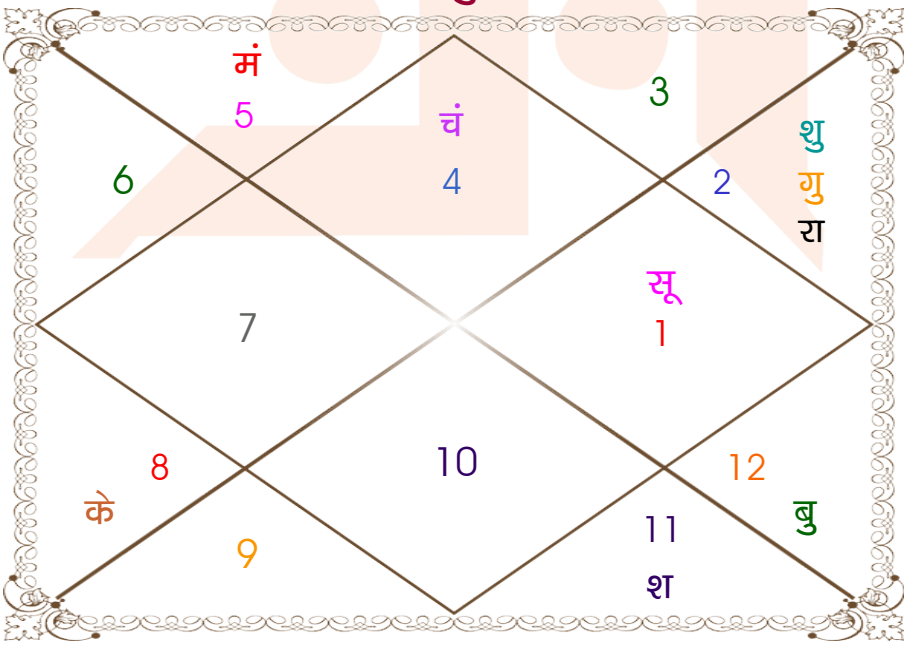

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

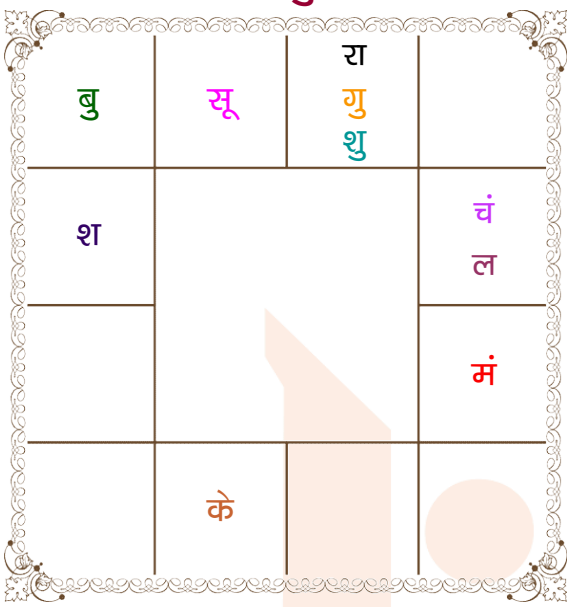

लग्न कुंडली

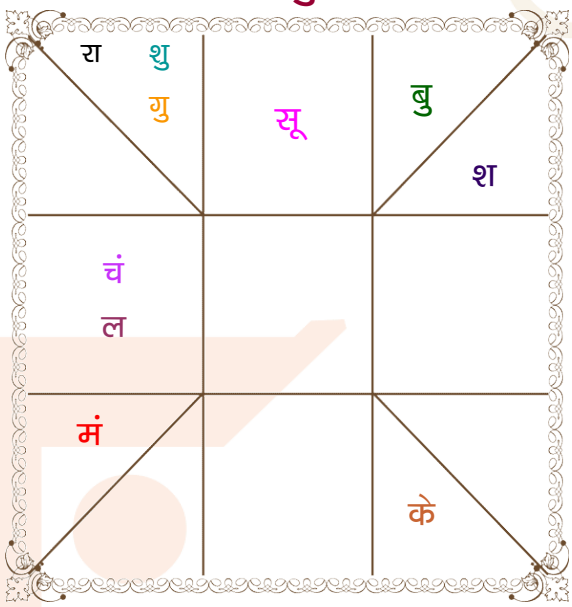

विंशोत्तरी
बुध 8वर्ष 4मा 8दि

बुध

08/05/1965

15/09/2076

बुध	16/09/1973
केतु	15/09/1980
शुक्र	15/09/2000
सूर्य	16/09/2006
चन्द्र	15/09/2016
मंगल	16/09/2023
राहु	16/09/2041
गुरु	16/09/2057
शनि	15/09/2076

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 11मा 18दि

संकटा

26/04/2021

26/04/2029

संकटा	04/02/2023
मंगला	26/04/2023
पिंगला	06/10/2023
धान्या	05/06/2024
भ्रामरी	26/04/2025
भद्रिका	06/06/2026
उल्का	06/10/2027
सिद्धा	26/04/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	15:20:08	311:07:08	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	---
सूर्य			मेष	24:02:02	00:58:02	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	उच्च राशि
चंद्र			कर्क	23:26:41	14:06:59	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	मंगल	स्वराशि
मंगल			सिंह	17:15:43	00:11:58	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
बुध			मीन	27:41:56	01:03:18	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	नीच राशि
गुरु			वृष	10:09:27	00:13:47	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र			वृष	00:50:31	01:13:54	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	राहु	स्वराशि
शनि			कुंभ	21:47:21	00:04:37	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	स्वराशि
राहु	व		वृष	20:43:33	00:00:02	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	20:43:33	00:00:02	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	मित्र राशि
हर्ष	व		सिंह	17:22:28	00:00:33	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगल	---
नेप	व		तुला	25:18:28	00:01:38	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
प्लूटो	व		सिंह	20:23:04	00:00:31	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			मेष	10:43:39	--	अश्विनी	--	1	मंगल	केतु	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:22:06

लग्न-चलित

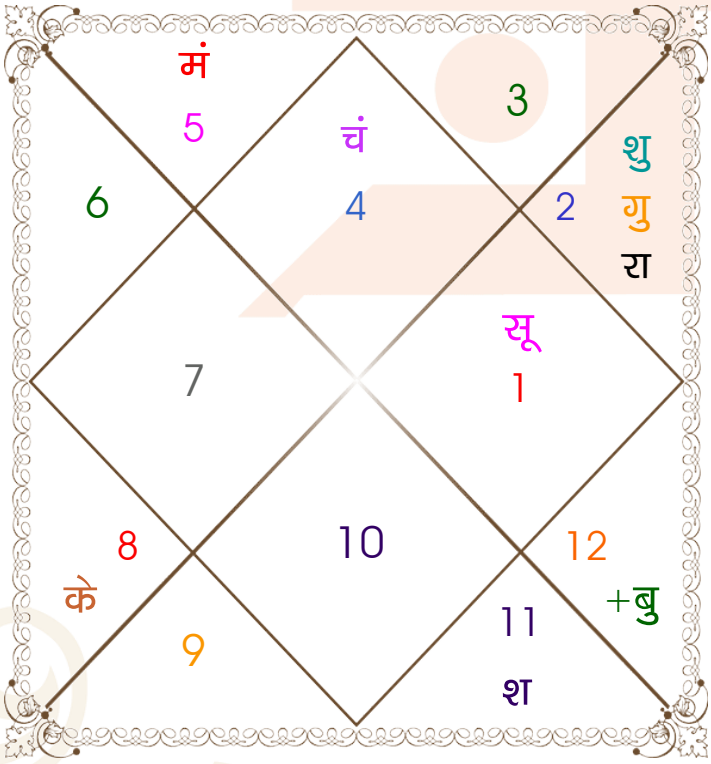

चन्द्र कुंडली

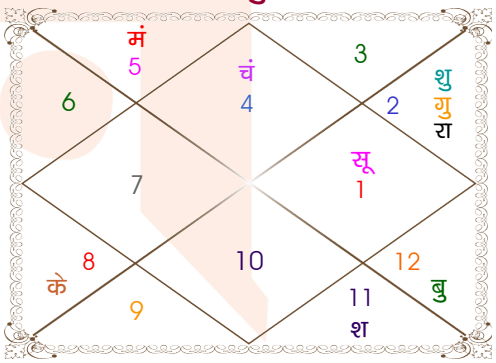

नवमांश कुंडली

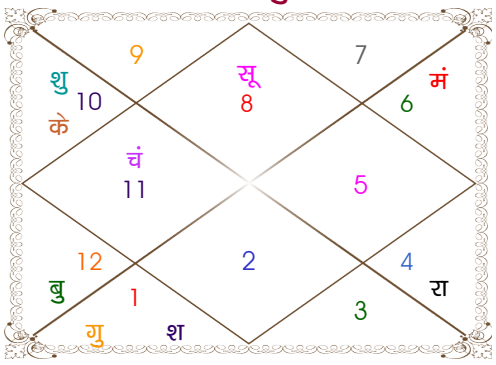

MANWENDRA SHARMA

Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan

9851036217, 9801136217

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	29:34:03	कर्क	15:20:08
2	कर्क	29:34:03	सिंह	13:47:58
3	सिंह	28:01:53	कन्या	12:15:48
4	कन्या	26:29:44	तुला	10:43:39
5	तुला	26:29:44	वृश्चिक	12:15:48
6	वृश्चिक	28:01:53	धनु	13:47:58
7	धनु	29:34:03	मकर	15:20:08
8	मकर	29:34:03	कुम्भ	13:47:58
9	कुम्भ	28:01:53	मीन	12:15:48
10	मीन	26:29:44	मेष	10:43:39
11	मेष	26:29:44	वृष	12:15:48
12	वृष	28:01:53	मिथुन	13:47:58

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	15:20:08
2	सिंह	09:58:31
3	कन्या	08:30:21
4	तुला	10:43:39
5	वृश्चिक	14:01:50
6	धनु	15:47:25
7	मकर	15:20:08
8	कुम्भ	09:58:31
9	मीन	08:30:21
10	मेष	10:43:39
11	वृष	14:01:50
12	मिथुन	15:47:25

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

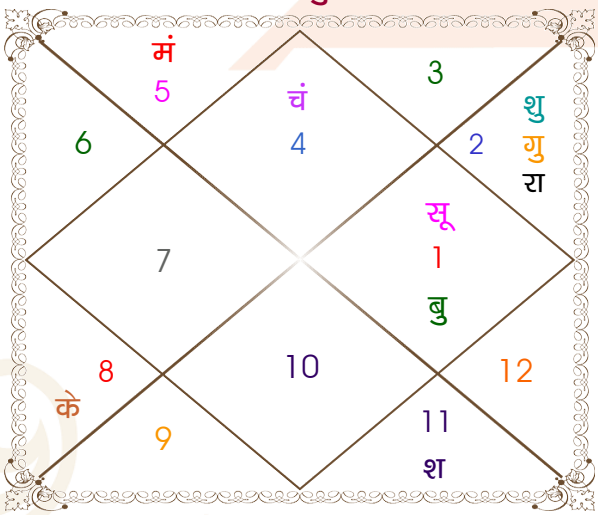

भाव कुंडली

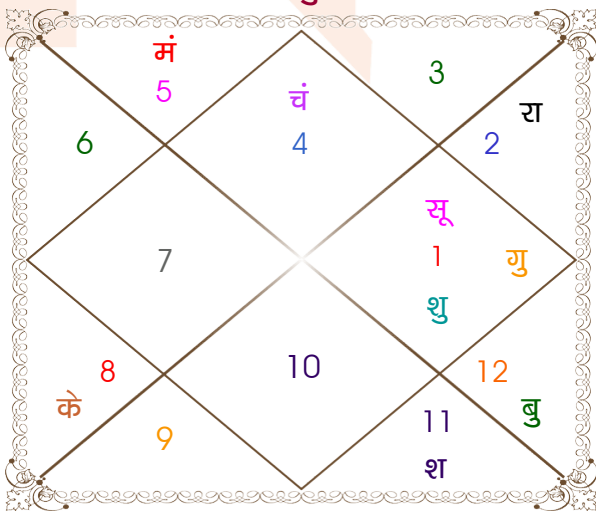

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	मृत	दीप्त	सभा	27.66	52 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	कुमार	स्वस्थ	नेत्रपाणि	7.47	42 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	युवा	मुदित	भोजन	0.54	47 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	भीत	नेत्रपाणि	0.42	68 %
गुरु	ज्ञाति	धन	वृद्ध	खल	कौतुक	1.95	32 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	मृत	स्वस्थ	भोजन	9.74	64 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध	स्वस्थ	प्रकाश	2.43	39 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	मुदित	कौतुक	0.00	46 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	मुदित	भोजन	0.00	46 %
कुल						50.20	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

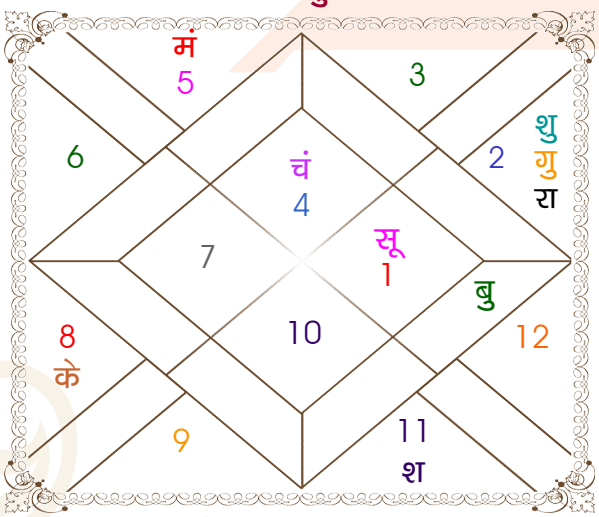

लग्न-चलित

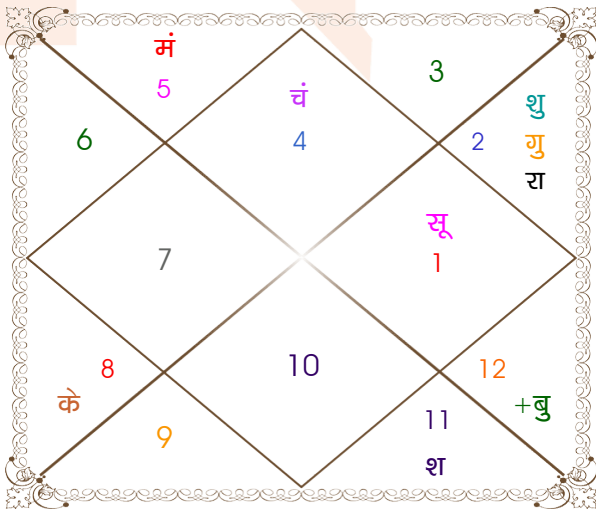

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

सुदर्शन चक्र

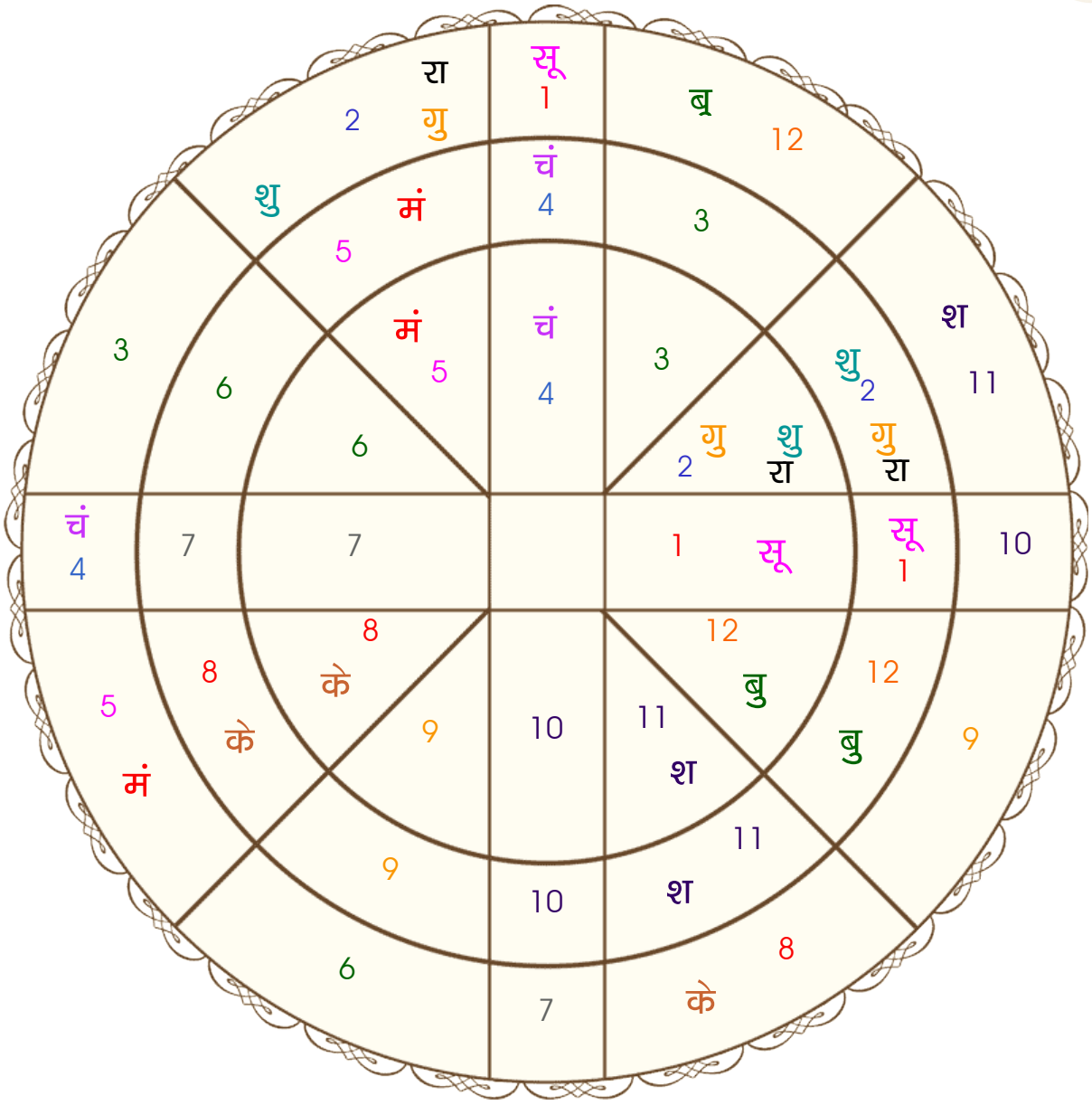

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 8 वर्ष 2 मास 24 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मेष	24:07:49	मंगल	शुक्र	बुध	बुध
चंद्र		कर्क	23:32:29	चंद्र	बुध	मंगल	गुरु
मंगल		सिंह	17:21:31	सूर्य	शुक्र	मंगल	मंगल
बुध		मीन	27:47:44	गुरु	बुध	गुरु	राहु
गुरु		वृष	10:15:15	शुक्र	चंद्र	चंद्र	राहु
शुक्र		वृष	00:56:19	शुक्र	सूर्य	राहु	सूर्य
शनि		कुंभ	21:53:09	शनि	गुरु	शनि	शनि
राहु	व	वृष	20:49:21	शुक्र	चंद्र	शुक्र	सूर्य
केतु	व	वृश्चि	20:49:21	मंगल	बुध	शुक्र	शनि
हर्ष	व	सिंह	17:28:16	सूर्य	शुक्र	मंगल	राहु
नेप	व	तुला	25:24:16	शुक्र	गुरु	बुध	गुरु
प्लूटो	व	सिंह	20:28:52	सूर्य	शुक्र	गुरु	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	15:25:56	चंद्र	शनि	गुरु	बुध
2	सिंह	10:04:19	सूर्य	केतु	शनि	केतु
3	कन्या	08:36:09	बुध	सूर्य	शुक्र	राहु
4	तुला	10:49:27	शुक्र	राहु	शनि	बुध
5	वृश्चि	14:07:38	मंगल	शनि	राहु	केतु
6	धनु	15:53:13	गुरु	शुक्र	सूर्य	शनि
7	मक	15:25:56	शनि	चंद्र	गुरु	राहु
8	कुंभ	10:04:19	शनि	राहु	गुरु	चंद्र
9	मीन	08:36:09	गुरु	शनि	शुक्र	चंद्र
10	मेष	10:49:27	मंगल	केतु	शनि	मंगल
11	वृष	14:07:38	शुक्र	चंद्र	गुरु	शनि
12	मिथु	15:53:13	बुध	राहु	शुक्र	चंद्र

के.पी. अयनांश : 23:16:18

फॉरच्युना : तुला 14:50:35

लग्न कुंडली

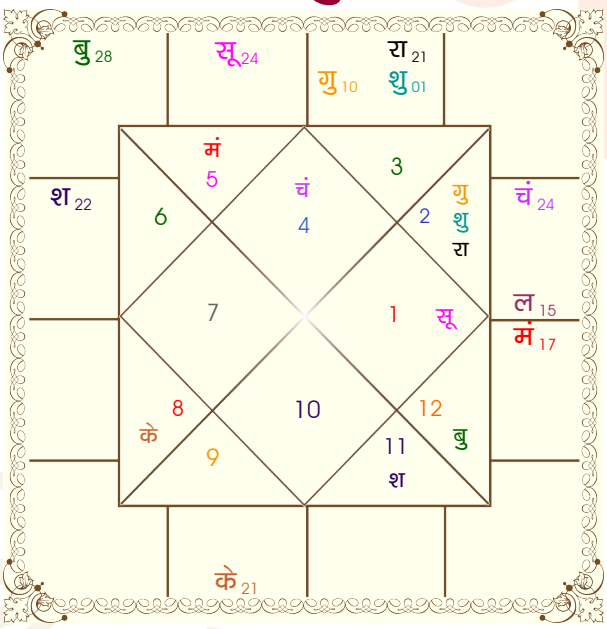

भाव कुंडली

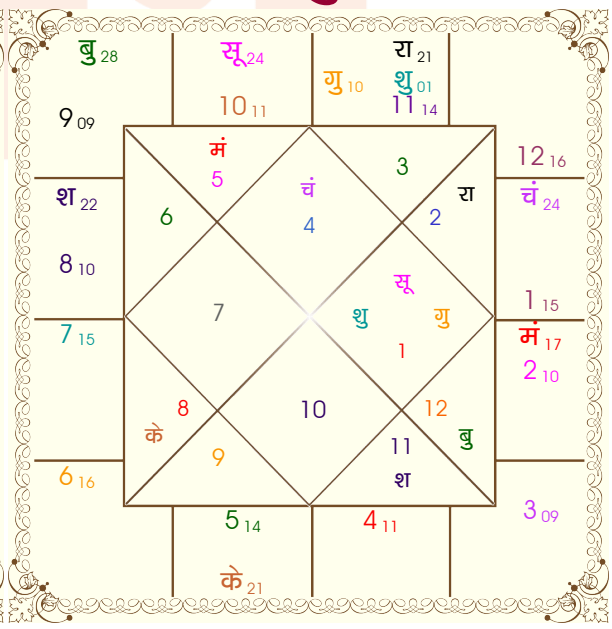

MANWENDRA SHARMA

Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan

9851036217, 9801136217

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, गुरु+ राहु+
2	सूर्य- मंगल, शुक्र-
3	चंद्र- बुध, केतु-
4	सूर्य- मंगल- शुक्र-
5	मंगल- केतु,
6	गुरु- शनि-
7	शनि-
8	शनि,
9	चंद्र, बुध+ गुरु- शनि- केतु,
10	सूर्य+ मंगल+ गुरु, शुक्र+ शनि,
11	सूर्य- मंगल- शुक्र- राहु,
12	चंद्र- बुध, केतु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 4- 10+ 11-
चंद्र	1, 3- 9, 12-
मंगल	2, 4- 5- 10+ 11-
बुध	3, 9+ 12,
गुरु	1+ 6- 9- 10,
शुक्र	2- 4- 10+ 11-
शनि	6- 7- 8, 9- 10,
राहु	1+ 11,
केतु	3- 5, 9, 12-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	मंगल

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	गु रा	चं	गु रा	चं
2	--	मं	शु	सू
3	--	--	चं बु के	बु
4	--	--	सू मं	शु
5	--	के	--	मं
6	--	--	श	गु
7	--	--	--	श
8	--	श	--	श
9	चं बु के	बु	श	गु
10	सू मं शु श	सू गु शु	--	मं
11	--	रा	सू मं	शु
12	--	--	चं बु के	बु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	2	3	मेष	10
चंद्र	1	7,11	कर्क	1
मंगल	5,10	---	सिंह	2
बुध	3,12	---	मीन	9
गुरु	6,9	---	वृष	10
शुक्र	4,11	6	वृष	10
शनि	7,8	1,5,9	कुम्भ	8
राहु	---	4,8,12	वृष	11
केतु	---	2,10	वृश्चिक	5

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4,11	6	10	3,12	---	9
चंद्र	3,12	---	9	5,10	---	2
मंगल	4,11	6	10	5,10	---	2
बुध	3,12	---	9	6,9	---	10
गुरु	1	7,11	1	1	7,11	1
शुक्र	2	3	10	---	4,8,12	11
शनि	6,9	---	10	7,8	1,5,9	8
राहु	1	7,11	1	4,11	6	10
केतु	3,12	---	9	4,11	6	10

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 24.03	चंद्र 113.44	मंगल 137.26	बुध 357.70	गुरु 40.16	शुक्र 30.84	शनि 321.79	राहु 50.73	केतु 230.73	हर्ष 137.37	नेप 205.31	प्लूटो 140.38
सूर्य	--	चतु	--	--	--	युति	--	--	--	--	सप्त	पंच
24.03	0.00	2.96	0.00	0.00	0.00	7.56	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91	1.73
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	--	पंच	--	चतु	--
113.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.27	0.00	2.65	0.00
मंगल	--	--	--	8वां	--	--	सप्त	--	4था	युति	--	युति
137.26	0.00	0.00	0.00	4.60	0.00	0.00	8.90	0.00	9.35	10.00	0.00	9.47
बुध	--	पंच	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
357.70	0.00	1.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	युति	--	युति	सप्त	--	सप्त	--
40.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.61	0.00	4.48	4.48	0.00	0.16	0.00
शुक्र	युति	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
30.84	7.56	0.00	0.00	0.00	5.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.37	0.00
शनि	3रा	--	सप्त	--	--	3रा	--	चतु	10वा	सप्त	--	सप्त
321.79	9.72	0.00	8.90	0.00	0.00	5.83	0.00	2.88	9.94	8.95	0.00	9.89
राहु	--	तृती	चतु	--	युति	--	--	--	सप्त	चतु	--	चतु
50.73	0.00	2.27	1.85	0.00	4.48	0.00	0.00	0.00	10.00	1.92	0.00	2.99
केतु	--	--	--	--	सप्त	--	चतु	सप्त	--	--	--	--
230.73	0.00	0.00	0.00	0.00	4.48	0.00	2.88	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	युति	--	--	--	सप्त	--	चतु	--	--	युति
137.37	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	8.95	0.00	1.92	0.00	0.00	9.51
नेप	सप्त	--	--	--	सप्त	सप्त	पंच	--	--	--	--	--
205.31	9.91	0.00	0.00	0.00	0.16	8.37	1.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	सप्त	--	चतु	युति	तृती	--
140.38	0.00	0.00	9.47	0.00	0.00	0.00	9.89	0.00	2.99	9.51	0.83	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	105.34	133.80	162.26	190.73	222.26	253.80	285.34	313.80	342.26	10.73	42.26	73.80
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
24.03	0.00	0.00	0.00	1.76	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.76	0.00	0.00
चंद्र	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
113.44	6.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	युति	--	--	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--
137.26	0.00	9.35	0.00	0.00	8.66	1.85	0.00	9.35	8.66	0.00	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	अष्ट	--
357.70	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.05	0.78	0.00
गुरु	तृती	चतु	5वां	षष्ठ	--	--	9वां	--	--	--	युति	--
40.16	0.64	1.74	9.76	0.63	0.00	0.00	8.57	0.00	0.00	0.00	9.76	0.00
शुक्र	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
30.84	0.00	0.00	0.00	0.00	3.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.66	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	--
321.79	0.00	6.70	0.00	0.00	5.42	0.00	0.00	6.70	0.00	4.01	0.00	0.00
राहु	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
50.73	0.48	0.00	0.00	0.00	6.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.32	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त	--
230.73	0.00	0.00	0.00	0.00	6.32	0.00	0.48	0.00	0.00	0.00	6.32	0.00
हर्ष	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
137.37	0.00	9.31	0.00	0.00	0.69	1.78	0.00	9.31	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
205.31	0.00	0.00	0.00	0.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.44	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
140.38	0.00	7.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	105.34	129.98	158.51	190.73	224.03	255.79	285.34	309.98	338.51	10.73	44.03	75.79
सूर्य	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
24.03	0.00	0.00	0.68	1.76	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.76	0.00	0.00
चंद्र	युति	--	अष्ट	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
113.44	6.61	0.00	1.00	0.00	0.00	0.00	6.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	युति	--	--	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--
137.26	0.00	7.23	0.00	0.00	9.43	2.78	0.00	7.23	6.08	0.00	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--
357.70	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.05	0.00	0.00
गुरु	तृती	चतु	5वां	षष्ठ	--	--	9वां	--	--	--	युति	--
40.16	0.64	3.00	9.85	0.63	0.00	0.00	8.57	0.00	0.00	0.00	9.19	0.00
शुक्र	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	अष्ट
30.84	0.00	0.00	0.00	0.00	1.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.89	1.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच
321.79	0.00	3.28	0.00	0.00	6.88	0.00	0.00	3.28	0.00	4.01	0.00	0.00
राहु	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
50.73	0.48	0.00	0.00	0.00	7.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.64	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त	--
230.73	0.00	0.00	0.00	0.00	7.64	0.00	0.48	0.00	0.00	0.00	7.64	0.00
हर्ष	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
137.37	0.00	7.15	0.00	0.00	1.92	2.75	0.00	7.15	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
205.31	0.00	0.00	0.00	0.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.44	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--
140.38	0.00	4.62	0.00	0.00	0.00	1.08	0.00	4.62	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

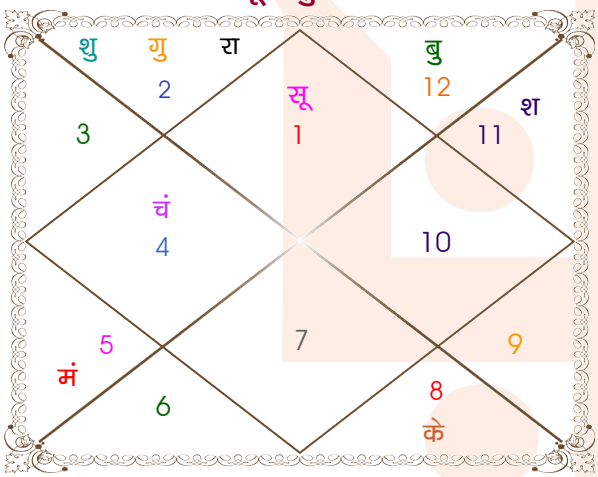

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

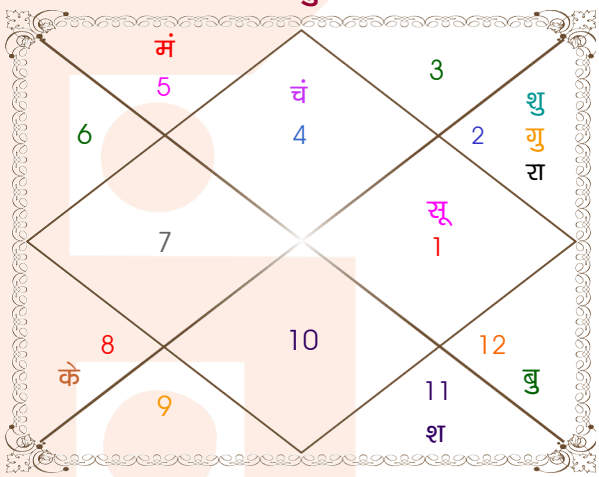

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

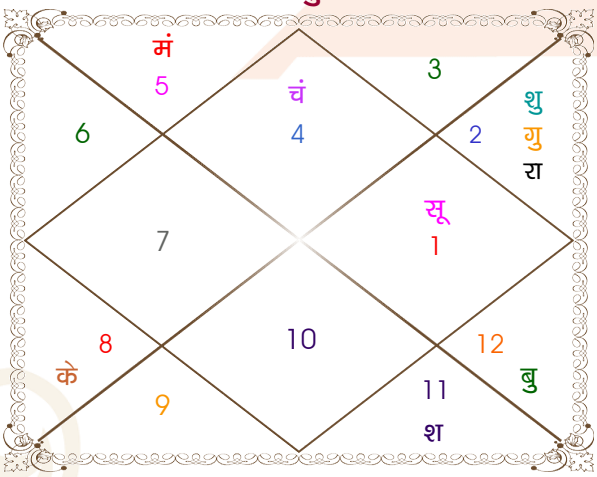

देह विचारः

होरा कुंडली

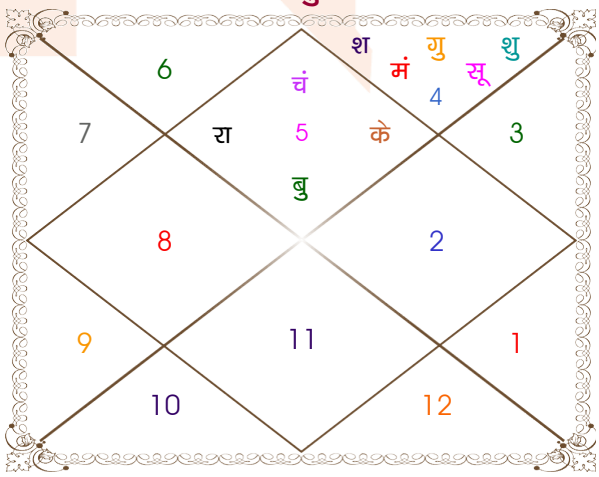

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

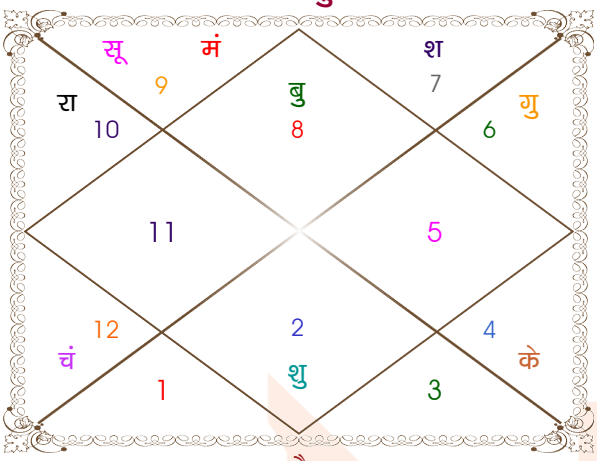

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

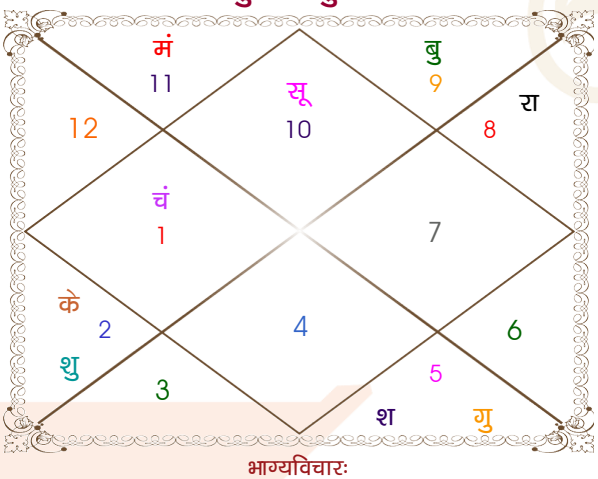

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

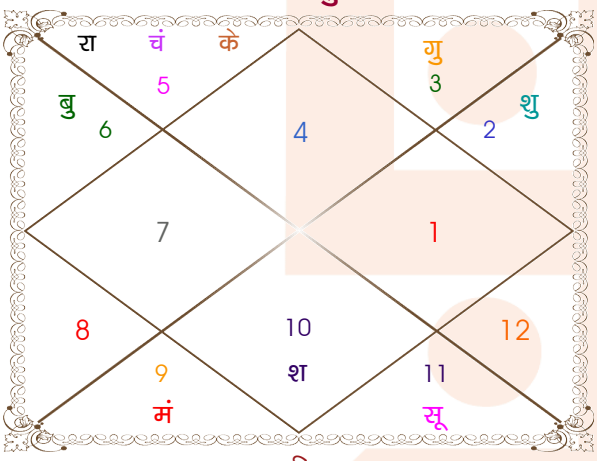

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

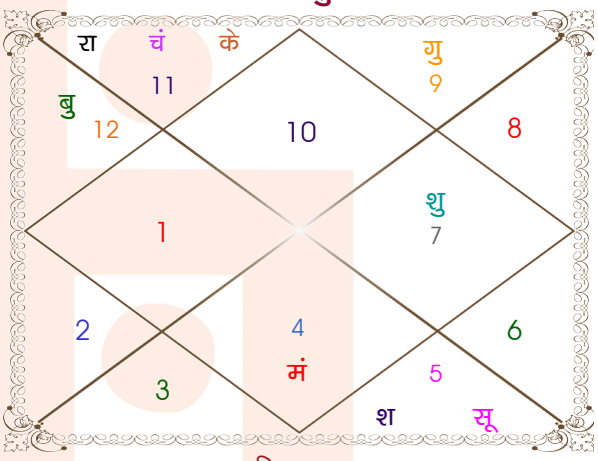

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

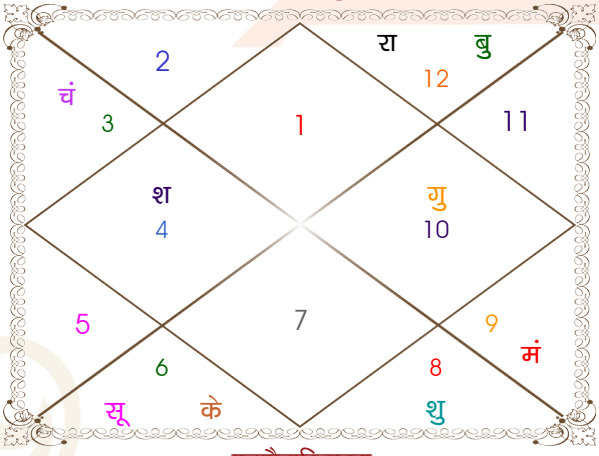

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

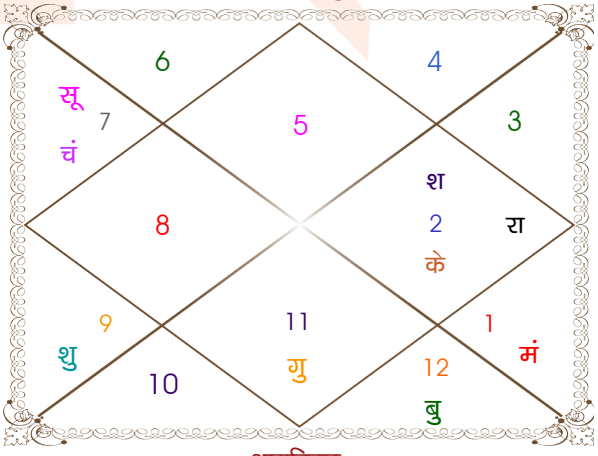

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

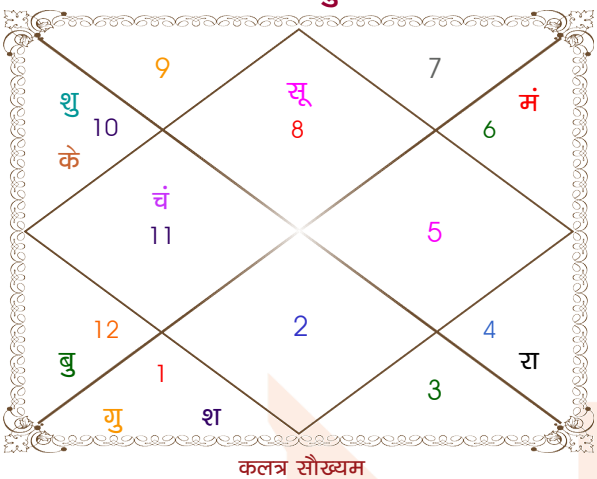

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

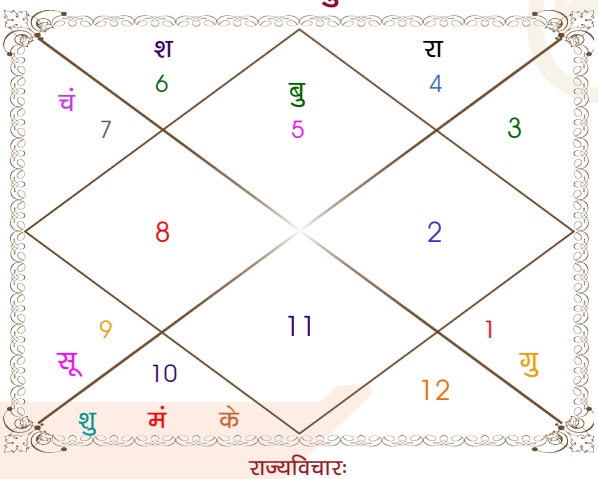

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

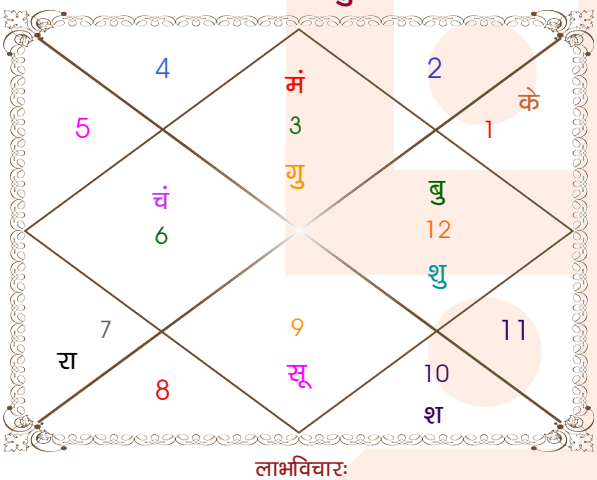

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

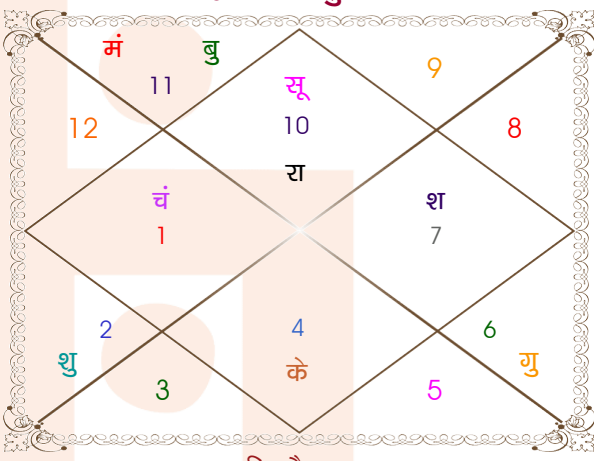

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

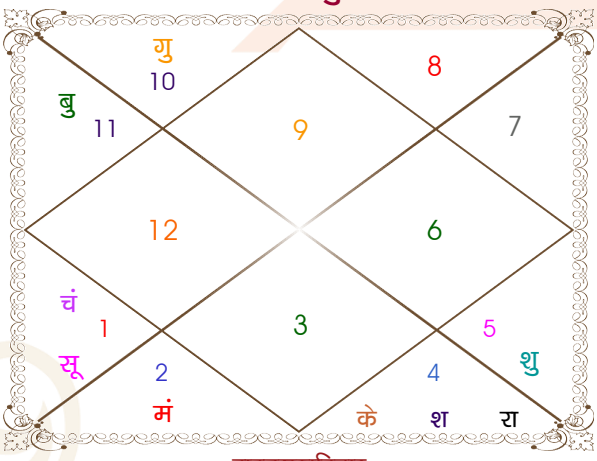

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

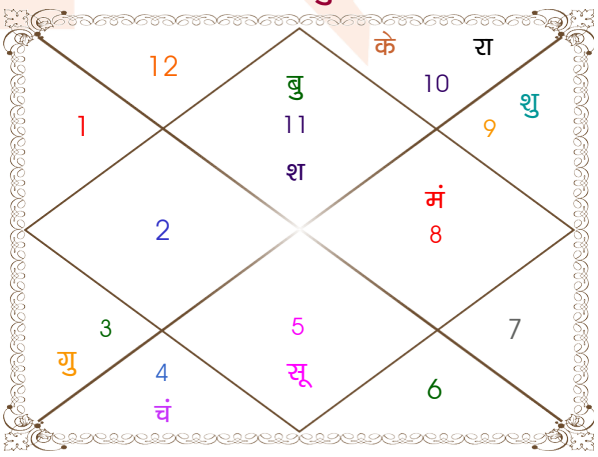

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

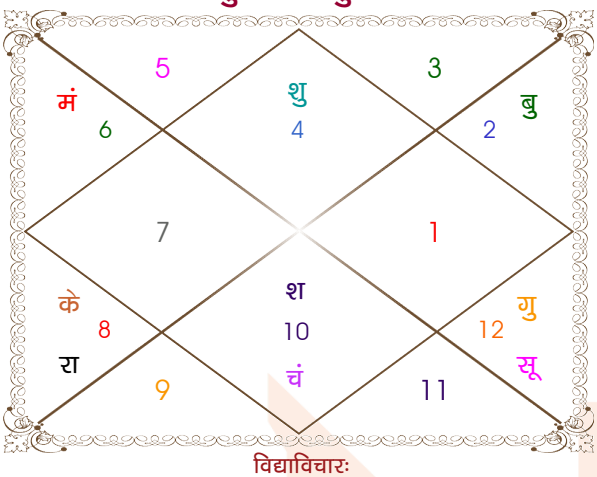

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

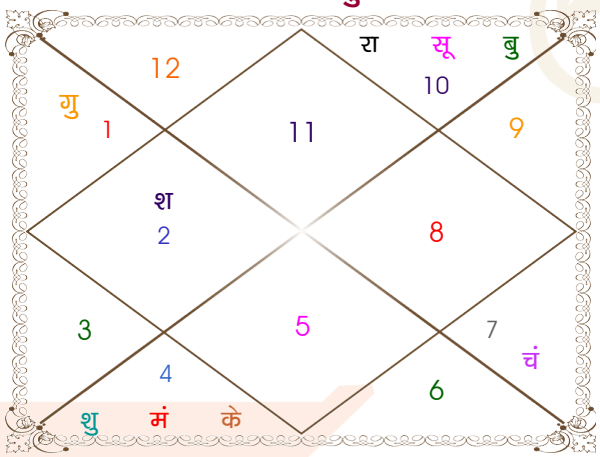

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

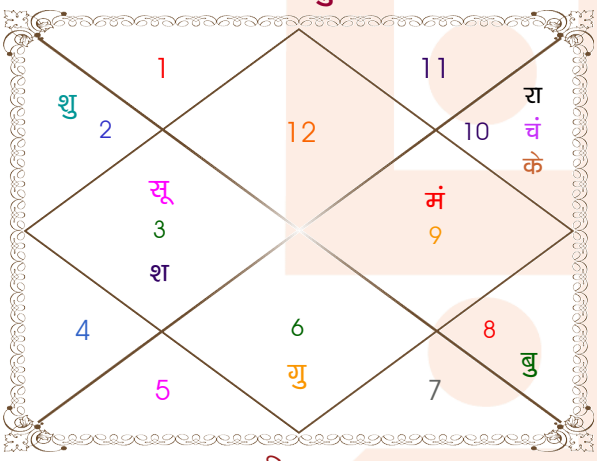

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

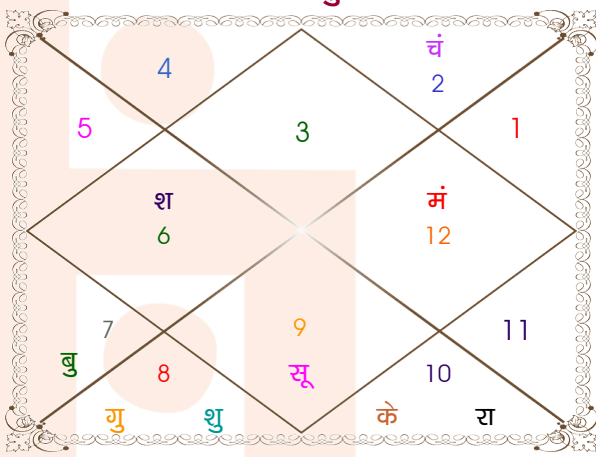

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

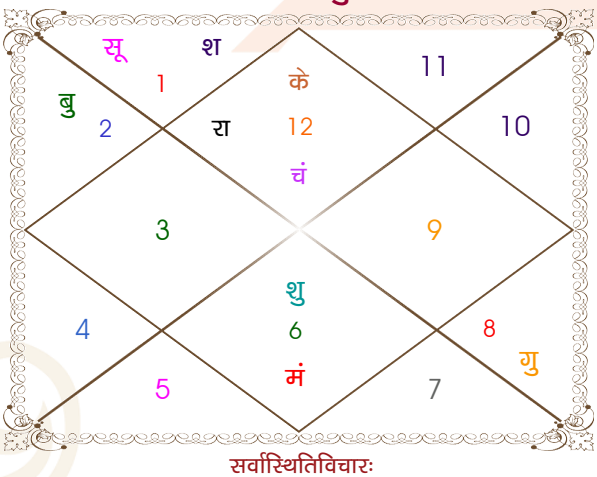

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

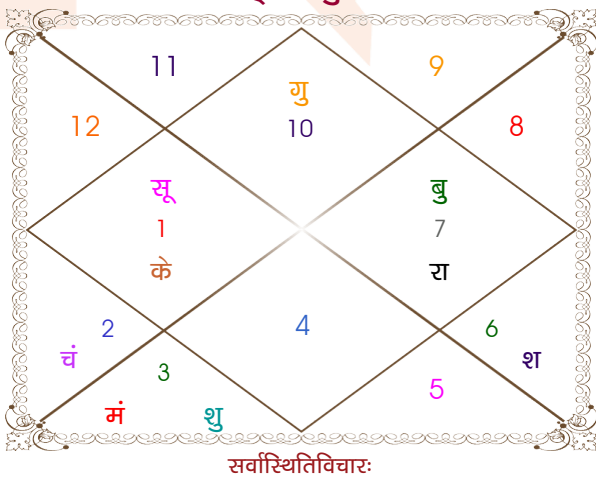

सर्वास्थितिविचारः

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कर्क	मेष	कर्क	सिंह	मीन	वृष	वृष	कुंभ	वृष	वृश्चि
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	वृश्चि	धनु	मीन	धनु	वृश्चि	कन्या	वृष	तुला	मक	कर्क
चतुर्थांश	मक	मक	मेष	कुंभ	धनु	सिंह	वृष	सिंह	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	मेष	कन्या	मिथु	धनु	मीन	मक	वृश्चि	कर्क	मीन	कन्या
नवमांश	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	कन्या	मीन	मेष	मक	मेष	कर्क	मक
दशमांश	सिंह	धनु	तुला	मक	सिंह	मेष	मक	कन्या	कर्क	मक
द्वादशांश	मक	मक	मेष	कुंभ	कुंभ	कन्या	वृष	तुला	मक	कर्क
षोडशांश	धनु	मेष	मेष	वृष	कुंभ	मक	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
विंशांश	कुंभ	सिंह	कर्क	वृश्चि	कुंभ	मिथु	धनु	कुंभ	मक	मक
चतुर्विंशांश	कर्क	मीन	मक	कन्या	वृष	मीन	कर्क	मक	वृश्चि	वृश्चि
सप्तविंशांश	कुंभ	मक	तुला	कर्क	मक	मेष	कर्क	वृष	मक	कर्क
त्रिंशांश	मीन	मिथु	मक	धनु	वृश्चि	कन्या	वृष	मिथु	मक	मक
खवेदांश	मिथु	धनु	वृष	मीन	तुला	वृश्चि	वृश्चि	कन्या	मक	मक
अक्षवेदांश	मीन	मेष	मीन	कन्या	वृष	वृश्चि	कन्या	मेष	मीन	मीन
षष्ट्यंश	मक	मेष	वृष	मिथु	तुला	मक	मिथु	कन्या	तुला	मेष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	3 उत्तम	5 कन्दुक
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
मंगल	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
गुरु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शुक्र	4 चामर	4 चामर	4 गोपुर	5 कन्दुक
शनि	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	5 कन्दुक
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.65	14.40	11.25	13.30	11.30	18.50	14.05	12.80	10.40
सप्तवर्ग	12.88	13.73	11.98	13.70	11.98	17.93	12.65	12.03	9.88
दशवर्ग	12.55	14.40	10.70	15.00	13.05	17.33	14.40	11.58	11.48
षोडशवर्ग	12.03	14.23	10.33	15.25	13.60	16.63	13.70	11.45	11.80

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	55	33	6	4	42	49	19
सप्तवर्गज बल	98	98	103	90	84	165	118
ओजयुग्मक बल	15	15	15	0	15	30	30
केन्द्र बल	60	60	30	15	30	30	30
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	228	221	155	109	171	274	198
कुल दिग्बल	56	34	18	24	38	7	48
नतोन्नत बल	56	4	4	60	56	56	4
पक्ष बल	30	60	30	30	30	30	30
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	30	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	104	9	40	41	57	54	38
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	250	74	75	236	202	140	117
कुल चेष्टाबल	0	0	45	33	6	6	21
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-26	13	1	-21	-24	-25	-23
कुल षट्बल	567	393	310	406	427	443	369
रूप षट्बल	9.5	6.6	5.2	6.8	7.1	7.4	6.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.9	1.1	1.0	1.0	1.1	1.3	1.2
संबंधित पद	1	5	6	7	4	2	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	50.34	31.45	16.98	11.83	15.52	16.65	20.00
कष्ट फल	8.15	28.46	28.45	38.75	31.48	24.75	39.99

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	393	567	406	443	310	427	369	369	427	310	443	406
भावदिग्बल	30	20	40	30	40	10	30	10	10	60	50	50
भावदृष्टि बल	53	47	74	31	74	40	53	-12	-21	-20	-19	23
कुल भाव बल	476	634	520	505	424	477	452	367	417	350	475	479
रूप भाव बल	7.9	10.6	8.7	8.4	7.1	8.0	7.5	6.1	6.9	5.8	7.9	8.0
संबंधित पद	6	1	2	3	9	5	8	11	10	12	7	4

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

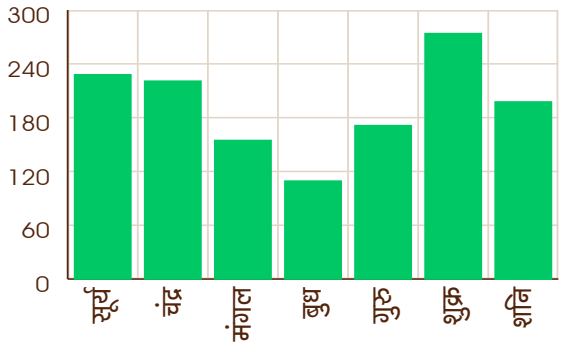

दिग्बल

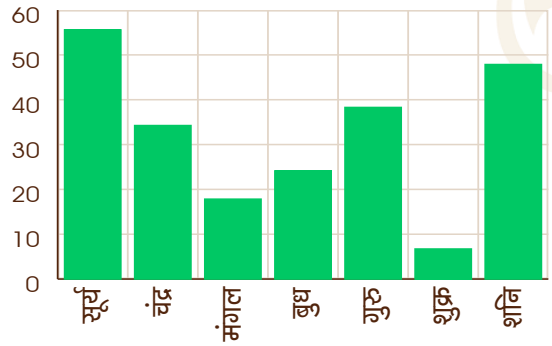

कालबल

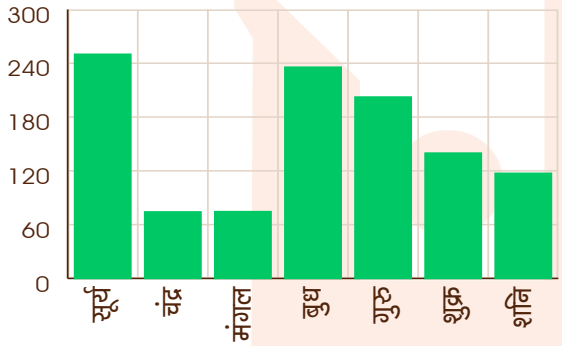

चेष्टाबल

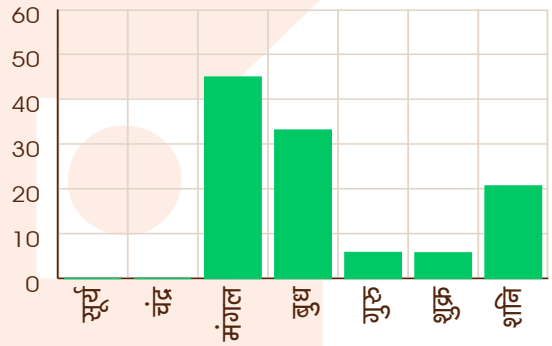

नैसर्गिक बल

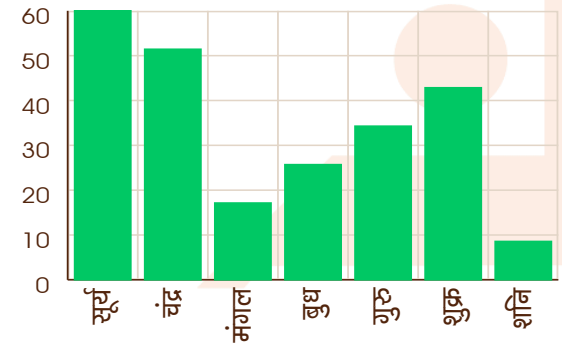

दृग्बल

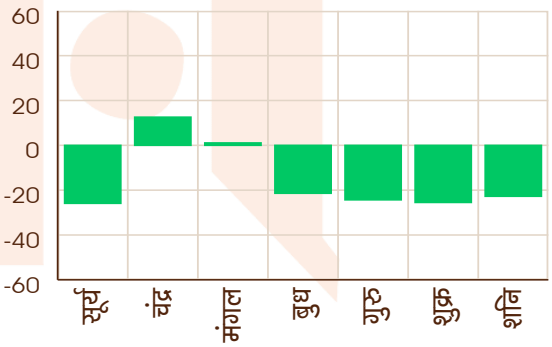

रूप षट्बल

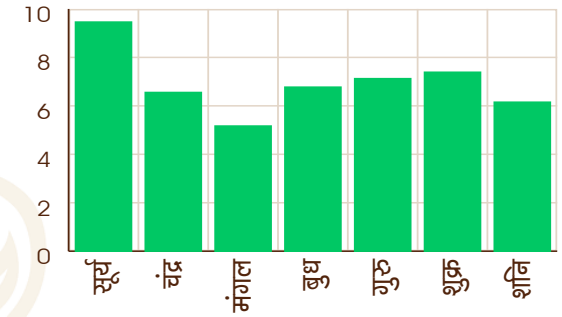

न्यूनतम षट्बल

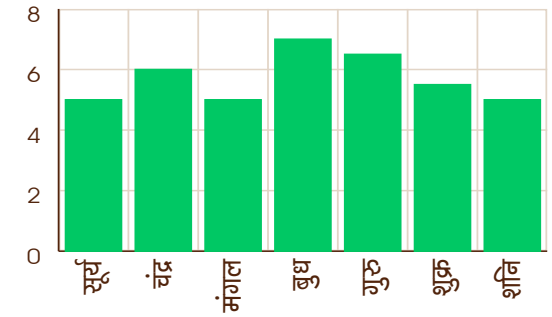

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

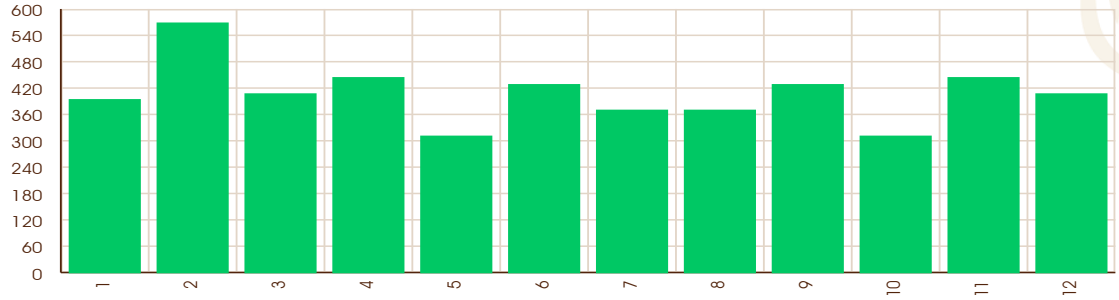

भावदिग्बल

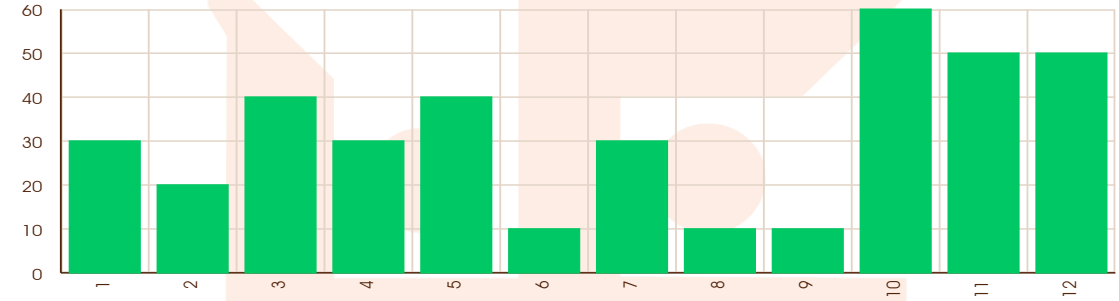

भावदृष्टि बल

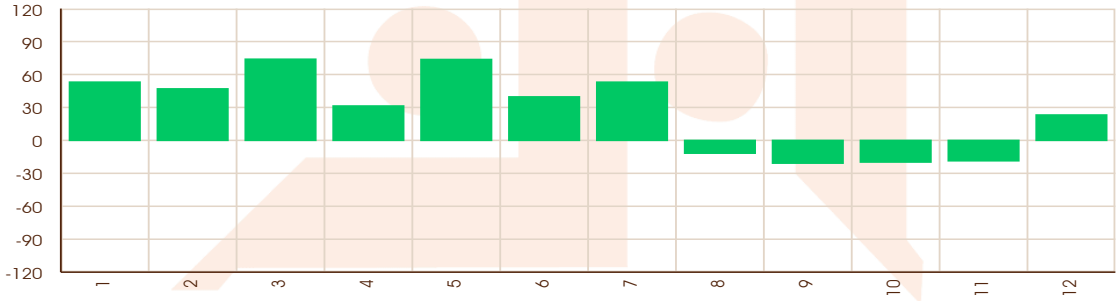

भाव बल

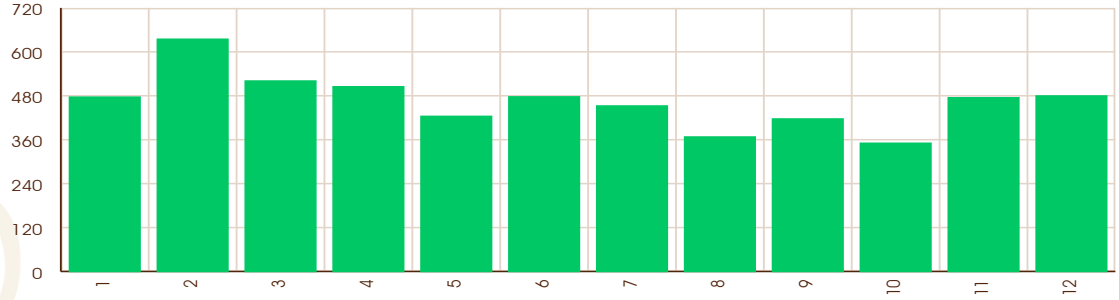

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

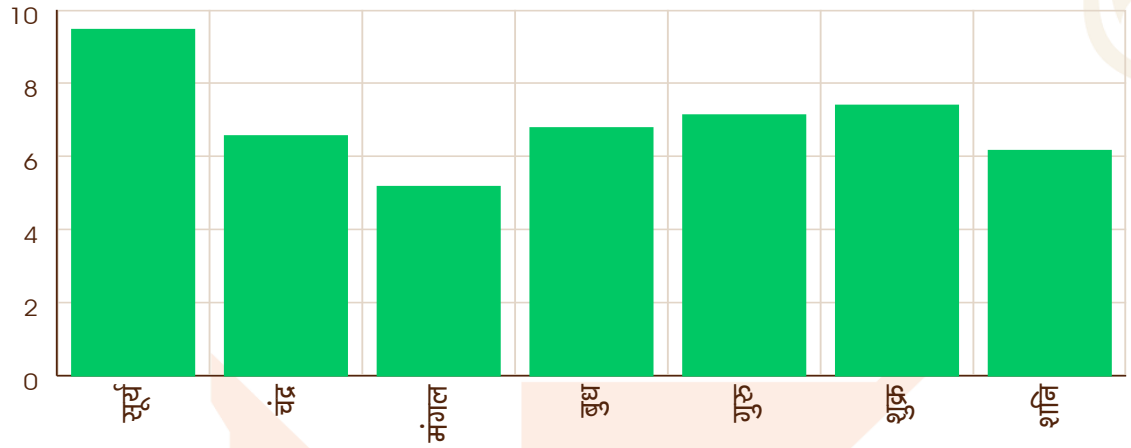

इष्ट - कष्ट फल

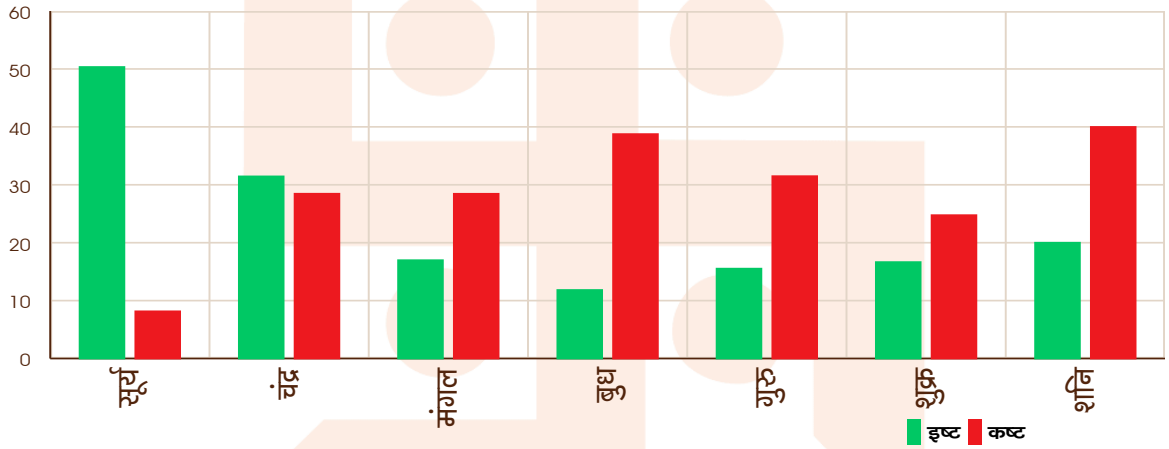

रूप भाव बल

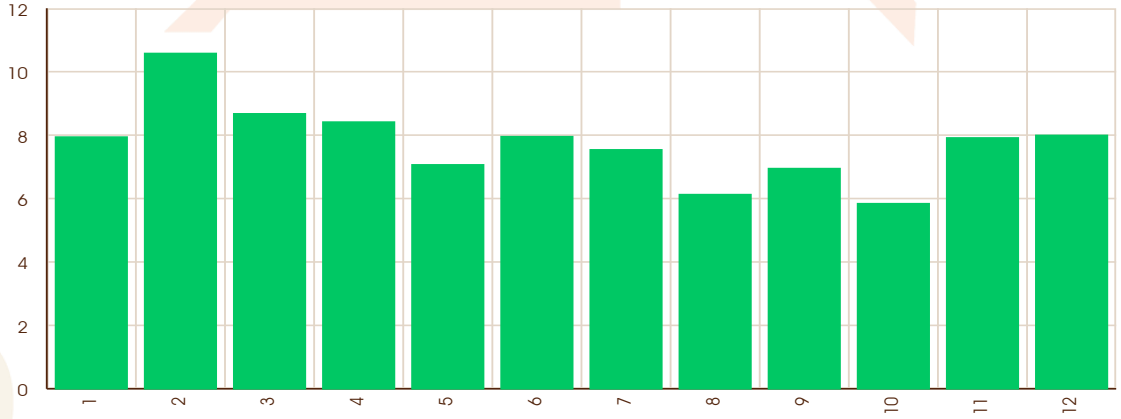

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कर्क	15:20:08	--	--	पुष्य	4	8
गुलिक	गु	वृष	20:08:23	--	--	रोहिणी	4	4
काल	का	मिथु	13:22:46	--	--	आर्द्रा	3	6
मृत्यु	मृ	कर्क	26:58:30	--	--	आश्लेषा	4	9
यमघंटक	यम	कन्या	11:20:46	--	--	हस्त	1	13
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	सिंह	18:44:55	--	--	पू०फाल्गुनी	2	11
धूम	धू	कन्या	07:22:02	--	--	उ०फाल्गुनी	4	12
व्यतिपात	व्य	तुला	22:37:58	--	--	विशाखा	1	16
परिवेश	परि	मेष	22:37:58	--	--	भरणी	3	2
इन्द्रचाप	इ	मीन	07:22:02	--	--	उ०भाद्रपद	2	26
उपकेतु	उप	मीन	24:02:02	--	--	रेवती	3	27

प्राणपद	:	कुंभ	13:51:57	कारकाँश लग्न	:	मीन	09:17:26
भाव लग्न	:	तुला	11:49:38	होरा लग्न	:	मक	08:19:07
घटी लग्न	:	कर्क	06:29:30	वर्णद लग्न	:	मेष	23:39:15

उपग्रह कुंडली

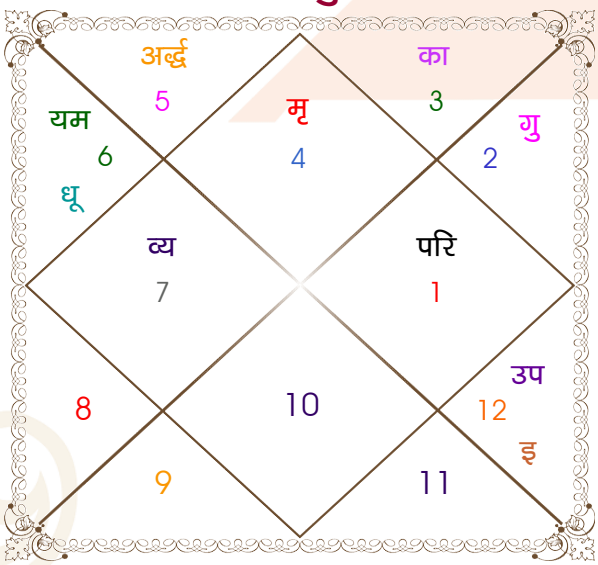

आरूढ़ कुंडली

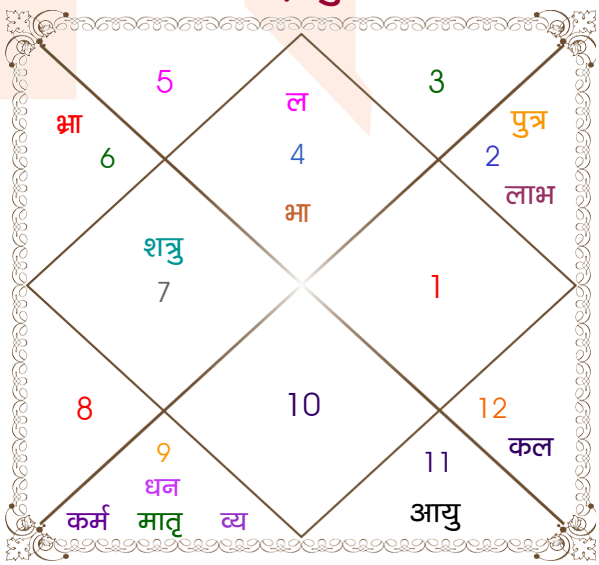

षन्नाडी चक्र

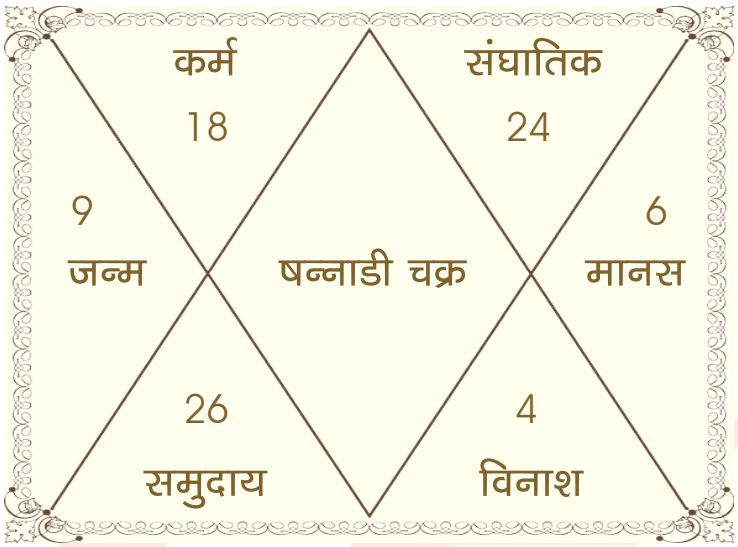

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	5	6	2	2	3	5	5	5	5	3	4	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	2	6	3	3	6	5	3	4	3	5	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	7
गुरु	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
कुल	4	5	3	2	4	2	4	3	3	5	2	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	6	4	6	2	3	7	4	4	3	7	2	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
कुल	5	6	5	5	2	3	6	4	6	4	6	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	5	4	5	4	5	4	6	3	4	5	5	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
बुध	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
कुल	2	2	5	4	2	4	1	3	6	2	5	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
गुरु	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	5	3	2	5	5	3	3	4	6	6	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	4	2	4	1	3	6	2	5	3	2	2	39
गुरु	4	5	6	5	5	2	3	6	4	6	4	6	56
मंगल	3	5	2	2	4	5	3	2	4	2	4	3	39
सूर्य	5	6	2	2	3	5	5	5	5	3	4	3	48
शुक्र	2	5	4	5	4	5	4	6	3	4	5	5	52
बुध	4	6	2	3	7	4	4	3	7	2	6	6	54
चंद्र	3	5	5	4	2	6	3	3	6	5	3	4	49
बिन्दु	26	36	23	25	26	30	28	27	34	25	28	29	337
रेखा	30	20	33	31	30	26	28	29	22	31	28	27	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	1	0	2	0	0	4	0	4	0	0	0	15
गुरु	0	3	3	0	1	0	0	1	0	4	1	1	14
मंगल	0	3	0	0	1	3	1	0	1	0	2	1	12
सूर्य	2	3	0	0	0	2	3	3	2	0	2	1	18
शुक्र	0	1	0	0	2	1	0	1	1	0	1	0	7
बुध	0	4	0	0	3	2	2	0	3	0	4	3	21
चंद्र	1	0	2	1	0	1	0	0	4	0	0	1	10
रेखा	7	15	5	3	7	9	10	5	15	4	10	7	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	1	0	2	0	0	3	0	4	0	0	0	14
गुरु	0	3	3	0	1	0	0	1	0	3	1	1	13
मंगल	0	3	0	0	1	3	0	0	0	0	2	1	10
सूर्य	2	3	0	0	0	2	0	1	1	0	2	1	12
शुक्र	0	1	0	0	2	1	0	1	1	0	1	0	7
बुध	0	4	0	0	3	2	0	0	0	0	4	3	16
चंद्र	1	0	1	1	0	1	0	0	3	0	0	1	8
रेखा	7	15	4	3	7	9	3	3	9	3	10	7	80

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	105	63	89	160	110	63	103
ग्रह पिंड	76	15	74	127	69	38	47
शोध्य पिंड	181	78	163	287	179	101	150

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

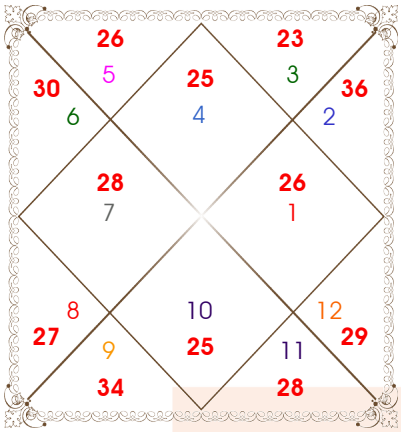

सूर्य का अष्टकवर्ग

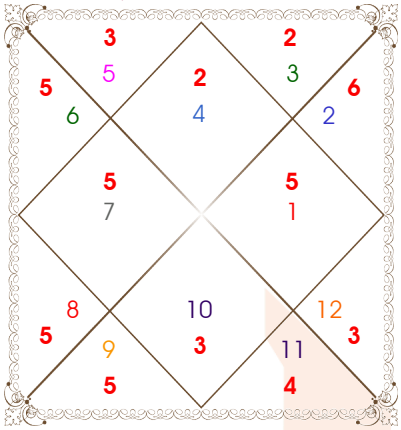

चंद्र का अष्टकवर्ग

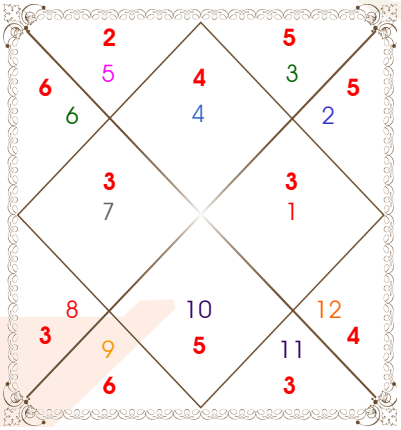

मंगल का अष्टकवर्ग

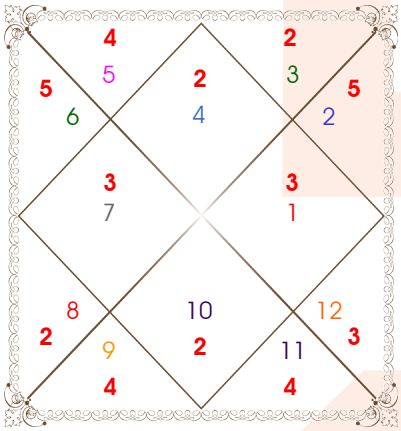

बुध का अष्टकवर्ग

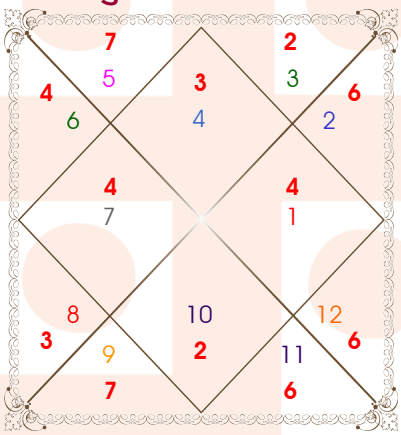

गुरू का अष्टकवर्ग

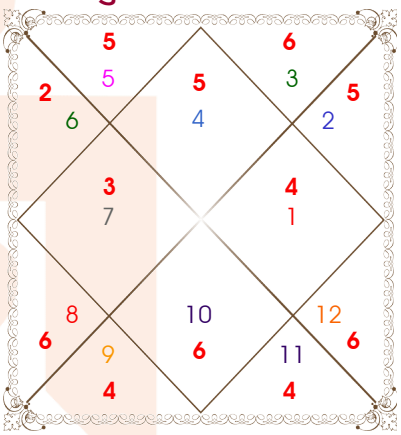

शुक्र का अष्टकवर्ग

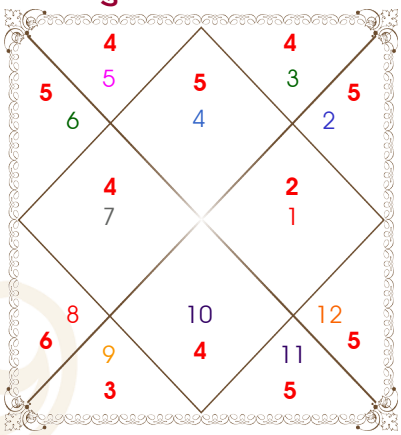

शनि का अष्टकवर्ग

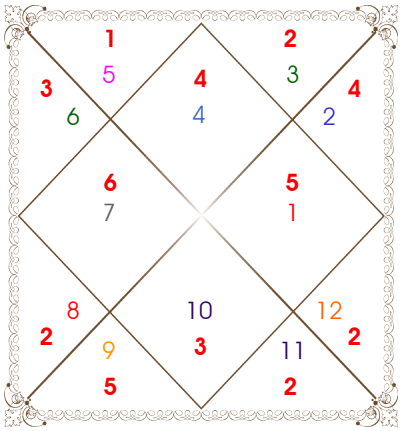

लग्न का अष्टकवर्ग

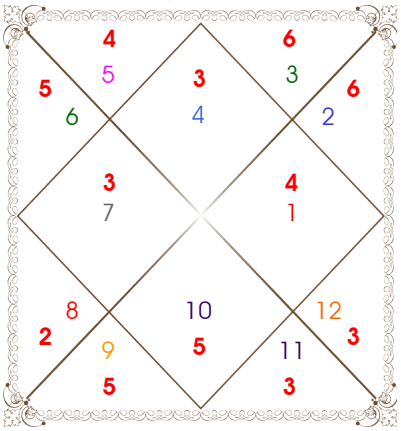

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

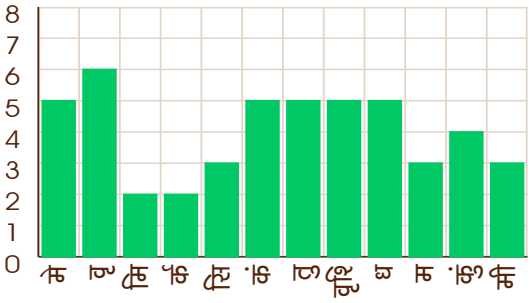

चन्द्र

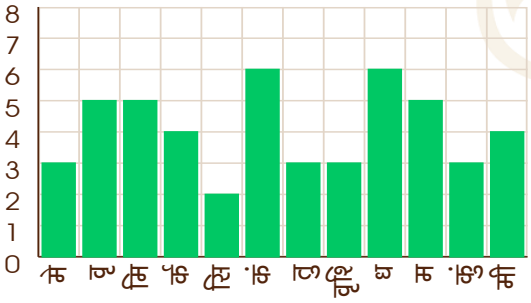

मंगल

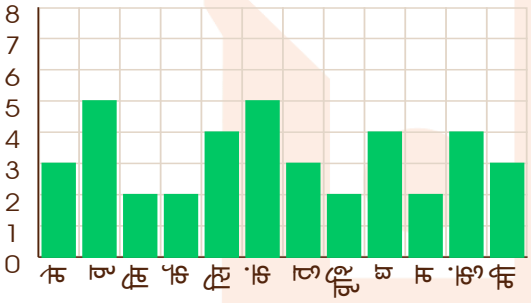

बुध

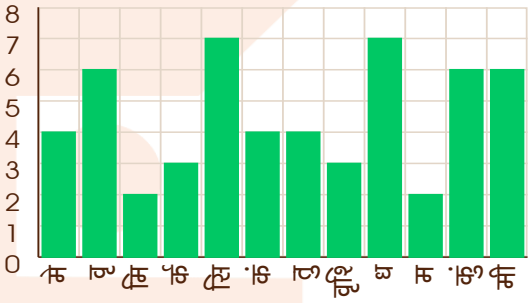

गुरु

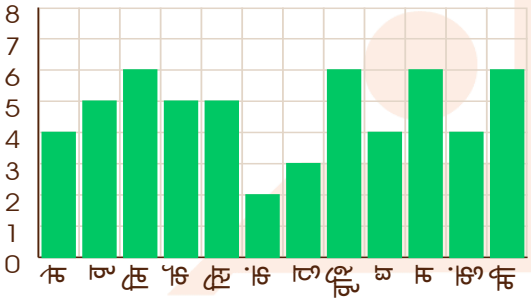

शुक्र

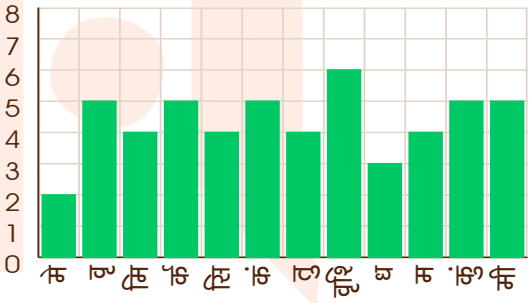

शनि

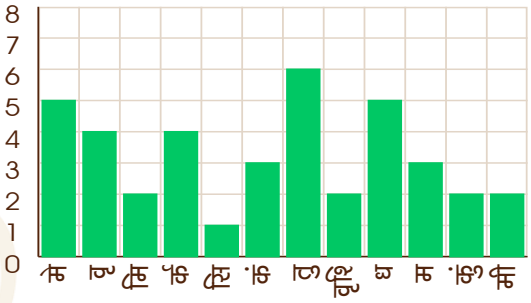

लग्न

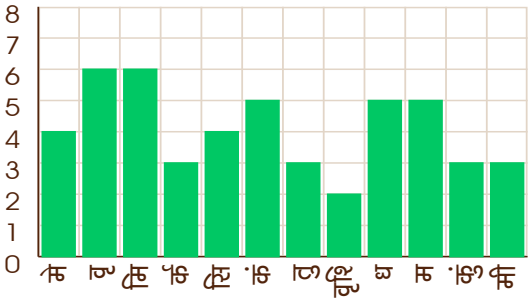

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

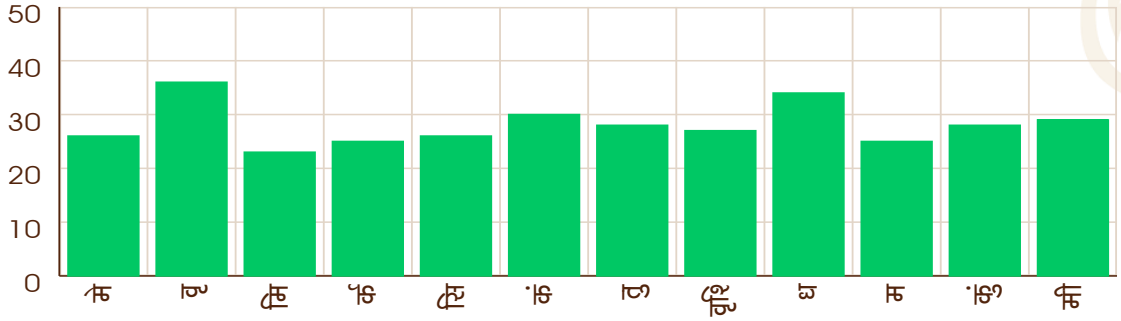

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

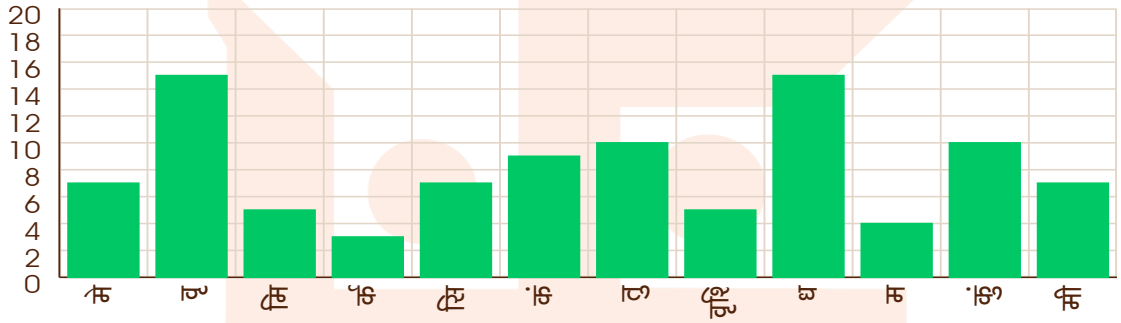

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

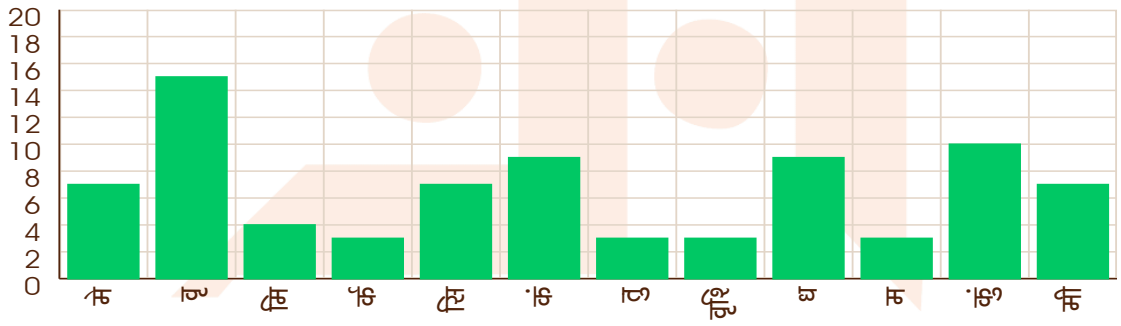

शोध्य पिंड

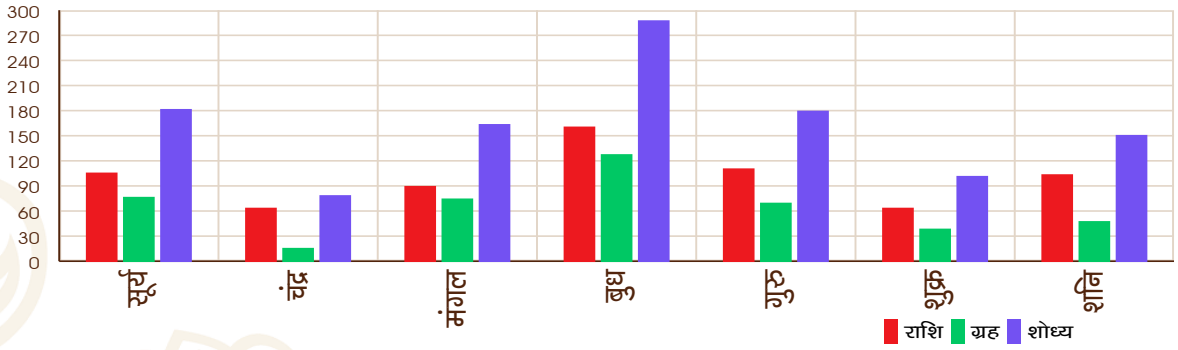

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 8 वर्ष 4 मास 8 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
08/05/1965		16/09/1973		15/09/1980		15/09/2000		16/09/2006	
16/09/1973		15/09/1980		15/09/2000		16/09/2006		15/09/2016	
	00/00/0000	केतु	12/02/1974	शुक्र	16/01/1984	सूर्य	03/01/2001	चंद्र	17/07/2007
	00/00/0000	शुक्र	14/04/1975	सूर्य	15/01/1985	चंद्र	05/07/2001	मंगल	15/02/2008
	00/00/0000	सूर्य	20/08/1975	चंद्र	16/09/1986	मंगल	09/11/2001	राहु	16/08/2009
	00/00/0000	चंद्र	20/03/1976	मंगल	16/11/1987	राहु	04/10/2002	गुरु	16/12/2010
	08/05/1965	मंगल	16/08/1976	राहु	16/11/1990	गुरु	23/07/2003	शनि	17/07/2012
मंगल	14/03/1966	राहु	03/09/1977	गुरु	17/07/1993	शनि	04/07/2004	बुध	16/12/2013
राहु	01/10/1968	गुरु	10/08/1978	शनि	15/09/1996	बुध	11/05/2005	केतु	17/07/2014
गुरु	07/01/1971	शनि	19/09/1979	बुध	17/07/1999	केतु	16/09/2005	शुक्र	17/03/2016
शनि	16/09/1973	बुध	15/09/1980	केतु	15/09/2000	शुक्र	16/09/2006	सूर्य	15/09/2016

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
15/09/2016		16/09/2023		16/09/2041		16/09/2057		15/09/2076	
16/09/2023		16/09/2041		16/09/2057		15/09/2076		00/00/0000	
मंगल	12/02/2017	राहु	29/05/2026	गुरु	04/11/2043	शनि	18/09/2060	बुध	12/02/2079
राहु	02/03/2018	गुरु	22/10/2028	शनि	17/05/2046	बुध	30/05/2063	केतु	09/02/2080
गुरु	06/02/2019	शनि	29/08/2031	बुध	22/08/2048	केतु	07/07/2064	शुक्र	10/12/2082
शनि	17/03/2020	बुध	17/03/2034	केतु	29/07/2049	शुक्र	07/09/2067	सूर्य	17/10/2083
बुध	14/03/2021	केतु	05/04/2035	शुक्र	29/03/2052	सूर्य	19/08/2068	चंद्र	17/03/2085
केतु	10/08/2021	शुक्र	05/04/2038	सूर्य	15/01/2053	चंद्र	20/03/2070	मंगल	08/05/2085
शुक्र	10/10/2022	सूर्य	27/02/2039	चंद्र	17/05/2054	मंगल	29/04/2071		00/00/0000
सूर्य	15/02/2023	चंद्र	28/08/2040	मंगल	23/04/2055	राहु	05/03/2074		00/00/0000
चंद्र	16/09/2023	मंगल	16/09/2041	राहु	16/09/2057	गुरु	15/09/2076		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 8 वर्ष 4 मा 16 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
08/05/1965		14/03/1966		01/10/1968		07/01/1971		16/09/1973	
14/03/1966		01/10/1968		07/01/1971		16/09/1973		12/02/1974	
	08/05/1965	राहु	01/08/1966	गुरु	19/01/1969	शनि	11/06/1971	केतु	24/09/1973
राहु	01/06/1965	गुरु	03/12/1966	शनि	30/05/1969	बुध	28/10/1971	शुक्र	19/10/1973
गुरु	19/07/1965	शनि	30/04/1967	बुध	24/09/1969	केतु	25/12/1971	सूर्य	27/10/1973
शनि	14/09/1965	बुध	09/09/1967	केतु	12/11/1969	शुक्र	06/06/1972	चंद्र	08/11/1973
बुध	04/11/1965	केतु	02/11/1967	शुक्र	30/03/1970	सूर्य	25/07/1972	मंगल	17/11/1973
केतु	26/11/1965	शुक्र	05/04/1968	सूर्य	10/05/1970	चंद्र	15/10/1972	राहु	09/12/1973
शुक्र	25/01/1966	सूर्य	22/05/1968	चंद्र	18/07/1970	मंगल	11/12/1972	गुरु	29/12/1973
सूर्य	12/02/1966	चंद्र	07/08/1968	मंगल	04/09/1970	राहु	08/05/1973	शनि	22/01/1974
चंद्र	14/03/1966	मंगल	01/10/1968	राहु	07/01/1971	गुरु	16/09/1973	बुध	12/02/1974

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
12/02/1974		14/04/1975		20/08/1975		20/03/1976		16/08/1976	
14/04/1975		20/08/1975		20/03/1976		16/08/1976		03/09/1977	
शुक्र	24/04/1974	सूर्य	20/04/1975	चंद्र	07/09/1975	मंगल	29/03/1976	राहु	13/10/1976
सूर्य	15/05/1974	चंद्र	01/05/1975	मंगल	19/09/1975	राहु	20/04/1976	गुरु	03/12/1976
चंद्र	20/06/1974	मंगल	08/05/1975	राहु	21/10/1975	गुरु	10/05/1976	शनि	01/02/1977
मंगल	15/07/1974	राहु	28/05/1975	गुरु	18/11/1975	शनि	02/06/1976	बुध	28/03/1977
राहु	16/09/1974	गुरु	14/06/1975	शनि	22/12/1975	बुध	24/06/1976	केतु	19/04/1977
गुरु	12/11/1974	शनि	04/07/1975	बुध	21/01/1976	केतु	02/07/1976	शुक्र	22/06/1977
शनि	19/01/1975	बुध	22/07/1975	केतु	03/02/1976	शुक्र	27/07/1976	सूर्य	11/07/1977
बुध	20/03/1975	केतु	29/07/1975	शुक्र	09/03/1976	सूर्य	04/08/1976	चंद्र	12/08/1977
केतु	14/04/1975	शुक्र	20/08/1975	सूर्य	20/03/1976	चंद्र	16/08/1976	मंगल	03/09/1977

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
03/09/1977		10/08/1978		19/09/1979		15/09/1980		16/01/1984	
10/08/1978		19/09/1979		15/09/1980		16/01/1984		15/01/1985	
गुरु	19/10/1977	शनि	13/10/1978	बुध	10/11/1979	शुक्र	06/04/1981	सूर्य	03/02/1984
शनि	12/12/1977	बुध	10/12/1978	केतु	01/12/1979	सूर्य	06/06/1981	चंद्र	05/03/1984
बुध	29/01/1978	केतु	02/01/1979	शुक्र	30/01/1980	चंद्र	16/09/1981	मंगल	26/03/1984
केतु	18/02/1978	शुक्र	11/03/1979	सूर्य	17/02/1980	मंगल	26/11/1981	राहु	20/05/1984
शुक्र	16/04/1978	सूर्य	31/03/1979	चंद्र	18/03/1980	राहु	27/05/1982	गुरु	07/07/1984
सूर्य	03/05/1978	चंद्र	04/05/1979	मंगल	08/04/1980	गुरु	06/11/1982	शनि	03/09/1984
चंद्र	31/05/1978	मंगल	28/05/1979	राहु	02/06/1980	शनि	17/05/1983	बुध	25/10/1984
मंगल	20/06/1978	राहु	27/07/1979	गुरु	20/07/1980	बुध	06/11/1983	केतु	15/11/1984
राहु	10/08/1978	गुरु	19/09/1979	शनि	15/09/1980	केतु	16/01/1984	शुक्र	15/01/1985

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
15/01/1985		16/09/1986		16/11/1987		16/11/1990		17/07/1993	
16/09/1986		16/11/1987		16/11/1990		17/07/1993		15/09/1996	
चंद्र	07/03/1985	मंगल	11/10/1986	राहु	28/04/1988	गुरु	26/03/1991	शनि	16/01/1994
मंगल	11/04/1985	राहु	14/12/1986	गुरु	22/09/1988	शनि	27/08/1991	बुध	29/06/1994
राहु	12/07/1985	गुरु	09/02/1987	शनि	14/03/1989	बुध	12/01/1992	केतु	04/09/1994
गुरु	01/10/1985	शनि	17/04/1987	बुध	16/08/1989	केतु	09/03/1992	शुक्र	16/03/1995
शनि	05/01/1986	बुध	16/06/1987	केतु	19/10/1989	शुक्र	18/08/1992	सूर्य	13/05/1995
बुध	02/04/1986	केतु	11/07/1987	शुक्र	20/04/1990	सूर्य	06/10/1992	चंद्र	17/08/1995
केतु	07/05/1986	शुक्र	20/09/1987	सूर्य	14/06/1990	चंद्र	26/12/1992	मंगल	24/10/1995
शुक्र	16/08/1986	सूर्य	12/10/1987	चंद्र	13/09/1990	मंगल	21/02/1993	राहु	14/04/1996
सूर्य	16/09/1986	चंद्र	16/11/1987	मंगल	16/11/1990	राहु	17/07/1993	गुरु	15/09/1996

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
15/09/1996		17/07/1999		15/09/2000		03/01/2001		05/07/2001	
17/07/1999		15/09/2000		03/01/2001		05/07/2001		09/11/2001	
बुध	09/02/1997	केतु	11/08/1999	सूर्य	21/09/2000	चंद्र	18/01/2001	मंगल	12/07/2001
केतु	10/04/1997	शुक्र	21/10/1999	चंद्र	30/09/2000	मंगल	29/01/2001	राहु	31/07/2001
शुक्र	30/09/1997	सूर्य	11/11/1999	मंगल	06/10/2000	राहु	25/02/2001	गुरु	17/08/2001
सूर्य	21/11/1997	चंद्र	17/12/1999	राहु	23/10/2000	गुरु	22/03/2001	शनि	07/09/2001
चंद्र	15/02/1998	मंगल	11/01/2000	गुरु	06/11/2000	शनि	20/04/2001	बुध	25/09/2001
मंगल	16/04/1998	राहु	15/03/2000	शनि	24/11/2000	बुध	15/05/2001	केतु	02/10/2001
राहु	18/09/1998	गुरु	11/05/2000	बुध	09/12/2000	केतु	26/05/2001	शुक्र	23/10/2001
गुरु	03/02/1999	शनि	17/07/2000	केतु	16/12/2000	शुक्र	25/06/2001	सूर्य	30/10/2001
शनि	17/07/1999	बुध	15/09/2000	शुक्र	03/01/2001	सूर्य	05/07/2001	चंद्र	09/11/2001

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
09/11/2001		04/10/2002		23/07/2003		04/07/2004		11/05/2005	
04/10/2002		23/07/2003		04/07/2004		11/05/2005		16/09/2005	
राहु	29/12/2001	गुरु	12/11/2002	शनि	16/09/2003	बुध	17/08/2004	केतु	18/05/2005
गुरु	11/02/2002	शनि	28/12/2002	बुध	04/11/2003	केतु	04/09/2004	शुक्र	09/06/2005
शनि	04/04/2002	बुध	08/02/2003	केतु	25/11/2003	शुक्र	26/10/2004	सूर्य	15/06/2005
बुध	20/05/2002	केतु	25/02/2003	शुक्र	22/01/2004	सूर्य	11/11/2004	चंद्र	26/06/2005
केतु	08/06/2002	शुक्र	15/04/2003	सूर्य	08/02/2004	चंद्र	07/12/2004	मंगल	03/07/2005
शुक्र	02/08/2002	सूर्य	29/04/2003	चंद्र	08/03/2004	मंगल	25/12/2004	राहु	22/07/2005
सूर्य	19/08/2002	चंद्र	24/05/2003	मंगल	28/03/2004	राहु	09/02/2005	गुरु	08/08/2005
चंद्र	15/09/2002	मंगल	10/06/2003	राहु	19/05/2004	गुरु	23/03/2005	शनि	29/08/2005
मंगल	04/10/2002	राहु	23/07/2003	गुरु	04/07/2004	शनि	11/05/2005	बुध	16/09/2005

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
16/09/2005		16/09/2006		17/07/2007		15/02/2008		16/08/2009	
16/09/2006		17/07/2007		15/02/2008		16/08/2009		16/12/2010	
शुक्र	16/11/2005	चंद्र	11/10/2006	मंगल	30/07/2007	राहु	08/05/2008	गुरु	20/10/2009
सूर्य	04/12/2005	मंगल	29/10/2006	राहु	31/08/2007	गुरु	20/07/2008	शनि	05/01/2010
चंद्र	03/01/2006	राहु	14/12/2006	गुरु	28/09/2007	शनि	14/10/2008	बुध	15/03/2010
मंगल	25/01/2006	गुरु	23/01/2007	शनि	01/11/2007	बुध	31/12/2008	केतु	13/04/2010
राहु	20/03/2006	शनि	12/03/2007	बुध	01/12/2007	केतु	01/02/2009	शुक्र	03/07/2010
गुरु	08/05/2006	बुध	25/04/2007	केतु	13/12/2007	शुक्र	03/05/2009	सूर्य	27/07/2010
शनि	05/07/2006	केतु	12/05/2007	शुक्र	18/01/2008	सूर्य	31/05/2009	चंद्र	06/09/2010
बुध	26/08/2006	शुक्र	02/07/2007	सूर्य	29/01/2008	चंद्र	15/07/2009	मंगल	04/10/2010
केतु	16/09/2006	सूर्य	17/07/2007	चंद्र	15/02/2008	मंगल	16/08/2009	राहु	16/12/2010

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
16/12/2010		17/07/2012		16/12/2013		17/07/2014		17/03/2016	
17/07/2012		16/12/2013		17/07/2014		17/03/2016		15/09/2016	
शनि	18/03/2011	बुध	28/09/2012	केतु	28/12/2013	शुक्र	27/10/2014	सूर्य	26/03/2016
बुध	08/06/2011	केतु	28/10/2012	शुक्र	02/02/2014	सूर्य	26/11/2014	चंद्र	10/04/2016
केतु	11/07/2011	शुक्र	22/01/2013	सूर्य	13/02/2014	चंद्र	16/01/2015	मंगल	21/04/2016
शुक्र	16/10/2011	सूर्य	17/02/2013	चंद्र	02/03/2014	मंगल	20/02/2015	राहु	18/05/2016
सूर्य	14/11/2011	चंद्र	01/04/2013	मंगल	15/03/2014	राहु	22/05/2015	गुरु	12/06/2016
चंद्र	01/01/2012	मंगल	01/05/2013	राहु	16/04/2014	गुरु	12/08/2015	शनि	10/07/2016
मंगल	04/02/2012	राहु	18/07/2013	गुरु	14/05/2014	शनि	16/11/2015	बुध	05/08/2016
राहु	30/04/2012	गुरु	25/09/2013	शनि	17/06/2014	बुध	10/02/2016	केतु	16/08/2016
गुरु	17/07/2012	शनि	16/12/2013	बुध	17/07/2014	केतु	17/03/2016	शुक्र	15/09/2016

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
15/09/2016		12/02/2017		02/03/2018		06/02/2019		17/03/2020	
12/02/2017		02/03/2018		06/02/2019		17/03/2020		14/03/2021	
मंगल	24/09/2016	राहु	10/04/2017	गुरु	17/04/2018	शनि	11/04/2019	बुध	07/05/2020
राहु	16/10/2016	गुरु	31/05/2017	शनि	10/06/2018	बुध	07/06/2019	केतु	28/05/2020
गुरु	05/11/2016	शनि	31/07/2017	बुध	28/07/2018	केतु	01/07/2019	शुक्र	28/07/2020
शनि	29/11/2016	बुध	23/09/2017	केतु	17/08/2018	शुक्र	07/09/2019	सूर्य	15/08/2020
बुध	20/12/2016	केतु	16/10/2017	शुक्र	13/10/2018	सूर्य	27/09/2019	चंद्र	14/09/2020
केतु	29/12/2016	शुक्र	19/12/2017	सूर्य	30/10/2018	चंद्र	30/10/2019	मंगल	05/10/2020
शुक्र	23/01/2017	सूर्य	07/01/2018	चंद्र	27/11/2018	मंगल	23/11/2019	राहु	28/11/2020
सूर्य	30/01/2017	चंद्र	08/02/2018	मंगल	17/12/2018	राहु	23/01/2020	गुरु	16/01/2021
चंद्र	12/02/2017	मंगल	02/03/2018	राहु	06/02/2019	गुरु	17/03/2020	शनि	14/03/2021

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
14/03/2021		10/08/2021		10/10/2022		15/02/2023		16/09/2023	
10/08/2021		10/10/2022		15/02/2023		16/09/2023		29/05/2026	
केतु	23/03/2021	शुक्र	20/10/2021	सूर्य	17/10/2022	चंद्र	05/03/2023	राहु	11/02/2024
शुक्र	17/04/2021	सूर्य	10/11/2021	चंद्र	27/10/2022	मंगल	17/03/2023	गुरु	22/06/2024
सूर्य	24/04/2021	चंद्र	16/12/2021	मंगल	04/11/2022	राहु	18/04/2023	शनि	25/11/2024
चंद्र	06/05/2021	मंगल	10/01/2022	राहु	23/11/2022	गुरु	17/05/2023	बुध	13/04/2025
मंगल	15/05/2021	राहु	15/03/2022	गुरु	10/12/2022	शनि	19/06/2023	केतु	10/06/2025
राहु	07/06/2021	गुरु	11/05/2022	शनि	30/12/2022	बुध	20/07/2023	शुक्र	21/11/2025
गुरु	26/06/2021	शनि	17/07/2022	बुध	17/01/2023	केतु	01/08/2023	सूर्य	10/01/2026
शनि	20/07/2021	बुध	15/09/2022	केतु	25/01/2023	शुक्र	06/09/2023	चंद्र	02/04/2026
बुध	10/08/2021	केतु	10/10/2022	शुक्र	15/02/2023	सूर्य	16/09/2023	मंगल	29/05/2026

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
29/05/2026		22/10/2028		29/08/2031		17/03/2034		05/04/2035	
22/10/2028		29/08/2031		17/03/2034		05/04/2035		05/04/2038	
गुरु	23/09/2026	शनि	05/04/2029	बुध	08/01/2032	केतु	09/04/2034	शुक्र	04/10/2035
शनि	09/02/2027	बुध	30/08/2029	केतु	02/03/2032	शुक्र	12/06/2034	सूर्य	28/11/2035
बुध	13/06/2027	केतु	30/10/2029	शुक्र	04/08/2032	सूर्य	01/07/2034	चंद्र	28/02/2036
केतु	03/08/2027	शुक्र	21/04/2030	सूर्य	20/09/2032	चंद्र	02/08/2034	मंगल	01/05/2036
शुक्र	27/12/2027	सूर्य	13/06/2030	चंद्र	07/12/2032	मंगल	24/08/2034	राहु	13/10/2036
सूर्य	09/02/2028	चंद्र	07/09/2030	मंगल	30/01/2033	राहु	21/10/2034	गुरु	08/03/2037
चंद्र	22/04/2028	मंगल	07/11/2030	राहु	19/06/2033	गुरु	11/12/2034	शनि	28/08/2037
मंगल	12/06/2028	राहु	12/04/2031	गुरु	21/10/2033	शनि	09/02/2035	बुध	31/01/2038
राहु	22/10/2028	गुरु	29/08/2031	शनि	17/03/2034	बुध	05/04/2035	केतु	05/04/2038

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
05/04/2038		27/02/2039		28/08/2040		16/09/2041		04/11/2043	
27/02/2039		28/08/2040		16/09/2041		04/11/2043		17/05/2046	
सूर्य	21/04/2038	चंद्र	14/04/2039	मंगल	20/09/2040	गुरु	29/12/2041	शनि	29/03/2044
चंद्र	18/05/2038	मंगल	16/05/2039	राहु	16/11/2040	शनि	01/05/2042	बुध	07/08/2044
मंगल	07/06/2038	राहु	06/08/2039	गुरु	06/01/2041	बुध	19/08/2042	केतु	30/09/2044
राहु	26/07/2038	गुरु	18/10/2039	शनि	08/03/2041	केतु	04/10/2042	शुक्र	04/03/2045
गुरु	08/09/2038	शनि	13/01/2040	बुध	01/05/2041	शुक्र	11/02/2043	सूर्य	19/04/2045
शनि	30/10/2038	बुध	30/03/2040	केतु	24/05/2041	सूर्य	22/03/2043	चंद्र	05/07/2045
बुध	15/12/2038	केतु	01/05/2040	शुक्र	27/07/2041	चंद्र	26/05/2043	मंगल	28/08/2045
केतु	03/01/2039	शुक्र	01/08/2040	सूर्य	15/08/2041	मंगल	10/07/2043	राहु	14/01/2046
शुक्र	27/02/2039	सूर्य	28/08/2040	चंद्र	16/09/2041	राहु	04/11/2043	गुरु	17/05/2046

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
17/05/2046		22/08/2048		29/07/2049		29/03/2052		15/01/2053	
22/08/2048		29/07/2049		29/03/2052		15/01/2053		17/05/2054	
बुध	11/09/2046	केतु	11/09/2048	शुक्र	07/01/2050	सूर्य	13/04/2052	चंद्र	25/02/2053
केतु	30/10/2046	शुक्र	07/11/2048	सूर्य	25/02/2050	चंद्र	07/05/2052	मंगल	25/03/2053
शुक्र	17/03/2047	सूर्य	24/11/2048	चंद्र	17/05/2050	मंगल	24/05/2052	राहु	06/06/2053
सूर्य	27/04/2047	चंद्र	22/12/2048	मंगल	13/07/2050	राहु	07/07/2052	गुरु	10/08/2053
चंद्र	05/07/2047	मंगल	11/01/2049	राहु	06/12/2050	गुरु	15/08/2052	शनि	26/10/2053
मंगल	22/08/2047	राहु	03/03/2049	गुरु	15/04/2051	शनि	30/09/2052	बुध	03/01/2054
राहु	25/12/2047	गुरु	18/04/2049	शनि	16/09/2051	बुध	10/11/2052	केतु	01/02/2054
गुरु	13/04/2048	शनि	11/06/2049	बुध	01/02/2052	केतु	27/11/2052	शुक्र	23/04/2054
शनि	22/08/2048	बुध	29/07/2049	केतु	29/03/2052	शुक्र	15/01/2053	सूर्य	17/05/2054

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
17/05/2054		23/04/2055		16/09/2057		18/09/2060		30/05/2063	
23/04/2055		16/09/2057		18/09/2060		30/05/2063		07/07/2064	
मंगल	06/06/2054	राहु	02/09/2055	शनि	09/03/2058	बुध	05/02/2061	केतु	22/06/2063
राहु	27/07/2054	गुरु	27/12/2055	बुध	11/08/2058	केतु	03/04/2061	शुक्र	29/08/2063
गुरु	11/09/2054	शनि	14/05/2056	केतु	14/10/2058	शुक्र	14/09/2061	सूर्य	18/09/2063
शनि	04/11/2054	बुध	15/09/2056	शुक्र	16/04/2059	सूर्य	02/11/2061	चंद्र	22/10/2063
बुध	22/12/2054	केतु	06/11/2056	सूर्य	09/06/2059	चंद्र	23/01/2062	मंगल	14/11/2063
केतु	11/01/2055	शुक्र	01/04/2057	चंद्र	09/09/2059	मंगल	21/03/2062	राहु	14/01/2064
शुक्र	09/03/2055	सूर्य	14/05/2057	मंगल	12/11/2059	राहु	16/08/2062	गुरु	08/03/2064
सूर्य	26/03/2055	चंद्र	27/07/2057	राहु	25/04/2060	गुरु	25/12/2062	शनि	11/05/2064
चंद्र	23/04/2055	मंगल	16/09/2057	गुरु	18/09/2060	शनि	30/05/2063	बुध	07/07/2064

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
07/07/2064		07/09/2067		19/08/2068		20/03/2070		29/04/2071	
07/09/2067		19/08/2068		20/03/2070		29/04/2071		05/03/2074	
शुक्र	16/01/2065	सूर्य	24/09/2067	चंद्र	06/10/2068	मंगल	13/04/2070	राहु	02/10/2071
सूर्य	15/03/2065	चंद्र	23/10/2067	मंगल	09/11/2068	राहु	13/06/2070	गुरु	18/02/2072
चंद्र	19/06/2065	मंगल	13/11/2067	राहु	04/02/2069	गुरु	06/08/2070	शनि	01/08/2072
मंगल	26/08/2065	राहु	04/01/2068	गुरु	22/04/2069	शनि	09/10/2070	बुध	26/12/2072
राहु	15/02/2066	गुरु	19/02/2068	शनि	22/07/2069	बुध	05/12/2070	केतु	25/02/2073
गुरु	20/07/2066	शनि	14/04/2068	बुध	12/10/2069	केतु	29/12/2070	शुक्र	18/08/2073
शनि	19/01/2067	बुध	02/06/2068	केतु	15/11/2069	शुक्र	06/03/2071	सूर्य	09/10/2073
बुध	02/07/2067	केतु	22/06/2068	शुक्र	19/02/2070	सूर्य	26/03/2071	चंद्र	03/01/2074
केतु	07/09/2067	शुक्र	19/08/2068	सूर्य	20/03/2070	चंद्र	29/04/2071	मंगल	05/03/2074

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - राहु - शुक्र	
10/06/2025 11:17	
21/11/2025 19:59	
शुक्र	07/07/2025 20:44
सूर्य	16/07/2025 01:58
चंद्र	29/07/2025 18:41
मंगल	08/08/2025 08:48
राहु	02/09/2025 00:30
गुरु	23/09/2025 22:28
शनि	19/10/2025 23:02
बुध	12/11/2025 05:52
केतु	21/11/2025 19:59

राहु - राहु - सूर्य	
21/11/2025 19:59	
10/01/2026 03:23	
सूर्य	24/11/2025 07:09
चंद्र	28/11/2025 09:46
मंगल	01/12/2025 06:48
राहु	08/12/2025 16:19
गुरु	15/12/2025 06:06
शनि	23/12/2025 01:28
बुध	30/12/2025 01:07
केतु	01/01/2026 22:09
शुक्र	10/01/2026 03:23

राहु - राहु - चंद्र	
10/01/2026 03:23	
02/04/2026 07:44	
चंद्र	16/01/2026 23:45
मंगल	21/01/2026 18:48
राहु	03/02/2026 02:39
गुरु	14/02/2026 01:38
शनि	27/02/2026 01:56
बुध	10/03/2026 17:21
केतु	15/03/2026 12:24
शुक्र	29/03/2026 05:07
सूर्य	02/04/2026 07:44

राहु - राहु - मंगल	
02/04/2026 07:44	
29/05/2026 20:23	
मंगल	05/04/2026 16:17
राहु	14/04/2026 07:22
गुरु	21/04/2026 23:28
शनि	01/05/2026 02:04
बुध	09/05/2026 05:39
केतु	12/05/2026 14:11
शुक्र	22/05/2026 04:18
सूर्य	25/05/2026 01:20
चंद्र	29/05/2026 20:23

राहु - गुरु - गुरु	
29/05/2026 20:23	
23/09/2026 17:30	
गुरु	14/06/2026 10:24
शनि	02/07/2026 22:33
बुध	19/07/2026 11:56
केतु	26/07/2026 07:34
शुक्र	14/08/2026 19:05
सूर्य	20/08/2026 15:21
चंद्र	30/08/2026 09:06
मंगल	06/09/2026 04:44
राहु	23/09/2026 17:30

राहु - गुरु - शनि	
23/09/2026 17:30	
09/02/2027 12:35	
शनि	15/10/2026 16:55
बुध	04/11/2026 08:50
केतु	12/11/2026 11:08
शुक्र	05/12/2026 14:19
सूर्य	12/12/2026 12:52
चंद्र	24/12/2026 02:28
मंगल	01/01/2027 04:47
राहु	22/01/2027 00:26
गुरु	09/02/2027 12:35

राहु - गुरु - बुध	
09/02/2027 12:35	
13/06/2027 17:01	
बुध	27/02/2027 02:49
केतु	06/03/2027 08:40
शुक्र	27/03/2027 01:25
सूर्य	02/04/2027 06:26
चंद्र	12/04/2027 14:48
मंगल	19/04/2027 20:40
राहु	08/05/2027 11:44
गुरु	25/05/2027 01:07
शनि	13/06/2027 17:01

राहु - गुरु - केतु	
13/06/2027 17:01	
03/08/2027 20:16	
केतु	16/06/2027 16:37
शुक्र	25/06/2027 05:09
सूर्य	27/06/2027 18:31
चंद्र	02/07/2027 00:47
मंगल	05/07/2027 00:22
राहु	12/07/2027 16:28
गुरु	19/07/2027 12:05
शनि	27/07/2027 14:24
बुध	03/08/2027 20:16

राहु - गुरु - शुक्र	
03/08/2027 20:16	
27/12/2027 22:40	
शुक्र	28/08/2027 04:40
सूर्य	04/09/2027 11:59
चंद्र	16/09/2027 16:11
मंगल	25/09/2027 04:43
राहु	17/10/2027 02:41
गुरु	05/11/2027 14:12
शनि	28/11/2027 17:23
बुध	19/12/2027 10:07
केतु	27/12/2027 22:40

राहु - गुरु - सूर्य	
27/12/2027 22:40	
09/02/2028 18:35	
सूर्य	30/12/2027 03:16
चंद्र	02/01/2028 18:55
मंगल	05/01/2028 08:17
राहु	11/01/2028 22:04
गुरु	17/01/2028 18:20
शनि	24/01/2028 16:53
बुध	30/01/2028 21:54
केतु	02/02/2028 11:16
शुक्र	09/02/2028 18:35

राहु - गुरु - चंद्र	
09/02/2028 18:35	
22/04/2028 19:47	
चंद्र	15/02/2028 20:41
मंगल	20/02/2028 02:57
राहु	02/03/2028 01:56
गुरु	11/03/2028 19:42
शनि	23/03/2028 09:17
बुध	02/04/2028 17:39
केतु	06/04/2028 23:55
शुक्र	19/04/2028 04:07
सूर्य	22/04/2028 19:47

राहु - गुरु - मंगल	
22/04/2028 19:47	
12/06/2028 23:01	
मंगल	25/04/2028 19:22
राहु	03/05/2028 11:27
गुरु	10/05/2028 07:05
शनि	18/05/2028 09:24
बुध	25/05/2028 15:16
केतु	28/05/2028 14:51
शुक्र	06/06/2028 03:23
सूर्य	08/06/2028 16:45
चंद्र	12/06/2028 23:01

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - गुरु - राहु		राहु - शनि - शनि		राहु - शनि - बुध		राहु - शनि - केतु	
12/06/2028 23:01		22/10/2028 10:47		05/04/2029 06:26		30/08/2029 17:43	
22/10/2028 10:47		05/04/2029 06:26		30/08/2029 17:43		30/10/2029 11:04	
राहु	02/07/2028 16:23	शनि	17/11/2028 13:06	बुध	26/04/2029 03:50	केतु	03/09/2029 06:44
गुरु	20/07/2028 05:09	बुध	10/12/2028 21:29	केतु	04/05/2029 18:18	शुक्र	13/09/2029 09:37
शनि	10/08/2028 00:49	केतु	20/12/2028 12:14	शुक्र	29/05/2029 08:10	सूर्य	16/09/2029 10:29
बुध	28/08/2028 15:53	शुक्र	16/01/2029 23:30	सूर्य	05/06/2029 17:08	चंद्र	21/09/2029 11:56
केतु	05/09/2028 07:58	सूर्य	25/01/2029 05:17	चंद्र	18/06/2029 00:05	मंगल	25/09/2029 00:56
शुक्र	27/09/2028 05:56	चंद्र	07/02/2029 22:55	मंगल	26/06/2029 14:32	राहु	04/10/2029 03:33
सूर्य	03/10/2028 19:43	मंगल	17/02/2029 13:40	राहु	18/07/2029 17:26	गुरु	12/10/2029 05:51
चंद्र	14/10/2028 18:42	राहु	14/03/2029 07:01	गुरु	07/08/2029 09:20	शनि	21/10/2029 20:36
मंगल	22/10/2028 10:47	गुरु	05/04/2029 06:26	शनि	30/08/2029 17:43	बुध	30/10/2029 11:04

राहु - शनि - शुक्र		राहु - शनि - सूर्य		राहु - शनि - चंद्र		राहु - शनि - मंगल	
30/10/2029 11:04		21/04/2030 22:55		13/06/2030 00:04		07/09/2030 17:59	
21/04/2030 22:55		13/06/2030 00:04		07/09/2030 17:59		07/11/2030 11:20	
शुक्र	28/11/2029 09:02	सूर्य	24/04/2030 13:22	चंद्र	20/06/2030 05:34	मंगल	11/09/2030 07:00
सूर्य	07/12/2029 01:14	चंद्र	28/04/2030 21:28	मंगल	25/06/2030 07:00	राहु	20/09/2030 09:36
चंद्र	21/12/2029 12:13	मंगल	01/05/2030 22:20	राहु	08/07/2030 07:18	गुरु	28/09/2030 11:55
मंगल	31/12/2029 15:06	राहु	09/05/2030 17:42	गुरु	19/07/2030 20:53	शनि	08/10/2030 02:40
राहु	26/01/2030 15:41	गुरु	16/05/2030 16:16	शनि	02/08/2030 14:31	बुध	16/10/2030 17:07
गुरु	18/02/2030 18:52	शनि	24/05/2030 22:03	बुध	14/08/2030 21:28	केतु	20/10/2030 06:08
शनि	18/03/2030 06:08	बुध	01/06/2030 07:00	केतु	19/08/2030 22:54	शुक्र	30/10/2030 09:02
बुध	11/04/2030 20:01	केतु	04/06/2030 07:52	शुक्र	03/09/2030 09:54	सूर्य	02/11/2030 09:54
केतु	21/04/2030 22:55	शुक्र	13/06/2030 00:04	सूर्य	07/09/2030 17:59	चंद्र	07/11/2030 11:20

राहु - शनि - राहु		राहु - शनि - गुरु		राहु - बुध - बुध		राहु - बुध - केतु	
07/11/2030 11:20		12/04/2031 14:48		29/08/2031 09:53		08/01/2032 08:36	
12/04/2031 14:48		29/08/2031 09:53		08/01/2032 08:36		02/03/2032 16:33	
राहु	30/11/2030 21:27	गुरु	01/05/2031 02:57	बुध	17/09/2031 02:30	केतु	11/01/2032 12:40
गुरु	21/12/2030 17:07	शनि	23/05/2031 02:22	केतु	24/09/2031 19:14	शुक्र	20/01/2032 13:59
शनि	15/01/2031 10:28	बुध	11/06/2031 18:16	शुक्र	16/10/2031 19:01	सूर्य	23/01/2032 07:11
बुध	06/02/2031 13:22	केतु	19/06/2031 20:35	सूर्य	23/10/2031 09:21	चंद्र	27/01/2032 19:51
केतु	15/02/2031 15:58	शुक्र	12/07/2031 23:46	चंद्र	03/11/2031 09:15	मंगल	30/01/2032 23:55
शुक्र	13/03/2031 16:32	सूर्य	19/07/2031 22:19	मंगल	11/11/2031 01:58	राहु	08/02/2032 03:30
सूर्य	21/03/2031 11:55	चंद्र	31/07/2031 11:54	राहु	30/11/2031 20:58	गुरु	15/02/2032 09:22
चंद्र	03/04/2031 12:12	मंगल	08/08/2031 14:13	गुरु	18/12/2031 11:12	शनि	23/02/2032 23:49
मंगल	12/04/2031 14:48	राहु	29/08/2031 09:53	शनि	08/01/2032 08:36	बुध	02/03/2032 16:33

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - बुध - शुक्र		राहु - बुध - सूर्य		राहु - बुध - चंद्र		राहु - बुध - मंगल	
02/03/2032 16:33		04/08/2032 22:06		20/09/2032 11:45		07/12/2032 02:32	
04/08/2032 22:06		20/09/2032 11:45		07/12/2032 02:32		30/01/2033 10:29	
शुक्र	28/03/2032 13:28	सूर्य	07/08/2032 05:59	चंद्र	26/09/2032 22:59	मंगल	10/12/2032 06:36
सूर्य	05/04/2032 07:45	चंद्र	11/08/2032 03:07	मंगल	01/10/2032 11:39	राहु	18/12/2032 10:11
चंद्र	18/04/2032 06:12	मंगल	13/08/2032 20:19	राहु	13/10/2032 03:04	गुरु	25/12/2032 16:03
मंगल	27/04/2032 07:32	राहु	20/08/2032 19:58	गुरु	23/10/2032 11:26	शनि	03/01/2033 06:30
राहु	20/05/2032 14:22	गुरु	27/08/2032 00:59	शनि	04/11/2032 18:23	बुध	10/01/2033 23:14
गुरु	10/06/2032 07:06	शनि	03/09/2032 09:57	बुध	15/11/2032 18:16	केतु	14/01/2033 03:18
शनि	04/07/2032 20:59	बुध	10/09/2032 00:17	केतु	20/11/2032 06:56	शुक्र	23/01/2033 04:37
बुध	26/07/2032 20:46	केतु	12/09/2032 17:29	शुक्र	03/12/2032 05:24	सूर्य	25/01/2033 21:49
केतु	04/08/2032 22:06	शुक्र	20/09/2032 11:45	सूर्य	07/12/2032 02:32	चंद्र	30/01/2033 10:29

राहु - बुध - राहु		राहु - बुध - गुरु		राहु - बुध - शनि		राहु - केतु - केतु	
30/01/2033 10:29		19/06/2033 03:28		21/10/2033 07:55		17/03/2034 19:11	
19/06/2033 03:28		21/10/2033 07:55		17/03/2034 19:11		09/04/2034 04:06	
राहु	20/02/2033 09:26	गुरु	05/07/2033 16:52	शनि	13/11/2033 16:18	केतु	19/03/2034 02:30
गुरु	11/03/2033 00:29	शनि	25/07/2033 08:46	बुध	04/12/2033 13:42	शुक्र	22/03/2034 19:59
शनि	02/04/2033 03:23	बुध	11/08/2033 23:00	केतु	13/12/2033 04:09	सूर्य	23/03/2034 22:50
बुध	21/04/2033 22:23	केतु	19/08/2033 04:51	शुक्र	06/01/2034 18:02	चंद्र	25/03/2034 19:35
केतु	30/04/2033 01:59	शुक्र	08/09/2033 21:36	सूर्य	14/01/2034 03:00	मंगल	27/03/2034 02:54
शुक्र	23/05/2033 08:49	सूर्य	15/09/2033 02:37	चंद्र	26/01/2034 09:56	राहु	30/03/2034 11:26
सूर्य	30/05/2033 08:28	चंद्र	25/09/2033 10:59	मंगल	04/02/2034 00:23	गुरु	02/04/2034 11:02
चंद्र	10/06/2033 23:53	मंगल	02/10/2033 16:51	राहु	26/02/2034 03:17	शनि	06/04/2034 00:02
मंगल	19/06/2033 03:28	राहु	21/10/2033 07:55	गुरु	17/03/2034 19:11	बुध	09/04/2034 04:06

राहु - केतु - शुक्र		राहु - केतु - सूर्य		राहु - केतु - चंद्र		राहु - केतु - मंगल	
09/04/2034 04:06		12/06/2034 02:09		01/07/2034 06:22		02/08/2034 05:23	
12/06/2034 02:09		01/07/2034 06:22		02/08/2034 05:23		24/08/2034 14:18	
शुक्र	19/04/2034 19:47	सूर्य	13/06/2034 01:10	चंद्र	03/07/2034 22:17	मंगल	03/08/2034 12:43
सूर्य	23/04/2034 00:29	चंद्र	14/06/2034 15:31	मंगल	05/07/2034 19:02	राहु	06/08/2034 21:15
चंद्र	28/04/2034 08:19	मंगल	15/06/2034 18:22	राहु	10/07/2034 14:05	गुरु	09/08/2034 20:50
मंगल	02/05/2034 01:48	राहु	18/06/2034 15:23	गुरु	14/07/2034 20:21	शनि	13/08/2034 09:51
राहु	11/05/2034 15:55	गुरु	21/06/2034 04:45	शनि	19/07/2034 21:48	बुध	16/08/2034 13:55
गुरु	20/05/2034 04:27	शनि	24/06/2034 05:37	बुध	24/07/2034 10:28	केतु	17/08/2034 21:14
शनि	30/05/2034 07:20	बुध	26/06/2034 22:49	केतु	26/07/2034 07:12	शुक्र	21/08/2034 14:43
बुध	08/06/2034 08:40	केतु	28/06/2034 01:40	शुक्र	31/07/2034 15:02	सूर्य	22/08/2034 17:34
केतु	12/06/2034 02:09	शुक्र	01/07/2034 06:22	सूर्य	02/08/2034 05:23	चंद्र	24/08/2034 14:18

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - केतु - राहु		राहु - केतु - गुरु		राहु - केतु - शनि		राहु - केतु - बुध	
24/08/2034 14:18		21/10/2034 02:57		11/12/2034 06:12		09/02/2035 23:32	
21/10/2034 02:57		11/12/2034 06:12		09/02/2035 23:32		05/04/2035 07:29	
राहु	02/09/2034 05:24	गुरु	27/10/2034 22:35	शनि	20/12/2034 20:56	बुध	17/02/2035 16:16
गुरु	09/09/2034 21:29	शनि	05/11/2034 00:54	बुध	29/12/2034 11:24	केतु	20/02/2035 20:20
शनि	19/09/2034 00:06	बुध	12/11/2034 06:45	केतु	02/01/2035 00:25	शुक्र	01/03/2035 21:39
बुध	27/09/2034 03:41	केतु	15/11/2034 06:21	शुक्र	12/01/2035 03:18	सूर्य	04/03/2035 14:51
केतु	30/09/2034 12:13	शुक्र	23/11/2034 18:53	सूर्य	15/01/2035 04:10	चंद्र	09/03/2035 03:31
शुक्र	10/10/2034 02:20	सूर्य	26/11/2034 08:15	चंद्र	20/01/2035 05:37	मंगल	12/03/2035 07:35
सूर्य	12/10/2034 23:22	चंद्र	30/11/2034 14:31	मंगल	23/01/2035 18:38	राहु	20/03/2035 11:10
चंद्र	17/10/2034 18:25	मंगल	03/12/2034 14:06	राहु	01/02/2035 21:14	गुरु	27/03/2035 17:02
मंगल	21/10/2034 02:57	राहु	11/12/2034 06:12	गुरु	09/02/2035 23:32	शनि	05/04/2035 07:29

राहु - शुक्र - शुक्र		राहु - शुक्र - सूर्य		राहु - शुक्र - चंद्र		राहु - शुक्र - मंगल	
05/04/2035 07:29		04/10/2035 22:29		28/11/2035 17:23		28/02/2036 00:53	
04/10/2035 22:29		28/11/2035 17:23		28/02/2036 00:53		01/05/2036 22:56	
शुक्र	05/05/2035 17:59	सूर्य	07/10/2035 16:14	चंद्र	06/12/2035 08:00	मंगल	02/03/2036 18:22
सूर्य	14/05/2035 21:08	चंद्र	12/10/2035 05:48	मंगल	11/12/2035 15:51	राहु	12/03/2036 08:29
चंद्र	30/05/2035 02:23	मंगल	15/10/2035 10:30	राहु	25/12/2035 08:34	गुरु	20/03/2036 21:01
मंगल	09/06/2035 18:03	राहु	23/10/2035 15:44	गुरु	06/01/2036 12:46	शनि	30/03/2036 23:54
राहु	07/07/2035 03:30	गुरु	30/10/2035 23:04	शनि	20/01/2036 23:45	बुध	09/04/2036 01:14
गुरु	31/07/2035 11:54	शनि	08/11/2035 15:15	बुध	02/02/2036 22:13	केतु	12/04/2036 18:43
शनि	29/08/2035 09:53	बुध	16/11/2035 09:32	केतु	08/02/2036 06:03	शुक्र	23/04/2036 10:24
बुध	24/09/2035 06:48	केतु	19/11/2035 14:14	शुक्र	23/02/2036 11:18	सूर्य	26/04/2036 15:06
केतु	04/10/2035 22:29	शुक्र	28/11/2035 17:23	सूर्य	28/02/2036 00:53	चंद्र	01/05/2036 22:56

राहु - शुक्र - राहु		राहु - शुक्र - गुरु		राहु - शुक्र - शनि		राहु - शुक्र - बुध	
01/05/2036 22:56		13/10/2036 07:38		08/03/2037 10:02		28/08/2037 21:53	
13/10/2036 07:38		08/03/2037 10:02		28/08/2037 21:53		31/01/2038 03:26	
राहु	26/05/2036 14:38	गुरु	01/11/2036 19:09	शनि	04/04/2037 21:19	बुध	19/09/2037 21:40
गुरु	17/06/2036 12:36	शनि	24/11/2036 22:20	बुध	29/04/2037 11:11	केतु	28/09/2037 23:00
शनि	13/07/2036 13:11	बुध	15/12/2036 15:04	केतु	09/05/2037 14:05	शुक्र	24/10/2037 19:55
बुध	05/08/2036 20:00	केतु	24/12/2036 03:37	शुक्र	07/06/2037 12:03	सूर्य	01/11/2037 14:12
केतु	15/08/2036 10:07	शुक्र	17/01/2037 12:01	सूर्य	16/06/2037 04:15	चंद्र	14/11/2037 12:39
शुक्र	11/09/2036 19:34	सूर्य	24/01/2037 19:20	चंद्र	30/06/2037 15:14	मंगल	23/11/2037 13:59
सूर्य	20/09/2036 00:48	चंद्र	05/02/2037 23:32	मंगल	10/07/2037 18:08	राहु	16/12/2037 20:49
चंद्र	03/10/2036 17:32	मंगल	14/02/2037 12:04	राहु	05/08/2037 18:42	गुरु	06/01/2038 13:33
मंगल	13/10/2036 07:38	राहु	08/03/2037 10:02	गुरु	28/08/2037 21:53	शनि	31/01/2038 03:26

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - राहु - शुक्र - केतु	
12/11/2025 05:52	
21/11/2025 19:59	
केतु	12/11/2025 19:18
शुक्र	14/11/2025 09:39
सूर्य	14/11/2025 21:09
चंद्र	15/11/2025 16:20
मंगल	16/11/2025 05:45
राहु	17/11/2025 16:16
गुरु	18/11/2025 22:57
शनि	20/11/2025 11:23
बुध	21/11/2025 19:59

राहु - राहु - सूर्य - सूर्य	
21/11/2025 19:59	
24/11/2025 07:09	
सूर्य	21/11/2025 22:56
चंद्र	22/11/2025 03:52
मंगल	22/11/2025 07:19
राहु	22/11/2025 16:12
गुरु	23/11/2025 00:05
शनि	23/11/2025 09:27
बुध	23/11/2025 17:50
केतु	23/11/2025 21:17
शुक्र	24/11/2025 07:09

राहु - राहु - सूर्य - चंद्र	
24/11/2025 07:09	
28/11/2025 09:46	
चंद्र	24/11/2025 15:22
मंगल	24/11/2025 21:07
राहु	25/11/2025 11:55
गुरु	26/11/2025 01:04
शनि	26/11/2025 16:41
बुध	27/11/2025 06:39
केतु	27/11/2025 12:24
शुक्र	28/11/2025 04:50
सूर्य	28/11/2025 09:46

राहु - राहु - सूर्य - मंगल	
28/11/2025 09:46	
01/12/2025 06:48	
मंगल	28/11/2025 13:48
राहु	29/11/2025 00:09
गुरु	29/11/2025 09:21
शनि	29/11/2025 20:17
बुध	30/11/2025 06:04
केतु	30/11/2025 10:05
शुक्र	30/11/2025 21:36
सूर्य	01/12/2025 01:03
चंद्र	01/12/2025 06:48

राहु - राहु - सूर्य - राहु	
01/12/2025 06:48	
08/12/2025 16:19	
राहु	02/12/2025 09:26
गुरु	03/12/2025 09:06
शनि	04/12/2025 13:12
बुध	05/12/2025 14:21
केतु	06/12/2025 00:42
शुक्र	07/12/2025 06:17
सूर्य	07/12/2025 15:10
चंद्र	08/12/2025 05:57
मंगल	08/12/2025 16:19

राहु - राहु - सूर्य - गुरु	
08/12/2025 16:19	
15/12/2025 06:06	
गुरु	09/12/2025 13:21
शनि	10/12/2025 14:20
बुध	11/12/2025 12:41
केतु	11/12/2025 21:53
शुक्र	13/12/2025 00:11
सूर्य	13/12/2025 08:05
चंद्र	13/12/2025 21:14
मंगल	14/12/2025 06:26
राहु	15/12/2025 06:06

राहु - राहु - सूर्य - शनि	
15/12/2025 06:06	
23/12/2025 01:28	
शनि	16/12/2025 11:46
बुध	17/12/2025 14:19
केतु	18/12/2025 01:14
शुक्र	19/12/2025 08:28
सूर्य	19/12/2025 17:50
चंद्र	20/12/2025 09:27
मंगल	20/12/2025 20:23
राहु	22/12/2025 00:29
गुरु	23/12/2025 01:28

राहु - राहु - सूर्य - बुध	
23/12/2025 01:28	
30/12/2025 01:07	
बुध	24/12/2025 01:13
केतु	24/12/2025 11:00
शुक्र	25/12/2025 14:57
सूर्य	25/12/2025 23:20
चंद्र	26/12/2025 13:18
मंगल	26/12/2025 23:05
राहु	28/12/2025 00:13
गुरु	28/12/2025 22:35
शनि	30/12/2025 01:07

राहु - राहु - सूर्य - केतु	
30/12/2025 01:07	
01/01/2026 22:09	
केतु	30/12/2025 05:09
शुक्र	30/12/2025 16:39
सूर्य	30/12/2025 20:06
चंद्र	31/12/2025 01:51
मंगल	31/12/2025 05:53
राहु	31/12/2025 16:14
गुरु	01/01/2026 01:27
शनि	01/01/2026 12:22
बुध	01/01/2026 22:09

राहु - राहु - सूर्य - शुक्र	
01/01/2026 22:09	
10/01/2026 03:23	
शुक्र	03/01/2026 07:02
सूर्य	03/01/2026 16:53
चंद्र	04/01/2026 09:19
मंगल	04/01/2026 20:50
राहु	06/01/2026 02:25
गुरु	07/01/2026 04:43
शनि	08/01/2026 11:56
बुध	09/01/2026 15:53
केतु	10/01/2026 03:23

राहु - राहु - चंद्र - चंद्र	
10/01/2026 03:23	
16/01/2026 23:45	
चंद्र	10/01/2026 17:05
मंगल	11/01/2026 02:40
राहु	12/01/2026 03:20
गुरु	13/01/2026 01:15
शनि	14/01/2026 03:16
बुध	15/01/2026 02:33
केतु	15/01/2026 12:08
शुक्र	16/01/2026 15:32
सूर्य	16/01/2026 23:45

राहु - राहु - चंद्र - मंगल	
16/01/2026 23:45	
21/01/2026 18:48	
मंगल	17/01/2026 06:28
राहु	17/01/2026 23:43
गुरु	18/01/2026 15:04
शनि	19/01/2026 09:17
बुध	20/01/2026 01:35
केतु	20/01/2026 08:17
शुक्र	21/01/2026 03:28
सूर्य	21/01/2026 09:13
चंद्र	21/01/2026 18:48

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - राहु - चंद्र - राहु	
21/01/2026 18:48	
03/02/2026 02:39	
राहु	23/01/2026 15:11
गुरु	25/01/2026 06:38
शनि	27/01/2026 05:28
बुध	28/01/2026 23:23
केतु	29/01/2026 16:39
शुक्र	31/01/2026 17:57
सूर्य	01/02/2026 08:45
चंद्र	02/02/2026 09:24
मंगल	03/02/2026 02:39

राहु - राहु - चंद्र - गुरु	
03/02/2026 02:39	
14/02/2026 01:38	
गुरु	04/02/2026 13:43
शनि	06/02/2026 07:22
बुध	07/02/2026 20:37
केतु	08/02/2026 11:57
शुक्र	10/02/2026 07:47
सूर्य	10/02/2026 20:56
चंद्र	11/02/2026 18:51
मंगल	12/02/2026 10:11
राहु	14/02/2026 01:38

राहु - राहु - चंद्र - शनि	
14/02/2026 01:38	
27/02/2026 01:56	
शनि	16/02/2026 03:05
बुध	17/02/2026 23:19
केतु	18/02/2026 17:32
शुक्र	20/02/2026 21:35
सूर्य	21/02/2026 13:12
चंद्र	22/02/2026 15:14
मंगल	23/02/2026 09:27
राहु	25/02/2026 08:17
गुरु	27/02/2026 01:56

राहु - राहु - चंद्र - बुध	
27/02/2026 01:56	
10/03/2026 17:21	
बुध	28/02/2026 17:31
केतु	01/03/2026 09:49
शुक्र	03/03/2026 08:23
सूर्य	03/03/2026 22:21
चंद्र	04/03/2026 21:38
मंगल	05/03/2026 13:56
राहु	07/03/2026 07:51
गुरु	08/03/2026 21:06
शनि	10/03/2026 17:21

राहु - राहु - चंद्र - केतु	
10/03/2026 17:21	
15/03/2026 12:24	
केतु	11/03/2026 00:03
शुक्र	11/03/2026 19:14
सूर्य	12/03/2026 00:59
चंद्र	12/03/2026 10:34
मंगल	12/03/2026 17:17
राहु	13/03/2026 10:32
गुरु	14/03/2026 01:53
शनि	14/03/2026 20:06
बुध	15/03/2026 12:24

राहु - राहु - चंद्र - शुक्र	
15/03/2026 12:24	
29/03/2026 05:07	
शुक्र	17/03/2026 19:11
सूर्य	18/03/2026 11:37
चंद्र	19/03/2026 15:01
मंगल	20/03/2026 10:11
राहु	22/03/2026 11:30
गुरु	24/03/2026 07:20
शनि	26/03/2026 11:23
बुध	28/03/2026 09:57
केतु	29/03/2026 05:07

राहु - राहु - चंद्र - सूर्य	
29/03/2026 05:07	
02/04/2026 07:44	
सूर्य	29/03/2026 10:03
चंद्र	29/03/2026 18:16
मंगल	30/03/2026 00:01
राहु	30/03/2026 14:49
गुरु	31/03/2026 03:58
शनि	31/03/2026 19:35
बुध	01/04/2026 09:33
केतु	01/04/2026 15:18
शुक्र	02/04/2026 07:44

राहु - राहु - मंगल - मंगल	
02/04/2026 07:44	
05/04/2026 16:17	
मंगल	02/04/2026 12:26
राहु	03/04/2026 00:31
गुरु	03/04/2026 11:15
शनि	04/04/2026 00:00
बुध	04/04/2026 11:25
केतु	04/04/2026 16:07
शुक्र	05/04/2026 05:32
सूर्य	05/04/2026 09:34
चंद्र	05/04/2026 16:17

राहु - राहु - मंगल - राहु	
05/04/2026 16:17	
14/04/2026 07:22	
राहु	06/04/2026 23:20
गुरु	08/04/2026 02:57
शनि	09/04/2026 11:45
बुध	10/04/2026 17:05
केतु	11/04/2026 05:10
शुक्र	12/04/2026 15:41
सूर्य	13/04/2026 02:02
चंद्र	13/04/2026 19:18
मंगल	14/04/2026 07:22

राहु - राहु - मंगल - गुरु	
14/04/2026 07:22	
21/04/2026 23:28	
गुरु	15/04/2026 07:55
शनि	16/04/2026 13:04
बुध	17/04/2026 15:09
केतु	18/04/2026 01:53
शुक्र	19/04/2026 08:34
सूर्य	19/04/2026 17:46
चंद्र	20/04/2026 09:06
मंगल	20/04/2026 19:51
राहु	21/04/2026 23:28

राहु - राहु - मंगल - शनि	
21/04/2026 23:28	
01/05/2026 02:04	
शनि	23/04/2026 10:04
बुध	24/04/2026 17:02
केतु	25/04/2026 05:47
शुक्र	26/04/2026 18:13
सूर्य	27/04/2026 05:09
चंद्र	27/04/2026 23:22
मंगल	28/04/2026 12:07
राहु	29/04/2026 20:55
गुरु	01/05/2026 02:04

राहु - राहु - मंगल - बुध	
01/05/2026 02:04	
09/05/2026 05:39	
बुध	02/05/2026 05:46
केतु	02/05/2026 17:11
शुक्र	04/05/2026 01:47
सूर्य	04/05/2026 11:33
चंद्र	05/05/2026 03:51
मंगल	05/05/2026 15:16
राहु	06/05/2026 20:36
गुरु	07/05/2026 22:41
शनि	09/05/2026 05:39

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 10 मास 24 दिन

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष	
08/05/1965		02/04/1971		01/04/1984		02/04/1998		01/04/2013	
02/04/1971		01/04/1984		02/04/1998		01/04/2013		01/04/2029	
	00/00/0000	गुरु	15/09/1972	शनि	09/12/1985	केतु	10/03/2000	चंद्र	16/06/2015
	00/00/0000	शनि	11/04/1974	केतु	01/10/1987	चंद्र	05/04/2002	बुध	20/10/2017
	00/00/0000	केतु	16/12/1975	चंद्र	06/09/1989	बुध	16/06/2004	शुक्र	14/04/2020
	08/05/1965	चंद्र	01/10/1977	बुध	25/09/1991	शुक्र	14/10/2006	सूर्य	20/10/2021
चंद्र	29/06/1966	बुध	28/08/1979	शुक्र	27/11/1993	सूर्य	16/03/2008	मंगल	16/06/2023
बुध	01/04/1968	शुक्र	03/09/1981	सूर्य	27/03/1995	मंगल	04/10/2009	गुरु	01/04/2025
शुक्र	10/02/1970	सूर्य	27/11/1982	मंगल	05/09/1996	गुरु	10/06/2011	शनि	08/03/2027
सूर्य	02/04/1971	मंगल	01/04/1984	गुरु	02/04/1998	शनि	01/04/2013	केतु	01/04/2029

बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष	
01/04/2029		02/04/2046		01/04/2064		02/04/2075	
02/04/2046		01/04/2064		02/04/2075		00/00/0000	
बुध	28/09/2031	शुक्र	16/01/2049	सूर्य	17/04/2065	मंगल	28/06/2076
शुक्र	19/05/2034	सूर्य	01/10/2050	मंगल	07/06/2066	गुरु	01/11/2077
सूर्य	29/12/2035	मंगल	11/08/2052	गुरु	31/08/2067	शनि	14/04/2079
मंगल	01/10/2037	गुरु	18/08/2054	शनि	28/12/2068	केतु	01/11/2080
गुरु	28/08/2039	शनि	20/10/2056	केतु	31/05/2070	चंद्र	08/05/2081
शनि	15/09/2041	केतु	17/02/2059	चंद्र	07/12/2071		00/00/0000
केतु	27/11/2043	चंद्र	12/08/2061	बुध	17/07/2073		00/00/0000
चंद्र	02/04/2046	बुध	01/04/2064	शुक्र	02/04/2075		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
08/05/1965		29/06/1966		01/04/1968		10/02/1970		02/04/1971	
29/06/1966		01/04/1968		10/02/1970		02/04/1971		15/09/1972	
	00/00/0000	बुध	01/10/1966	शुक्र	16/07/1968	सूर्य	22/03/1970	गुरु	31/05/1971
	08/05/1965	शुक्र	09/01/1967	सूर्य	18/09/1968	मंगल	04/05/1970	शनि	04/08/1971
शुक्र	25/07/1965	सूर्य	10/03/1967	मंगल	27/11/1968	गुरु	19/06/1970	केतु	11/10/1971
सूर्य	20/09/1965	मंगल	16/05/1967	गुरु	12/02/1969	शनि	08/08/1970	चंद्र	24/12/1971
मंगल	22/11/1965	गुरु	27/07/1967	शनि	05/05/1969	केतु	01/10/1970	बुध	11/03/1972
गुरु	29/01/1966	शनि	12/10/1967	केतु	01/08/1969	चंद्र	27/11/1970	शुक्र	01/06/1972
शनि	12/04/1966	केतु	03/01/1968	चंद्र	03/11/1969	बुध	27/01/1971	सूर्य	22/07/1972
केतु	29/06/1966	चंद्र	01/04/1968	बुध	10/02/1970	शुक्र	02/04/1971	मंगल	15/09/1972

गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र	
15/09/1972		11/04/1974		16/12/1975		01/10/1977		28/08/1979	
11/04/1974		16/12/1975		01/10/1977		28/08/1979		03/09/1981	
शनि	23/11/1972	केतु	29/06/1974	चंद्र	15/03/1976	बुध	11/01/1978	शुक्र	20/12/1979
केतु	05/02/1973	चंद्र	22/09/1974	बुध	19/06/1976	शुक्र	29/04/1978	सूर्य	28/02/1980
चंद्र	25/04/1973	बुध	21/12/1974	शुक्र	29/09/1976	सूर्य	04/07/1978	मंगल	14/05/1980
बुध	18/07/1973	शुक्र	26/03/1975	सूर्य	30/11/1976	मंगल	14/09/1978	गुरु	05/08/1980
शुक्र	15/10/1973	सूर्य	24/05/1975	मंगल	06/02/1977	गुरु	01/12/1978	शनि	02/11/1980
सूर्य	09/12/1973	मंगल	26/07/1975	गुरु	20/04/1977	शनि	23/02/1979	केतु	05/02/1981
मंगल	06/02/1974	गुरु	03/10/1975	शनि	08/07/1977	केतु	24/05/1979	चंद्र	18/05/1981
गुरु	11/04/1974	शनि	16/12/1975	केतु	01/10/1977	चंद्र	28/08/1979	बुध	03/09/1981

गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र	
03/09/1981		27/11/1982		01/04/1984		09/12/1985		01/10/1987	
27/11/1982		01/04/1984		09/12/1985		01/10/1987		06/09/1989	
सूर्य	15/10/1981	मंगल	17/01/1983	शनि	15/06/1984	केतु	05/03/1986	चंद्र	07/01/1988
मंगल	01/12/1981	गुरु	13/03/1983	केतु	02/09/1984	चंद्र	04/06/1986	बुध	19/04/1988
गुरु	20/01/1982	शनि	11/05/1983	चंद्र	26/11/1984	बुध	09/09/1986	शुक्र	07/08/1988
शनि	16/03/1982	केतु	14/07/1983	बुध	25/02/1985	शुक्र	20/12/1986	सूर्य	12/10/1988
केतु	13/05/1982	चंद्र	19/09/1983	शुक्र	01/06/1985	सूर्य	21/02/1987	मंगल	24/12/1988
चंद्र	14/07/1982	बुध	30/11/1983	सूर्य	29/07/1985	मंगल	01/05/1987	गुरु	13/03/1989
बुध	18/09/1982	शुक्र	14/02/1984	मंगल	01/10/1985	गुरु	14/07/1987	शनि	07/06/1989
शुक्र	27/11/1982	सूर्य	01/04/1984	गुरु	09/12/1985	शनि	01/10/1987	केतु	06/09/1989

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु	
06/09/1989		25/09/1991		27/11/1993		27/03/1995		05/09/1996	
25/09/1991		27/11/1993		27/03/1995		05/09/1996		02/04/1998	
बुध	25/12/1989	शुक्र	26/01/1992	सूर्य	12/01/1994	मंगल	20/05/1995	गुरु	09/11/1996
शुक्र	20/04/1990	सूर्य	11/04/1992	मंगल	03/03/1994	गुरु	19/07/1995	शनि	17/01/1997
सूर्य	30/06/1990	मंगल	02/07/1992	गुरु	26/04/1994	शनि	20/09/1995	केतु	01/04/1997
मंगल	15/09/1990	गुरु	29/09/1992	शनि	24/06/1994	केतु	28/11/1995	चंद्र	19/06/1997
गुरु	08/12/1990	शनि	02/01/1993	केतु	25/08/1994	चंद्र	09/02/1996	बुध	11/09/1997
शनि	09/03/1991	केतु	15/04/1993	चंद्र	31/10/1994	बुध	26/04/1996	शुक्र	09/12/1997
केतु	14/06/1991	चंद्र	02/08/1993	बुध	10/01/1995	शुक्र	17/07/1996	सूर्य	01/02/1998
चंद्र	25/09/1991	बुध	27/11/1993	शुक्र	27/03/1995	सूर्य	05/09/1996	मंगल	02/04/1998

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
02/04/1998		10/03/2000		05/04/2002		16/06/2004		14/10/2006	
10/03/2000		05/04/2002		16/06/2004		14/10/2006		16/03/2008	
केतु	02/07/1998	चंद्र	22/06/2000	बुध	31/07/2002	शुक्र	26/10/2004	सूर्य	02/12/2006
चंद्र	08/10/1998	बुध	11/10/2000	शुक्र	03/12/2002	सूर्य	14/01/2005	मंगल	25/01/2007
बुध	20/01/1999	शुक्र	05/02/2001	सूर्य	17/02/2003	मंगल	12/04/2005	गुरु	24/03/2007
शुक्र	10/05/1999	सूर्य	18/04/2001	मंगल	11/05/2003	गुरु	16/07/2005	शनि	26/05/2007
सूर्य	16/07/1999	मंगल	05/07/2001	गुरु	09/08/2003	शनि	27/10/2005	केतु	01/08/2007
मंगल	27/09/1999	गुरु	28/09/2001	शनि	14/11/2003	केतु	14/02/2006	चंद्र	12/10/2007
गुरु	16/12/1999	शनि	28/12/2001	केतु	26/02/2004	चंद्र	11/06/2006	बुध	27/12/2007
शनि	10/03/2000	केतु	05/04/2002	चंद्र	16/06/2004	बुध	14/10/2006	शुक्र	16/03/2008

केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध	
16/03/2008		04/10/2009		10/06/2011		01/04/2013		16/06/2015	
04/10/2009		10/06/2011		01/04/2013		16/06/2015		20/10/2017	
मंगल	14/05/2008	गुरु	12/12/2009	शनि	29/08/2011	चंद्र	21/07/2013	बुध	20/10/2015
गुरु	16/07/2008	शनि	24/02/2010	केतु	22/11/2011	बुध	17/11/2013	शुक्र	01/03/2016
शनि	23/09/2008	केतु	14/05/2010	चंद्र	22/02/2012	शुक्र	22/03/2014	सूर्य	21/05/2016
केतु	05/12/2008	चंद्र	07/08/2010	बुध	29/05/2012	सूर्य	06/06/2014	मंगल	18/08/2016
चंद्र	21/02/2009	बुध	05/11/2010	शुक्र	08/09/2012	मंगल	29/08/2014	गुरु	22/11/2016
बुध	15/05/2009	शुक्र	08/02/2011	सूर्य	10/11/2012	गुरु	27/11/2014	शनि	05/03/2017
शुक्र	11/08/2009	सूर्य	08/04/2011	मंगल	17/01/2013	शनि	04/03/2015	केतु	24/06/2017
सूर्य	04/10/2009	मंगल	10/06/2011	गुरु	01/04/2013	केतु	16/06/2015	चंद्र	20/10/2017

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
20/10/2017		14/04/2020		20/10/2021		16/06/2023		01/04/2025	
14/04/2020		20/10/2021		16/06/2023		01/04/2025		08/03/2027	
शुक्र	10/03/2018	सूर्य	05/06/2020	मंगल	21/12/2021	गुरु	29/08/2023	शनि	25/06/2025
सूर्य	04/06/2018	मंगल	02/08/2020	गुरु	27/02/2022	शनि	16/11/2023	केतु	25/09/2025
मंगल	05/09/2018	गुरु	03/10/2020	शनि	11/05/2022	केतु	09/02/2024	चंद्र	31/12/2025
गुरु	16/12/2018	शनि	09/12/2020	केतु	28/07/2022	चंद्र	09/05/2024	बुध	13/04/2026
शनि	04/04/2019	केतु	18/02/2021	चंद्र	20/10/2022	बुध	13/08/2024	शुक्र	01/08/2026
केतु	31/07/2019	चंद्र	06/05/2021	बुध	16/01/2023	शुक्र	22/11/2024	सूर्य	07/10/2026
चंद्र	03/12/2019	बुध	26/07/2021	शुक्र	20/04/2023	सूर्य	24/01/2025	मंगल	19/12/2026
बुध	14/04/2020	शुक्र	20/10/2021	सूर्य	16/06/2023	मंगल	01/04/2025	गुरु	08/03/2027

चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल	
08/03/2027		01/04/2029		28/09/2031		19/05/2034		29/12/2035	
01/04/2029		28/09/2031		19/05/2034		29/12/2035		01/10/2037	
केतु	13/06/2027	बुध	13/08/2029	शुक्र	25/02/2032	सूर्य	14/07/2034	मंगल	04/03/2036
चंद्र	26/09/2027	शुक्र	01/01/2030	सूर्य	26/05/2032	मंगल	13/09/2034	गुरु	15/05/2036
बुध	14/01/2028	सूर्य	28/03/2030	मंगल	03/09/2032	गुरु	18/11/2034	शनि	01/08/2036
शुक्र	11/05/2028	मंगल	30/06/2030	गुरु	20/12/2032	शनि	28/01/2035	केतु	23/10/2036
सूर्य	21/07/2028	गुरु	10/10/2030	शनि	15/04/2033	केतु	14/04/2035	चंद्र	19/01/2037
मंगल	07/10/2028	शनि	28/01/2031	केतु	18/08/2033	चंद्र	04/07/2035	बुध	23/04/2037
गुरु	31/12/2028	केतु	26/05/2031	चंद्र	29/12/2033	बुध	28/09/2035	शुक्र	01/08/2037
शनि	01/04/2029	चंद्र	28/09/2031	बुध	19/05/2034	शुक्र	29/12/2035	सूर्य	01/10/2037

बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र	
01/10/2037		28/08/2039		15/09/2041		27/11/2043		02/04/2046	
28/08/2039		15/09/2041		27/11/2043		02/04/2046		16/01/2049	
गुरु	18/12/2037	शनि	26/11/2039	केतु	28/12/2041	चंद्र	24/03/2044	शुक्र	07/09/2046
शनि	12/03/2038	केतु	02/03/2040	चंद्र	18/04/2042	बुध	28/07/2044	सूर्य	13/12/2046
केतु	10/06/2038	चंद्र	14/06/2040	बुध	13/08/2042	शुक्र	08/12/2044	मंगल	28/03/2047
चंद्र	14/09/2038	बुध	01/10/2040	शुक्र	16/12/2042	सूर्य	27/02/2045	गुरु	20/07/2047
बुध	25/12/2038	शुक्र	26/01/2041	सूर्य	02/03/2043	मंगल	26/05/2045	शनि	21/11/2047
शुक्र	12/04/2039	सूर्य	07/04/2041	मंगल	24/05/2043	गुरु	30/08/2045	केतु	01/04/2048
सूर्य	17/06/2039	मंगल	23/06/2041	गुरु	22/08/2043	शनि	12/12/2045	चंद्र	19/08/2048
मंगल	28/08/2039	गुरु	15/09/2041	शनि	27/11/2043	केतु	02/04/2046	बुध	16/01/2049

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु	
16/01/2049		01/10/2050		11/08/2052		18/08/2054		20/10/2056	
01/10/2050		11/08/2052		18/08/2054		20/10/2056		17/02/2059	
सूर्य	16/03/2049	मंगल	11/12/2050	गुरु	02/11/2052	शनि	22/11/2054	केतु	07/02/2057
मंगल	19/05/2049	गुरु	25/02/2051	शनि	30/01/2053	केतु	04/03/2055	चंद्र	04/06/2057
गुरु	28/07/2049	शनि	18/05/2051	केतु	05/05/2053	चंद्र	22/06/2055	बुध	06/10/2057
शनि	11/10/2049	केतु	14/08/2051	चंद्र	15/08/2053	बुध	16/10/2055	शुक्र	15/02/2058
केतु	31/12/2049	चंद्र	16/11/2051	बुध	01/12/2053	शुक्र	16/02/2056	सूर्य	07/05/2058
चंद्र	27/03/2050	बुध	23/02/2052	शुक्र	25/03/2054	सूर्य	02/05/2056	मंगल	03/08/2058
बुध	26/06/2050	शुक्र	08/06/2052	सूर्य	03/06/2054	मंगल	23/07/2056	गुरु	06/11/2058
शुक्र	01/10/2050	सूर्य	11/08/2052	मंगल	18/08/2054	गुरु	20/10/2056	शनि	17/02/2059

शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु	
17/02/2059		12/08/2061		01/04/2064		17/04/2065		07/06/2066	
12/08/2061		01/04/2064		17/04/2065		07/06/2066		31/08/2067	
चंद्र	22/06/2059	बुध	31/12/2061	सूर्य	07/05/2064	मंगल	30/05/2065	गुरु	27/07/2066
बुध	02/11/2059	शुक्र	29/05/2062	मंगल	16/06/2064	गुरु	16/07/2065	शनि	19/09/2066
शुक्र	21/03/2060	सूर्य	29/08/2062	गुरु	28/07/2064	शनि	04/09/2065	केतु	17/11/2066
सूर्य	15/06/2060	मंगल	06/12/2062	शनि	12/09/2064	केतु	28/10/2065	चंद्र	18/01/2067
मंगल	17/09/2060	गुरु	24/03/2063	केतु	01/11/2064	चंद्र	24/12/2065	बुध	25/03/2067
गुरु	28/12/2060	शनि	19/07/2063	चंद्र	23/12/2064	बुध	23/02/2066	शुक्र	03/06/2067
शनि	16/04/2061	केतु	20/11/2063	बुध	17/02/2065	शुक्र	28/04/2066	सूर्य	15/07/2067
केतु	12/08/2061	चंद्र	01/04/2064	शुक्र	17/04/2065	सूर्य	07/06/2066	मंगल	31/08/2067

सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र	
31/08/2067		28/12/2068		31/05/2070		07/12/2071		17/07/2073	
28/12/2068		31/05/2070		07/12/2071		17/07/2073		02/04/2075	
शनि	28/10/2067	केतु	05/03/2069	चंद्र	16/08/2070	बुध	02/03/2072	शुक्र	22/10/2073
केतु	30/12/2067	चंद्र	16/05/2069	बुध	05/11/2070	शुक्र	01/06/2072	सूर्य	20/12/2073
चंद्र	06/03/2068	बुध	31/07/2069	शुक्र	30/01/2071	सूर्य	27/07/2072	मंगल	23/02/2074
बुध	16/05/2068	शुक्र	19/10/2069	सूर्य	24/03/2071	मंगल	26/09/2072	गुरु	04/05/2074
शुक्र	30/07/2068	सूर्य	08/12/2069	मंगल	20/05/2071	गुरु	01/12/2072	शनि	18/07/2074
सूर्य	14/09/2068	मंगल	30/01/2070	गुरु	21/07/2071	शनि	10/02/2073	केतु	06/10/2074
मंगल	04/11/2068	गुरु	30/03/2070	शनि	26/09/2071	केतु	27/04/2073	चंद्र	31/12/2074
गुरु	28/12/2068	शनि	31/05/2070	केतु	07/12/2071	चंद्र	17/07/2073	बुध	02/04/2075

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 5 वर्ष 6 मास 26 दिन

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
08/05/1965		03/12/1970		04/08/1975		03/12/1988		03/12/1992	
03/12/1970		04/08/1975		03/12/1988		03/12/1992		04/08/1999	
	00/00/0000	केतु	13/03/1971	शुक्र	23/10/1977	सूर्य	14/02/1989	चंद्र	24/06/1993
	00/00/0000	शुक्र	22/12/1971	सूर्य	24/06/1978	चंद्र	15/06/1989	मंगल	13/11/1993
	00/00/0000	सूर्य	16/03/1972	चंद्र	04/08/1979	मंगल	09/09/1989	राहु	13/11/1994
	00/00/0000	चंद्र	05/08/1972	मंगल	14/05/1980	राहु	16/04/1990	गुरु	03/10/1995
	08/05/1965	मंगल	12/11/1972	राहु	14/05/1982	गुरु	28/10/1990	शनि	23/10/1996
मंगल	01/12/1965	राहु	26/07/1973	गुरु	23/02/1984	शनि	16/06/1991	बुध	03/10/1997
राहु	14/08/1967	गुरु	10/03/1974	शनि	04/04/1986	बुध	09/01/1992	केतु	22/02/1998
गुरु	16/02/1969	शनि	05/12/1974	बुध	23/02/1988	केतु	03/04/1992	शुक्र	04/04/1999
शनि	03/12/1970	बुध	04/08/1975	केतु	03/12/1988	शुक्र	03/12/1992	सूर्य	04/08/1999

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
04/08/1999		03/04/2004		03/04/2016		03/12/2026		04/08/2039	
03/04/2004		03/04/2016		03/12/2026		04/08/2039		00/00/0000	
मंगल	11/11/1999	राहु	21/01/2006	गुरु	05/09/2017	शनि	05/12/2028	बुध	12/03/2041
राहु	24/07/2000	गुरु	28/08/2007	शनि	14/05/2019	बुध	21/09/2030	केतु	08/11/2041
गुरु	08/03/2001	शनि	22/07/2009	बुध	16/11/2020	केतु	18/06/2031	शुक्र	29/09/2043
शनि	03/12/2001	बुध	04/04/2011	केतु	02/07/2021	शुक्र	28/07/2033	सूर्य	23/04/2044
बुध	01/08/2002	केतु	16/12/2011	शुक्र	12/04/2023	सूर्य	16/03/2034	चंद्र	03/04/2045
केतु	09/11/2002	शुक्र	15/12/2013	सूर्य	24/10/2023	चंद्र	06/04/2035	मंगल	08/05/2045
शुक्र	20/08/2003	सूर्य	22/07/2014	चंद्र	12/09/2024	मंगल	01/01/2036		00/00/0000
सूर्य	13/11/2003	चंद्र	22/07/2015	मंगल	28/04/2025	राहु	25/11/2037		00/00/0000
चंद्र	03/04/2004	मंगल	03/04/2016	राहु	03/12/2026	गुरु	04/08/2039		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
08/05/1965		01/12/1965		14/08/1967		16/02/1969		03/12/1970	
01/12/1965		14/08/1967		16/02/1969		03/12/1970		13/03/1971	
	08/05/1965	राहु	04/03/1966	गुरु	26/10/1967	शनि	30/05/1969	केतु	09/12/1970
राहु	24/05/1965	गुरु	26/05/1966	शनि	22/01/1968	बुध	31/08/1969	शुक्र	25/12/1970
गुरु	25/06/1965	शनि	01/09/1966	बुध	09/04/1968	केतु	09/10/1969	सूर्य	30/12/1970
शनि	02/08/1965	बुध	28/11/1966	केतु	11/05/1968	शुक्र	26/01/1970	चंद्र	08/01/1971
बुध	05/09/1965	केतु	03/01/1967	शुक्र	11/08/1968	सूर्य	28/02/1970	मंगल	14/01/1971
केतु	19/09/1965	शुक्र	17/04/1967	सूर्य	08/09/1968	चंद्र	23/04/1970	राहु	28/01/1971
शुक्र	30/10/1965	सूर्य	18/05/1967	चंद्र	24/10/1968	मंगल	31/05/1970	गुरु	11/02/1971
सूर्य	11/11/1965	चंद्र	09/07/1967	मंगल	25/11/1968	राहु	07/09/1970	शनि	26/02/1971
चंद्र	01/12/1965	मंगल	14/08/1967	राहु	16/02/1969	गुरु	03/12/1970	बुध	13/03/1971

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
13/03/1971		22/12/1971		16/03/1972		05/08/1972		12/11/1972	
22/12/1971		16/03/1972		05/08/1972		12/11/1972		26/07/1973	
शुक्र	29/04/1971	सूर्य	26/12/1971	चंद्र	28/03/1972	मंगल	11/08/1972	राहु	21/12/1972
सूर्य	13/05/1971	चंद्र	02/01/1972	मंगल	05/04/1972	राहु	26/08/1972	गुरु	24/01/1973
चंद्र	06/06/1971	मंगल	07/01/1972	राहु	26/04/1972	गुरु	08/09/1972	शनि	05/03/1973
मंगल	22/06/1971	राहु	20/01/1972	गुरु	15/05/1972	शनि	24/09/1972	बुध	10/04/1973
राहु	04/08/1971	गुरु	31/01/1972	शनि	07/06/1972	बुध	08/10/1972	केतु	25/04/1973
गुरु	11/09/1971	शनि	14/02/1972	बुध	27/06/1972	केतु	13/10/1972	शुक्र	07/06/1973
शनि	26/10/1971	बुध	26/02/1972	केतु	05/07/1972	शुक्र	30/10/1972	सूर्य	20/06/1973
बुध	05/12/1971	केतु	02/03/1972	शुक्र	29/07/1972	सूर्य	04/11/1972	चंद्र	11/07/1973
केतु	22/12/1971	शुक्र	16/03/1972	सूर्य	05/08/1972	चंद्र	12/11/1972	मंगल	26/07/1973

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
26/07/1973		10/03/1974		05/12/1974		04/08/1975		23/10/1977	
10/03/1974		05/12/1974		04/08/1975		23/10/1977		24/06/1978	
गुरु	25/08/1973	शनि	22/04/1974	बुध	08/01/1975	शुक्र	17/12/1975	सूर्य	04/11/1977
शनि	30/09/1973	बुध	30/05/1974	केतु	22/01/1975	सूर्य	26/01/1976	चंद्र	25/11/1977
बुध	01/11/1973	केतु	15/06/1974	शुक्र	04/03/1975	चंद्र	03/04/1976	मंगल	09/12/1977
केतु	15/11/1973	शुक्र	30/07/1974	सूर्य	16/03/1975	मंगल	20/05/1976	राहु	14/01/1978
शुक्र	23/12/1973	सूर्य	12/08/1974	चंद्र	05/04/1975	राहु	19/09/1976	गुरु	16/02/1978
सूर्य	03/01/1974	चंद्र	04/09/1974	मंगल	19/04/1975	गुरु	05/01/1977	शनि	26/03/1978
चंद्र	22/01/1974	मंगल	20/09/1974	राहु	25/05/1975	शनि	14/05/1977	बुध	30/04/1978
मंगल	04/02/1974	राहु	30/10/1974	गुरु	26/06/1975	बुध	06/09/1977	केतु	14/05/1978
राहु	10/03/1974	गुरु	05/12/1974	शनि	04/08/1975	केतु	23/10/1977	शुक्र	24/06/1978

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
24/06/1978		04/08/1979		14/05/1980		14/05/1982		23/02/1984	
04/08/1979		14/05/1980		14/05/1982		23/02/1984		04/04/1986	
चंद्र	28/07/1978	मंगल	20/08/1979	राहु	31/08/1980	गुरु	09/08/1982	शनि	24/06/1984
मंगल	20/08/1978	राहु	02/10/1979	गुरु	07/12/1980	शनि	20/11/1982	बुध	11/10/1984
राहु	20/10/1978	गुरु	09/11/1979	शनि	01/04/1981	बुध	20/02/1983	केतु	25/11/1984
गुरु	13/12/1978	शनि	24/12/1979	बुध	14/07/1981	केतु	29/03/1983	शुक्र	02/04/1985
शनि	16/02/1979	बुध	02/02/1980	केतु	25/08/1981	शुक्र	16/07/1983	सूर्य	11/05/1985
बुध	14/04/1979	केतु	18/02/1980	शुक्र	25/12/1981	सूर्य	17/08/1983	चंद्र	14/07/1985
केतु	08/05/1979	शुक्र	06/04/1980	सूर्य	31/01/1982	चंद्र	10/10/1983	मंगल	28/08/1985
शुक्र	14/07/1979	सूर्य	20/04/1980	चंद्र	02/04/1982	मंगल	17/11/1983	राहु	22/12/1985
सूर्य	04/08/1979	चंद्र	14/05/1980	मंगल	14/05/1982	राहु	23/02/1984	गुरु	04/04/1986

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
04/04/1986		23/02/1988		03/12/1988		14/02/1989		15/06/1989	
23/02/1988		03/12/1988		14/02/1989		15/06/1989		09/09/1989	
बुध	10/07/1986	केतु	10/03/1988	सूर्य	06/12/1988	चंद्र	24/02/1989	मंगल	20/06/1989
केतु	20/08/1986	शुक्र	26/04/1988	चंद्र	12/12/1988	मंगल	03/03/1989	राहु	03/07/1989
शुक्र	13/12/1986	सूर्य	11/05/1988	मंगल	17/12/1988	राहु	21/03/1989	गुरु	15/07/1989
सूर्य	16/01/1987	चंद्र	03/06/1988	राहु	28/12/1988	गुरु	06/04/1989	शनि	28/07/1989
चंद्र	15/03/1987	मंगल	20/06/1988	गुरु	06/01/1989	शनि	26/04/1989	बुध	09/08/1989
मंगल	24/04/1987	राहु	01/08/1988	शनि	18/01/1989	बुध	13/05/1989	केतु	14/08/1989
राहु	05/08/1987	गुरु	08/09/1988	बुध	28/01/1989	केतु	20/05/1989	शुक्र	28/08/1989
गुरु	05/11/1987	शनि	23/10/1988	केतु	01/02/1989	शुक्र	09/06/1989	सूर्य	02/09/1989
शनि	23/02/1988	बुध	03/12/1988	शुक्र	14/02/1989	सूर्य	15/06/1989	चंद्र	09/09/1989

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
09/09/1989		16/04/1990		28/10/1990		16/06/1991		09/01/1992	
16/04/1990		28/10/1990		16/06/1991		09/01/1992		03/04/1992	
राहु	11/10/1989	गुरु	12/05/1990	शनि	03/12/1990	बुध	15/07/1991	केतु	14/01/1992
गुरु	10/11/1989	शनि	12/06/1990	बुध	05/01/1991	केतु	27/07/1991	शुक्र	28/01/1992
शनि	14/12/1989	बुध	09/07/1990	केतु	18/01/1991	शुक्र	31/08/1991	सूर्य	01/02/1992
बुध	14/01/1990	केतु	21/07/1990	शुक्र	26/02/1991	सूर्य	10/09/1991	चंद्र	08/02/1992
केतु	27/01/1990	शुक्र	22/08/1990	सूर्य	10/03/1991	चंद्र	27/09/1991	मंगल	13/02/1992
शुक्र	05/03/1990	सूर्य	01/09/1990	चंद्र	29/03/1991	मंगल	09/10/1991	राहु	26/02/1992
सूर्य	16/03/1990	चंद्र	17/09/1990	मंगल	11/04/1991	राहु	10/11/1991	गुरु	09/03/1992
चंद्र	03/04/1990	मंगल	28/09/1990	राहु	16/05/1991	गुरु	07/12/1991	शनि	22/03/1992
मंगल	16/04/1990	राहु	28/10/1990	गुरु	16/06/1991	शनि	09/01/1992	बुध	03/04/1992

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
03/04/1992		03/12/1992		24/06/1993		13/11/1993		13/11/1994	
03/12/1992		24/06/1993		13/11/1993		13/11/1994		03/10/1995	
शुक्र	14/05/1992	चंद्र	20/12/1992	मंगल	02/07/1993	राहु	06/01/1994	गुरु	26/12/1994
सूर्य	26/05/1992	मंगल	31/12/1992	राहु	23/07/1993	गुरु	24/02/1994	शनि	16/02/1995
चंद्र	15/06/1992	राहु	31/01/1993	गुरु	11/08/1993	शनि	23/04/1994	बुध	02/04/1995
मंगल	29/06/1992	गुरु	27/02/1993	शनि	03/09/1993	बुध	14/06/1994	केतु	21/04/1995
राहु	05/08/1992	शनि	31/03/1993	बुध	23/09/1993	केतु	05/07/1994	शुक्र	15/06/1995
गुरु	06/09/1992	बुध	29/04/1993	केतु	01/10/1993	शुक्र	04/09/1994	सूर्य	01/07/1995
शनि	15/10/1992	केतु	11/05/1993	शुक्र	25/10/1993	सूर्य	22/09/1994	चंद्र	28/07/1995
बुध	18/11/1992	शुक्र	13/06/1993	सूर्य	01/11/1993	चंद्र	23/10/1994	मंगल	16/08/1995
केतु	03/12/1992	सूर्य	24/06/1993	चंद्र	13/11/1993	मंगल	13/11/1994	राहु	03/10/1995

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
03/10/1995		23/10/1996		03/10/1997		22/02/1998		04/04/1999	
23/10/1996		03/10/1997		22/02/1998		04/04/1999		04/08/1999	
शनि	04/12/1995	बुध	11/12/1996	केतु	11/10/1997	शुक्र	01/05/1998	सूर्य	10/04/1999
बुध	27/01/1996	केतु	31/12/1996	शुक्र	04/11/1997	सूर्य	21/05/1998	चंद्र	20/04/1999
केतु	19/02/1996	शुक्र	27/02/1997	सूर्य	11/11/1997	चंद्र	24/06/1998	मंगल	27/04/1999
शुक्र	23/04/1996	सूर्य	16/03/1997	चंद्र	23/11/1997	मंगल	17/07/1998	राहु	15/05/1999
सूर्य	12/05/1996	चंद्र	13/04/1997	मंगल	01/12/1997	राहु	16/09/1998	गुरु	01/06/1999
चंद्र	13/06/1996	मंगल	04/05/1997	राहु	22/12/1997	गुरु	09/11/1998	शनि	20/06/1999
मंगल	06/07/1996	राहु	24/06/1997	गुरु	10/01/1998	शनि	13/01/1999	बुध	07/07/1999
राहु	02/09/1996	गुरु	09/08/1997	शनि	02/02/1998	बुध	11/03/1999	केतु	14/07/1999
गुरु	23/10/1996	शनि	03/10/1997	बुध	22/02/1998	केतु	04/04/1999	शुक्र	04/08/1999

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
04/08/1999		11/11/1999		24/07/2000		08/03/2001		03/12/2001	
11/11/1999		24/07/2000		08/03/2001		03/12/2001		01/08/2002	
मंगल	09/08/1999	राहु	19/12/1999	गुरु	23/08/2000	शनि	20/04/2001	बुध	06/01/2002
राहु	24/08/1999	गुरु	22/01/2000	शनि	28/09/2000	बुध	28/05/2001	केतु	20/01/2002
गुरु	07/09/1999	शनि	03/03/2000	बुध	30/10/2000	केतु	13/06/2001	शुक्र	01/03/2002
शनि	22/09/1999	बुध	08/04/2000	केतु	12/11/2000	शुक्र	28/07/2001	सूर्य	13/03/2002
बुध	06/10/1999	केतु	23/04/2000	शुक्र	20/12/2000	सूर्य	10/08/2001	चंद्र	03/04/2002
केतु	12/10/1999	शुक्र	05/06/2000	सूर्य	01/01/2001	चंद्र	02/09/2001	मंगल	17/04/2002
शुक्र	29/10/1999	सूर्य	17/06/2000	चंद्र	20/01/2001	मंगल	17/09/2001	राहु	23/05/2002
सूर्य	03/11/1999	चंद्र	09/07/2000	मंगल	02/02/2001	राहु	28/10/2001	गुरु	24/06/2002
चंद्र	11/11/1999	मंगल	24/07/2000	राहु	08/03/2001	गुरु	03/12/2001	शनि	01/08/2002

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
01/08/2002		09/11/2002		20/08/2003		13/11/2003		03/04/2004	
09/11/2002		20/08/2003		13/11/2003		03/04/2004		21/01/2006	
केतु	07/08/2002	शुक्र	26/12/2002	सूर्य	24/08/2003	चंद्र	25/11/2003	राहु	11/07/2004
शुक्र	24/08/2002	सूर्य	09/01/2003	चंद्र	31/08/2003	मंगल	03/12/2003	गुरु	06/10/2004
सूर्य	29/08/2002	चंद्र	02/02/2003	मंगल	05/09/2003	राहु	24/12/2003	शनि	18/01/2005
चंद्र	06/09/2002	मंगल	19/02/2003	राहु	18/09/2003	गुरु	12/01/2004	बुध	22/04/2005
मंगल	12/09/2002	राहु	02/04/2003	गुरु	29/09/2003	शनि	04/02/2004	केतु	30/05/2005
राहु	27/09/2002	गुरु	10/05/2003	शनि	13/10/2003	बुध	24/02/2004	शुक्र	17/09/2005
गुरु	10/10/2002	शनि	24/06/2003	बुध	25/10/2003	केतु	03/03/2004	सूर्य	19/10/2005
शनि	26/10/2002	बुध	03/08/2003	केतु	30/10/2003	शुक्र	27/03/2004	चंद्र	13/12/2005
बुध	09/11/2002	केतु	20/08/2003	शुक्र	13/11/2003	सूर्य	03/04/2004	मंगल	21/01/2006

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
21/01/2006		28/08/2007		22/07/2009		04/04/2011		16/12/2011	
28/08/2007		22/07/2009		04/04/2011		16/12/2011		15/12/2013	
गुरु	08/04/2006	शनि	16/12/2007	बुध	18/10/2009	केतु	19/04/2011	शुक्र	15/04/2012
शनि	10/07/2006	बुध	23/03/2008	केतु	23/11/2009	शुक्र	31/05/2011	सूर्य	22/05/2012
बुध	01/10/2006	केतु	03/05/2008	शुक्र	07/03/2010	सूर्य	13/06/2011	चंद्र	22/07/2012
केतु	04/11/2006	शुक्र	26/08/2008	सूर्य	07/04/2010	चंद्र	04/07/2011	मंगल	02/09/2012
शुक्र	09/02/2007	सूर्य	30/09/2008	चंद्र	28/05/2010	मंगल	19/07/2011	राहु	21/12/2012
सूर्य	10/03/2007	चंद्र	27/11/2008	मंगल	04/07/2010	राहु	27/08/2011	गुरु	28/03/2013
चंद्र	28/04/2007	मंगल	06/01/2009	राहु	05/10/2010	गुरु	30/09/2011	शनि	22/07/2013
मंगल	01/06/2007	राहु	20/04/2009	गुरु	27/12/2010	शनि	09/11/2011	बुध	02/11/2013
राहु	28/08/2007	गुरु	22/07/2009	शनि	04/04/2011	बुध	16/12/2011	केतु	15/12/2013

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
15/12/2013		22/07/2014		22/07/2015		03/04/2016		05/09/2017	
22/07/2014		22/07/2015		03/04/2016		05/09/2017		14/05/2019	
सूर्य	26/12/2013	चंद्र	22/08/2014	मंगल	06/08/2015	गुरु	11/06/2016	शनि	11/12/2017
चंद्र	13/01/2014	मंगल	12/09/2014	राहु	14/09/2015	शनि	02/09/2016	बुध	09/03/2018
मंगल	26/01/2014	राहु	06/11/2014	गुरु	18/10/2015	बुध	14/11/2016	केतु	14/04/2018
राहु	28/02/2014	गुरु	24/12/2014	शनि	27/11/2015	केतु	15/12/2016	शुक्र	25/07/2018
गुरु	29/03/2014	शनि	20/02/2015	बुध	02/01/2016	शुक्र	11/03/2017	सूर्य	25/08/2018
शनि	03/05/2014	बुध	13/04/2015	केतु	17/01/2016	सूर्य	06/04/2017	चंद्र	16/10/2018
बुध	03/06/2014	केतु	04/05/2015	शुक्र	29/02/2016	चंद्र	19/05/2017	मंगल	21/11/2018
केतु	16/06/2014	शुक्र	04/07/2015	सूर्य	13/03/2016	मंगल	19/06/2017	राहु	21/02/2019
शुक्र	22/07/2014	सूर्य	22/07/2015	चंद्र	03/04/2016	राहु	05/09/2017	गुरु	14/05/2019

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
14/05/2019		16/11/2020		02/07/2021		12/04/2023		24/10/2023	
16/11/2020		02/07/2021		12/04/2023		24/10/2023		12/09/2024	
बुध	01/08/2019	केतु	30/11/2020	शुक्र	18/10/2021	सूर्य	22/04/2023	चंद्र	20/11/2023
केतु	02/09/2019	शुक्र	07/01/2021	सूर्य	19/11/2021	चंद्र	08/05/2023	मंगल	09/12/2023
शुक्र	03/12/2019	सूर्य	18/01/2021	चंद्र	12/01/2022	मंगल	19/05/2023	राहु	26/01/2024
सूर्य	30/12/2019	चंद्र	06/02/2021	मंगल	19/02/2022	राहु	18/06/2023	गुरु	10/03/2024
चंद्र	14/02/2020	मंगल	19/02/2021	राहु	28/05/2022	गुरु	13/07/2023	शनि	30/04/2024
मंगल	18/03/2020	राहु	25/03/2021	गुरु	22/08/2022	शनि	13/08/2023	बुध	15/06/2024
राहु	08/06/2020	गुरु	24/04/2021	शनि	03/12/2022	बुध	10/09/2023	केतु	04/07/2024
गुरु	21/08/2020	शनि	30/05/2021	बुध	05/03/2023	केतु	21/09/2023	शुक्र	27/08/2024
शनि	16/11/2020	बुध	02/07/2021	केतु	12/04/2023	शुक्र	24/10/2023	सूर्य	12/09/2024

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
12/09/2024		28/04/2025		03/12/2026		05/12/2028		21/09/2030	
28/04/2025		03/12/2026		05/12/2028		21/09/2030		18/06/2031	
मंगल	26/09/2024	राहु	24/07/2025	शनि	29/03/2027	बुध	07/03/2029	केतु	07/10/2030
राहु	30/10/2024	गुरु	10/10/2025	बुध	11/07/2027	केतु	15/04/2029	शुक्र	21/11/2030
गुरु	29/11/2024	शनि	11/01/2026	केतु	23/08/2027	शुक्र	02/08/2029	सूर्य	04/12/2030
शनि	04/01/2025	बुध	04/04/2026	शुक्र	23/12/2027	सूर्य	04/09/2029	चंद्र	27/12/2030
बुध	05/02/2025	केतु	08/05/2026	सूर्य	28/01/2028	चंद्र	28/10/2029	मंगल	11/01/2031
केतु	19/02/2025	शुक्र	13/08/2026	चंद्र	29/03/2028	मंगल	06/12/2029	राहु	21/02/2031
शुक्र	28/03/2025	सूर्य	11/09/2026	मंगल	11/05/2028	राहु	14/03/2030	गुरु	29/03/2031
सूर्य	09/04/2025	चंद्र	30/10/2026	राहु	29/08/2028	गुरु	09/06/2030	शनि	11/05/2031
चंद्र	28/04/2025	मंगल	03/12/2026	गुरु	05/12/2028	शनि	21/09/2030	बुध	18/06/2031

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
18/06/2031		28/07/2033		16/03/2034		06/04/2035		01/01/2036	
28/07/2033		16/03/2034		06/04/2035		01/01/2036		25/11/2037	
शुक्र	24/10/2031	सूर्य	09/08/2033	चंद्र	17/04/2034	मंगल	22/04/2035	राहु	14/04/2036
सूर्य	02/12/2031	चंद्र	28/08/2033	मंगल	10/05/2034	राहु	01/06/2035	गुरु	15/07/2036
चंद्र	04/02/2032	मंगल	10/09/2033	राहु	07/07/2034	गुरु	07/07/2035	शनि	02/11/2036
मंगल	20/03/2032	राहु	15/10/2033	गुरु	27/08/2034	शनि	19/08/2035	बुध	09/02/2037
राहु	14/07/2032	गुरु	15/11/2033	शनि	27/10/2034	बुध	26/09/2035	केतु	21/03/2037
गुरु	25/10/2032	शनि	22/12/2033	बुध	21/12/2034	केतु	12/10/2035	शुक्र	15/07/2037
शनि	24/02/2033	बुध	23/01/2034	केतु	12/01/2035	शुक्र	26/11/2035	सूर्य	18/08/2037
बुध	13/06/2033	केतु	06/02/2034	शुक्र	18/03/2035	सूर्य	09/12/2035	चंद्र	15/10/2037
केतु	28/07/2033	शुक्र	16/03/2034	सूर्य	06/04/2035	चंद्र	01/01/2036	मंगल	25/11/2037

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 13 वर्ष 1 मास 3 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
08/05/1965		11/06/1978		11/06/1986		12/06/2003		11/06/2013	
11/06/1978		11/06/1986		12/06/2003		11/06/2013		11/06/2032	
चंद्र	12/07/1965	मंगल	14/01/1979	बुध	13/02/1989	शनि	15/05/2004	गुरु	14/10/2016
मंगल	21/08/1966	बुध	18/04/1980	शनि	11/09/1990	गुरु	16/02/2006	राहु	24/11/2018
बुध	31/12/1968	शनि	13/01/1981	गुरु	07/09/1993	राहु	29/03/2007	शुक्र	05/08/2022
शनि	22/05/1970	गुरु	11/06/1982	राहु	29/07/1995	शुक्र	08/03/2009	सूर्य	25/08/2023
गुरु	10/01/1973	राहु	02/05/1983	शुक्र	17/11/1998	सूर्य	27/09/2009	चंद्र	15/04/2026
राहु	11/09/1974	शुक्र	20/11/1984	सूर्य	28/10/1999	चंद्र	17/02/2011	मंगल	11/09/2027
शुक्र	11/08/1977	सूर्य	02/05/1985	चंद्र	09/03/2002	मंगल	14/11/2011	बुध	07/09/2030
सूर्य	11/06/1978	चंद्र	11/06/1986	मंगल	12/06/2003	बुध	11/06/2013	शनि	11/06/2032

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
11/06/2032		11/06/2044		11/06/2065		12/06/2071	
11/06/2044		11/06/2065		12/06/2071		00/00/0000	
राहु	11/10/2033	शुक्र	11/07/2048	सूर्य	11/10/2065	चंद्र	08/05/2073
शुक्र	10/02/2036	सूर्य	10/09/2049	चंद्र	11/08/2066		00/00/0000
सूर्य	11/10/2036	चंद्र	11/08/2052	मंगल	21/01/2067		00/00/0000
चंद्र	11/06/2038	मंगल	02/03/2054	बुध	01/01/2068		00/00/0000
मंगल	02/05/2039	बुध	21/06/2057	शनि	21/07/2068		00/00/0000
बुध	22/03/2041	शनि	02/06/2059	गुरु	11/08/2069		00/00/0000
शनि	02/05/2042	गुरु	10/02/2063	राहु	12/04/2070		00/00/0000
गुरु	11/06/2044	राहु	11/06/2065	शुक्र	12/06/2071		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु	
08/05/1965		12/07/1965		21/08/1966		31/12/1968		22/05/1970	
12/07/1965		21/08/1966		31/12/1968		22/05/1970		10/01/1973	
	00/00/0000	मंगल	11/08/1965	बुध	04/01/1967	शनि	16/02/1969	गुरु	08/11/1970
	00/00/0000	बुध	14/10/1965	शनि	25/03/1967	गुरु	16/05/1969	राहु	23/02/1971
	00/00/0000	शनि	20/11/1965	गुरु	24/08/1967	राहु	11/07/1969	शुक्र	29/08/1971
	00/00/0000	गुरु	31/01/1966	राहु	28/11/1967	शुक्र	18/10/1969	सूर्य	22/10/1971
	00/00/0000	राहु	17/03/1966	शुक्र	13/05/1968	सूर्य	15/11/1969	चंद्र	04/03/1972
	08/05/1965	शुक्र	04/06/1966	सूर्य	30/06/1968	चंद्र	25/01/1970	मंगल	14/05/1972
शुक्र	30/05/1965	सूर्य	26/06/1966	चंद्र	28/10/1968	मंगल	03/03/1970	बुध	13/10/1972
सूर्य	12/07/1965	चंद्र	21/08/1966	मंगल	31/12/1968	बुध	22/05/1970	शनि	10/01/1973

चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध	
10/01/1973		11/09/1974		11/08/1977		11/06/1978		14/01/1979	
11/09/1974		11/08/1977		11/06/1978		14/01/1979		18/04/1980	
राहु	19/03/1973	शुक्र	06/04/1975	सूर्य	28/08/1977	मंगल	27/06/1978	बुध	27/03/1979
शुक्र	15/07/1973	सूर्य	04/06/1975	चंद्र	09/10/1977	बुध	01/08/1978	शनि	09/05/1979
सूर्य	18/08/1973	चंद्र	30/10/1975	मंगल	01/11/1977	शनि	21/08/1978	गुरु	29/07/1979
चंद्र	10/11/1973	मंगल	17/01/1976	बुध	19/12/1977	गुरु	28/09/1978	राहु	18/09/1979
मंगल	25/12/1973	बुध	03/07/1976	शनि	16/01/1978	राहु	22/10/1978	शुक्र	16/12/1979
बुध	31/03/1974	शनि	09/10/1976	गुरु	10/03/1978	शुक्र	03/12/1978	सूर्य	11/01/1980
शनि	27/05/1974	गुरु	15/04/1977	राहु	13/04/1978	सूर्य	15/12/1978	चंद्र	15/03/1980
गुरु	11/09/1974	राहु	11/08/1977	शुक्र	11/06/1978	चंद्र	14/01/1979	मंगल	18/04/1980

मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
18/04/1980		13/01/1981		11/06/1982		02/05/1983		20/11/1984	
13/01/1981		11/06/1982		02/05/1983		20/11/1984		02/05/1985	
शनि	13/05/1980	गुरु	14/04/1981	राहु	17/07/1982	शुक्र	21/08/1983	सूर्य	29/11/1984
गुरु	29/06/1980	राहु	10/06/1981	शुक्र	19/09/1982	सूर्य	21/09/1983	चंद्र	22/12/1984
राहु	30/07/1980	शुक्र	18/09/1981	सूर्य	07/10/1982	चंद्र	09/12/1983	मंगल	03/01/1985
शुक्र	20/09/1980	सूर्य	16/10/1981	चंद्र	21/11/1982	मंगल	20/01/1984	बुध	28/01/1985
सूर्य	05/10/1980	चंद्र	27/12/1981	मंगल	15/12/1982	बुध	19/04/1984	शनि	12/02/1985
चंद्र	12/11/1980	मंगल	03/02/1982	बुध	04/02/1983	शनि	10/06/1984	गुरु	13/03/1985
मंगल	02/12/1980	बुध	25/04/1982	शनि	06/03/1983	गुरु	18/09/1984	राहु	31/03/1985
बुध	13/01/1981	शनि	11/06/1982	गुरु	02/05/1983	राहु	20/11/1984	शुक्र	02/05/1985

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु	
02/05/1985		11/06/1986		13/02/1989		11/09/1990		07/09/1993	
11/06/1986		13/02/1989		11/09/1990		07/09/1993		29/07/1995	
चंद्र	27/06/1985	बुध	12/11/1986	शनि	07/04/1989	गुरु	22/03/1991	राहु	23/11/1993
मंगल	27/07/1985	शनि	11/02/1987	गुरु	17/07/1989	राहु	21/07/1991	शुक्र	06/04/1994
बुध	29/09/1985	गुरु	02/08/1987	राहु	19/09/1989	शुक्र	19/02/1992	सूर्य	14/05/1994
शनि	05/11/1985	राहु	18/11/1987	शुक्र	09/01/1990	सूर्य	19/04/1992	चंद्र	18/08/1994
गुरु	16/01/1986	शुक्र	26/05/1988	सूर्य	10/02/1990	चंद्र	18/09/1992	मंगल	08/10/1994
राहु	02/03/1986	सूर्य	20/07/1988	चंद्र	01/05/1990	मंगल	08/12/1992	बुध	25/01/1995
शुक्र	20/05/1986	चंद्र	02/12/1988	मंगल	12/06/1990	बुध	29/05/1993	शनि	30/03/1995
सूर्य	11/06/1986	मंगल	13/02/1989	बुध	11/09/1990	शनि	07/09/1993	गुरु	29/07/1995

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि	
29/07/1995		17/11/1998		28/10/1999		09/03/2002		12/06/2003	
17/11/1998		28/10/1999		09/03/2002		12/06/2003		15/05/2004	
शुक्र	20/03/1996	सूर्य	07/12/1998	चंद्र	25/02/2000	मंगल	12/04/2002	शनि	13/07/2003
सूर्य	26/05/1996	चंद्र	23/01/1999	मंगल	29/04/2000	बुध	23/06/2002	गुरु	10/09/2003
चंद्र	10/11/1996	मंगल	18/02/1999	बुध	12/09/2000	शनि	05/08/2002	राहु	18/10/2003
मंगल	07/02/1997	बुध	13/04/1999	शनि	01/12/2000	गुरु	25/10/2002	शुक्र	23/12/2003
बुध	16/08/1997	शनि	15/05/1999	गुरु	01/05/2001	राहु	15/12/2002	सूर्य	11/01/2004
शनि	06/12/1997	गुरु	15/07/1999	राहु	05/08/2001	शुक्र	14/03/2003	चंद्र	27/02/2004
गुरु	06/07/1998	राहु	22/08/1999	शुक्र	20/01/2002	सूर्य	09/04/2003	मंगल	23/03/2004
राहु	17/11/1998	शुक्र	28/10/1999	सूर्य	09/03/2002	चंद्र	12/06/2003	बुध	15/05/2004

शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
15/05/2004		16/02/2006		29/03/2007		08/03/2009		27/09/2009	
16/02/2006		29/03/2007		08/03/2009		27/09/2009		17/02/2011	
गुरु	05/09/2004	राहु	03/04/2006	शुक्र	14/08/2007	सूर्य	20/03/2009	चंद्र	07/12/2009
राहु	15/11/2004	शुक्र	20/06/2006	सूर्य	23/09/2007	चंद्र	17/04/2009	मंगल	13/01/2010
शुक्र	20/03/2005	सूर्य	13/07/2006	चंद्र	30/12/2007	मंगल	02/05/2009	बुध	03/04/2010
सूर्य	25/04/2005	चंद्र	07/09/2006	मंगल	21/02/2008	बुध	03/06/2009	शनि	20/05/2010
चंद्र	23/07/2005	मंगल	07/10/2006	बुध	12/06/2008	शनि	22/06/2009	गुरु	17/08/2010
मंगल	09/09/2005	बुध	10/12/2006	शनि	17/08/2008	गुरु	27/07/2009	राहु	13/10/2010
बुध	19/12/2005	शनि	17/01/2007	गुरु	20/12/2008	राहु	19/08/2009	शुक्र	19/01/2011
शनि	16/02/2006	गुरु	29/03/2007	राहु	08/03/2009	शुक्र	27/09/2009	सूर्य	17/02/2011

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र	
17/02/2011		14/11/2011		11/06/2013		14/10/2016		24/11/2018	
14/11/2011		11/06/2013		14/10/2016		24/11/2018		05/08/2022	
मंगल	09/03/2011	बुध	13/02/2012	गुरु	12/01/2014	राहु	08/01/2017	शुक्र	14/08/2019
बुध	20/04/2011	शनि	06/04/2012	राहु	28/05/2014	शुक्र	07/06/2017	सूर्य	27/10/2019
शनि	15/05/2011	गुरु	16/07/2012	शुक्र	20/01/2015	सूर्य	19/07/2017	चंद्र	02/05/2020
गुरु	02/07/2011	राहु	18/09/2012	सूर्य	29/03/2015	चंद्र	04/11/2017	मंगल	10/08/2020
राहु	01/08/2011	शुक्र	08/01/2013	चंद्र	14/09/2015	मंगल	31/12/2017	बुध	10/03/2021
शुक्र	23/09/2011	सूर्य	09/02/2013	मंगल	14/12/2015	बुध	01/05/2018	शनि	13/07/2021
सूर्य	08/10/2011	चंद्र	30/04/2013	बुध	23/06/2016	शनि	11/07/2018	गुरु	08/03/2022
चंद्र	14/11/2011	मंगल	11/06/2013	शनि	14/10/2016	गुरु	24/11/2018	राहु	05/08/2022

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि	
05/08/2022		25/08/2023		15/04/2026		11/09/2027		07/09/2030	
25/08/2023		15/04/2026		11/09/2027		07/09/2030		11/06/2032	
सूर्य	26/08/2022	चंद्र	06/01/2024	मंगल	23/05/2026	बुध	01/03/2028	शनि	06/11/2030
चंद्र	18/10/2022	मंगल	17/03/2024	बुध	12/08/2026	शनि	10/06/2028	गुरु	27/02/2031
मंगल	16/11/2022	बुध	16/08/2024	शनि	29/09/2026	गुरु	19/12/2028	राहु	09/05/2031
बुध	16/01/2023	शनि	13/11/2024	गुरु	28/12/2026	राहु	20/04/2029	शुक्र	11/09/2031
शनि	20/02/2023	गुरु	02/05/2025	राहु	23/02/2027	शुक्र	18/11/2029	सूर्य	17/10/2031
गुरु	29/04/2023	राहु	17/08/2025	शुक्र	03/06/2027	सूर्य	18/01/2030	चंद्र	14/01/2032
राहु	11/06/2023	शुक्र	20/02/2026	सूर्य	02/07/2027	चंद्र	18/06/2030	मंगल	02/03/2032
शुक्र	25/08/2023	सूर्य	15/04/2026	चंद्र	11/09/2027	मंगल	07/09/2030	बुध	11/06/2032

राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
11/06/2032		11/10/2033		10/02/2036		11/10/2036		11/06/2038	
11/10/2033		10/02/2036		11/10/2036		11/06/2038		02/05/2039	
राहु	04/08/2032	शुक्र	26/03/2034	सूर्य	24/02/2036	चंद्र	03/01/2037	मंगल	05/07/2038
शुक्र	07/11/2032	सूर्य	12/05/2034	चंद्र	29/03/2036	मंगल	17/02/2037	बुध	26/08/2038
सूर्य	04/12/2032	चंद्र	07/09/2034	मंगल	16/04/2036	बुध	24/05/2037	शनि	25/09/2038
चंद्र	09/02/2033	मंगल	09/11/2034	बुध	24/05/2036	शनि	19/07/2037	गुरु	21/11/2038
मंगल	17/03/2033	बुध	24/03/2035	शनि	15/06/2036	गुरु	04/11/2037	राहु	27/12/2038
बुध	02/06/2033	शनि	11/06/2035	गुरु	28/07/2036	राहु	10/01/2038	शुक्र	28/02/2039
शनि	17/07/2033	गुरु	07/11/2035	राहु	24/08/2036	शुक्र	09/05/2038	सूर्य	18/03/2039
गुरु	11/10/2033	राहु	10/02/2036	शुक्र	11/10/2036	सूर्य	11/06/2038	चंद्र	02/05/2039

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
02/05/2039		22/03/2041		02/05/2042		11/06/2044		11/07/2048	
22/03/2041		02/05/2042		11/06/2044		11/07/2048		10/09/2049	
बुध	19/08/2039	शनि	29/04/2041	गुरु	14/09/2042	शुक्र	28/03/2045	सूर्य	04/08/2048
शनि	22/10/2039	गुरु	09/07/2041	राहु	09/12/2042	सूर्य	19/06/2045	चंद्र	02/10/2048
गुरु	20/02/2040	राहु	23/08/2041	शुक्र	08/05/2043	चंद्र	12/01/2046	मंगल	03/11/2048
राहु	07/05/2040	शुक्र	10/11/2041	सूर्य	20/06/2043	मंगल	02/05/2046	बुध	09/01/2049
शुक्र	18/09/2040	सूर्य	03/12/2041	चंद्र	05/10/2043	बुध	23/12/2046	शनि	17/02/2049
सूर्य	26/10/2040	चंद्र	28/01/2042	मंगल	01/12/2043	शनि	10/05/2047	गुरु	03/05/2049
चंद्र	30/01/2041	मंगल	27/02/2042	बुध	01/04/2044	गुरु	28/01/2048	राहु	20/06/2049
मंगल	22/03/2041	बुध	02/05/2042	शनि	11/06/2044	राहु	11/07/2048	शुक्र	10/09/2049

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु	
10/09/2049		11/08/2052		02/03/2054		21/06/2057		02/06/2059	
11/08/2052		02/03/2054		21/06/2057		02/06/2059		10/02/2063	
चंद्र	05/02/2050	मंगल	22/09/2052	बुध	08/09/2054	शनि	26/08/2057	गुरु	25/01/2060
मंगल	25/04/2050	बुध	20/12/2052	शनि	29/12/2054	गुरु	29/12/2057	राहु	23/06/2060
बुध	10/10/2050	शनि	11/02/2053	गुरु	29/07/2055	राहु	18/03/2058	शुक्र	12/03/2061
शनि	17/01/2051	गुरु	22/05/2053	राहु	10/12/2055	शुक्र	03/08/2058	सूर्य	26/05/2061
गुरु	23/07/2051	राहु	24/07/2053	शुक्र	01/08/2056	सूर्य	11/09/2058	चंद्र	30/11/2061
राहु	18/11/2051	शुक्र	11/11/2053	सूर्य	07/10/2056	चंद्र	19/12/2058	मंगल	10/03/2062
शुक्र	13/06/2052	सूर्य	13/12/2053	चंद्र	24/03/2057	मंगल	10/02/2059	बुध	08/10/2062
सूर्य	11/08/2052	चंद्र	02/03/2054	मंगल	21/06/2057	बुध	02/06/2059	शनि	10/02/2063

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
10/02/2063		11/06/2065		11/10/2065		11/08/2066		21/01/2067	
11/06/2065		11/10/2065		11/08/2066		21/01/2067		01/01/2068	
राहु	16/05/2063	सूर्य	18/06/2065	चंद्र	22/11/2065	मंगल	23/08/2066	बुध	16/03/2067
शुक्र	28/10/2063	चंद्र	05/07/2065	मंगल	15/12/2065	बुध	18/09/2066	शनि	17/04/2067
सूर्य	15/12/2063	मंगल	14/07/2065	बुध	01/02/2066	शनि	03/10/2066	गुरु	17/06/2067
चंद्र	11/04/2064	बुध	02/08/2065	शनि	01/03/2066	गुरु	31/10/2066	राहु	25/07/2067
मंगल	13/06/2064	शनि	13/08/2065	गुरु	23/04/2066	राहु	18/11/2066	शुक्र	30/09/2067
बुध	25/10/2064	गुरु	04/09/2065	राहु	27/05/2066	शुक्र	20/12/2066	सूर्य	19/10/2067
शनि	12/01/2065	राहु	17/09/2065	शुक्र	25/07/2066	सूर्य	29/12/2066	चंद्र	06/12/2067
गुरु	11/06/2065	शुक्र	11/10/2065	सूर्य	11/08/2066	चंद्र	21/01/2067	मंगल	01/01/2068

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भ्रामरी 1 वर्ष 11 मास 18 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
08/05/1965		26/04/1967		25/04/1972		26/04/1978		26/04/1985	
26/04/1967		25/04/1972		26/04/1978		26/04/1985		26/04/1993	
	00/00/0000	भद्रि	05/01/1968	उल्क	26/04/1973	सिद्ध	05/09/1979	संक	04/02/1987
	00/00/0000	उल्क	04/11/1968	सिद्ध	26/06/1974	संक	26/03/1981	मंग	26/04/1987
	08/05/1965	सिद्ध	25/10/1969	संक	26/10/1975	मंग	05/06/1981	पिंग	06/10/1987
सिद्ध	05/10/1965	संक	05/12/1970	मंग	26/12/1975	पिंग	25/10/1981	धांय	05/06/1988
संक	26/08/1966	मंग	25/01/1971	पिंग	25/04/1976	धांय	26/05/1982	भ्राम	26/04/1989
मंग	05/10/1966	पिंग	06/05/1971	धांय	25/10/1976	भ्राम	07/03/1983	भद्रि	06/06/1990
पिंग	25/12/1966	धांय	06/10/1971	भ्राम	26/06/1977	भद्रि	25/02/1984	उल्क	06/10/1991
धांय	26/04/1967	भ्राम	25/04/1972	भद्रि	26/04/1978	उल्क	26/04/1985	सिद्ध	26/04/1993

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
26/04/1993		26/04/1994		25/04/1996		26/04/1999		26/04/2003	
26/04/1994		25/04/1996		26/04/1999		26/04/2003		25/04/2008	
मंग	06/05/1993	पिंग	06/06/1994	धांय	26/07/1996	भ्राम	06/10/1999	भद्रि	05/01/2004
पिंग	26/05/1993	धांय	05/08/1994	भ्राम	25/11/1996	भद्रि	25/04/2000	उल्क	04/11/2004
धांय	26/06/1993	भ्राम	26/10/1994	भद्रि	26/04/1997	उल्क	25/12/2000	सिद्ध	25/10/2005
भ्राम	05/08/1993	भद्रि	04/02/1995	उल्क	25/10/1997	सिद्ध	05/10/2001	संक	05/12/2006
भद्रि	25/09/1993	उल्क	06/06/1995	सिद्ध	26/05/1998	संक	26/08/2002	मंग	25/01/2007
उल्क	25/11/1993	सिद्ध	26/10/1995	संक	25/01/1999	मंग	05/10/2002	पिंग	06/05/2007
सिद्ध	04/02/1994	संक	05/04/1996	मंग	24/02/1999	पिंग	25/12/2002	धांय	06/10/2007
संक	26/04/1994	मंग	25/04/1996	पिंग	26/04/1999	धांय	26/04/2003	भ्राम	25/04/2008

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
25/04/2008		26/04/2014		26/04/2021		26/04/2029		26/04/2030	
26/04/2014		26/04/2021		26/04/2029		26/04/2030		25/04/2032	
उल्क	26/04/2009	सिद्ध	05/09/2015	संक	04/02/2023	मंग	06/05/2029	पिंग	06/06/2030
सिद्ध	26/06/2010	संक	26/03/2017	मंग	26/04/2023	पिंग	26/05/2029	धांय	05/08/2030
संक	26/10/2011	मंग	05/06/2017	पिंग	06/10/2023	धांय	26/06/2029	भ्राम	26/10/2030
मंग	26/12/2011	पिंग	25/10/2017	धांय	05/06/2024	भ्राम	05/08/2029	भद्रि	04/02/2031
पिंग	25/04/2012	धांय	26/05/2018	भ्राम	26/04/2025	भद्रि	25/09/2029	उल्क	06/06/2031
धांय	25/10/2012	भ्राम	07/03/2019	भद्रि	06/06/2026	उल्क	25/11/2029	सिद्ध	26/10/2031
भ्राम	26/06/2013	भद्रि	25/02/2020	उल्क	06/10/2027	सिद्ध	04/02/2030	संक	05/04/2032
भद्रि	26/04/2014	उल्क	26/04/2021	सिद्ध	26/04/2029	संक	26/04/2030	मंग	25/04/2032

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
25/04/2032		26/04/2035		26/04/2039		25/04/2044		26/04/2050	
26/04/2035		26/04/2039		25/04/2044		26/04/2050		26/04/2057	
धांय	26/07/2032	भ्राम	06/10/2035	भद्रि	05/01/2040	उल्क	26/04/2045	सिद्ध	05/09/2051
भ्राम	25/11/2032	भद्रि	25/04/2036	उल्क	04/11/2040	सिद्ध	26/06/2046	संक	26/03/2053
भद्रि	26/04/2033	उल्क	25/12/2036	सिद्ध	25/10/2041	संक	26/10/2047	मंग	05/06/2053
उल्क	25/10/2033	सिद्ध	05/10/2037	संक	05/12/2042	मंग	26/12/2047	पिंग	25/10/2053
सिद्ध	26/05/2034	संक	26/08/2038	मंग	25/01/2043	पिंग	25/04/2048	धांय	26/05/2054
संक	25/01/2035	मंग	05/10/2038	पिंग	06/05/2043	धांय	25/10/2048	भ्राम	07/03/2055
मंग	24/02/2035	पिंग	25/12/2038	धांय	06/10/2043	भ्राम	26/06/2049	भद्रि	25/02/2056
पिंग	26/04/2035	धांय	26/04/2039	भ्राम	25/04/2044	भद्रि	26/04/2050	उल्क	26/04/2057

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
26/04/2057		26/04/2065		26/04/2066		25/04/2068		26/04/2071	
26/04/2065		26/04/2066		25/04/2068		26/04/2071		00/00/0000	
संक	04/02/2059	मंग	06/05/2065	पिंग	06/06/2066	धांय	26/07/2068	भ्राम	06/10/2071
मंग	26/04/2059	पिंग	26/05/2065	धांय	05/08/2066	भ्राम	25/11/2068	भद्रि	25/04/2072
पिंग	06/10/2059	धांय	26/06/2065	भ्राम	26/10/2066	भद्रि	26/04/2069	उल्क	25/12/2072
धांय	05/06/2060	भ्राम	05/08/2065	भद्रि	04/02/2067	उल्क	25/10/2069	सिद्ध	08/05/2073
भ्राम	26/04/2061	भद्रि	25/09/2065	उल्क	06/06/2067	सिद्ध	26/05/2070		00/00/0000
भद्रि	06/06/2062	उल्क	25/11/2065	सिद्ध	26/10/2067	संक	25/01/2071		00/00/0000
उल्क	06/10/2063	सिद्ध	04/02/2066	संक	05/04/2068	मंग	24/02/2071		00/00/0000
सिद्ध	26/04/2065	संक	26/04/2066	मंग	25/04/2068	पिंग	26/04/2071		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - भद्रि	संक - उल्क	संक - सिद्ध	मंग - मंग	मंग - पिंग
26/04/2025	06/06/2026	06/10/2027	26/04/2029	06/05/2029
06/06/2026	06/10/2027	26/04/2029	06/05/2029	26/05/2029
भद्रि 21/06/2025	उल्क 26/08/2026	सिद्ध 24/01/2028	मंग 26/04/2029	पिंग 07/05/2029
उल्क 28/08/2025	सिद्ध 28/11/2026	संक 29/05/2028	पिंग 27/04/2029	धांय 09/05/2029
सिद्ध 15/11/2025	संक 17/03/2027	मंग 14/06/2028	धांय 27/04/2029	भ्राम 11/05/2029
संक 13/02/2026	मंग 30/03/2027	पिंग 16/07/2028	भ्राम 29/04/2029	भद्रि 14/05/2029
मंग 24/02/2026	पिंग 26/04/2027	धांय 01/09/2028	भद्रि 30/04/2029	उल्क 17/05/2029
पिंग 19/03/2026	धांय 06/06/2027	भ्राम 03/11/2028	उल्क 02/05/2029	सिद्ध 21/05/2029
धांय 21/04/2026	भ्राम 30/07/2027	भद्रि 21/01/2029	सिद्ध 04/05/2029	संक 26/05/2029
भ्राम 06/06/2026	भद्रि 06/10/2027	उल्क 26/04/2029	संक 06/05/2029	मंग 26/05/2029

मंग - धांय	मंग - भ्राम	मंग - भद्रि	मंग - उल्क	मंग - सिद्ध
26/05/2029	26/06/2029	05/08/2029	25/09/2029	25/11/2029
26/06/2029	05/08/2029	25/09/2029	25/11/2029	04/02/2030
धांय 29/05/2029	भ्राम 30/06/2029	भद्रि 12/08/2029	उल्क 05/10/2029	सिद्ध 09/12/2029
भ्राम 01/06/2029	भद्रि 06/07/2029	उल्क 21/08/2029	सिद्ध 17/10/2029	संक 24/12/2029
भद्रि 05/06/2029	उल्क 13/07/2029	सिद्ध 31/08/2029	संक 30/10/2029	मंग 26/12/2029
उल्क 10/06/2029	सिद्ध 20/07/2029	संक 11/09/2029	मंग 01/11/2029	पिंग 30/12/2029
सिद्ध 16/06/2029	संक 29/07/2029	मंग 12/09/2029	पिंग 05/11/2029	धांय 05/01/2030
संक 23/06/2029	मंग 31/07/2029	पिंग 15/09/2029	धांय 10/11/2029	भ्राम 13/01/2030
मंग 24/06/2029	पिंग 02/08/2029	धांय 19/09/2029	भ्राम 16/11/2029	भद्रि 23/01/2030
पिंग 26/06/2029	धांय 05/08/2029	भ्राम 25/09/2029	भद्रि 25/11/2029	उल्क 04/02/2030

मंग - संक	पिंग - पिंग	पिंग - धांय	पिंग - भ्राम	पिंग - भद्रि
04/02/2030	26/04/2030	06/06/2030	05/08/2030	26/10/2030
26/04/2030	06/06/2030	05/08/2030	26/10/2030	04/02/2031
संक 22/02/2030	पिंग 28/04/2030	धांय 11/06/2030	भ्राम 14/08/2030	भद्रि 09/11/2030
मंग 24/02/2030	धांय 02/05/2030	भ्राम 17/06/2030	भद्रि 26/08/2030	उल्क 26/11/2030
पिंग 01/03/2030	भ्राम 06/05/2030	भद्रि 26/06/2030	उल्क 08/09/2030	सिद्ध 15/12/2030
धांय 07/03/2030	भद्रि 12/05/2030	उल्क 06/07/2030	सिद्ध 24/09/2030	संक 07/01/2031
भ्राम 16/03/2030	उल्क 19/05/2030	सिद्ध 18/07/2030	संक 12/10/2030	मंग 10/01/2031
भद्रि 28/03/2030	सिद्ध 26/05/2030	संक 31/07/2030	मंग 14/10/2030	पिंग 15/01/2031
उल्क 10/04/2030	संक 04/06/2030	मंग 02/08/2030	पिंग 19/10/2030	धांय 24/01/2031
सिद्ध 26/04/2030	मंग 06/06/2030	पिंग 05/08/2030	धांय 26/10/2030	भ्राम 04/02/2031

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - उल्क	पिंग - सिद्ध	पिंग - संक	पिंग - मंग	धांय - धांय
04/02/2031	06/06/2031	26/10/2031	05/04/2032	25/04/2032
06/06/2031	26/10/2031	05/04/2032	25/04/2032	26/07/2032
उल्क 24/02/2031	सिद्ध 03/07/2031	संक 01/12/2031	मंग 06/04/2032	धांय 03/05/2032
सिद्ध 20/03/2031	संक 04/08/2031	मंग 05/12/2031	पिंग 07/04/2032	भ्राम 13/05/2032
संक 16/04/2031	मंग 08/08/2031	पिंग 14/12/2031	धांय 09/04/2032	भद्रि 26/05/2032
मंग 19/04/2031	पिंग 16/08/2031	धांय 28/12/2031	भ्राम 11/04/2032	उल्क 10/06/2032
पिंग 26/04/2031	धांय 28/08/2031	भ्राम 15/01/2032	भद्रि 14/04/2032	सिद्ध 28/06/2032
धांय 06/05/2031	भ्राम 12/09/2031	भद्रि 07/02/2032	उल्क 17/04/2032	संक 18/07/2032
भ्राम 20/05/2031	भद्रि 02/10/2031	उल्क 05/03/2032	सिद्ध 21/04/2032	मंग 21/07/2032
भद्रि 06/06/2031	उल्क 26/10/2031	सिद्ध 05/04/2032	संक 25/04/2032	पिंग 26/07/2032

धांय - भ्राम	धांय - भद्रि	धांय - उल्क	धांय - सिद्ध	धांय - संक
26/07/2032	25/11/2032	26/04/2033	25/10/2033	26/05/2034
25/11/2032	26/04/2033	25/10/2033	26/05/2034	25/01/2035
भ्राम 08/08/2032	भद्रि 16/12/2032	उल्क 26/05/2033	सिद्ध 06/12/2033	संक 20/07/2034
भद्रि 25/08/2032	उल्क 10/01/2033	सिद्ध 01/07/2033	संक 22/01/2034	मंग 26/07/2034
उल्क 15/09/2032	सिद्ध 09/02/2033	संक 10/08/2033	मंग 28/01/2034	पिंग 09/08/2034
सिद्ध 08/10/2032	संक 14/03/2033	मंग 15/08/2033	पिंग 09/02/2034	धांय 29/08/2034
संक 04/11/2032	मंग 19/03/2033	पिंग 25/08/2033	धांय 27/02/2034	भ्राम 25/09/2034
मंग 08/11/2032	पिंग 27/03/2033	धांय 10/09/2033	भ्राम 22/03/2034	भद्रि 29/10/2034
पिंग 14/11/2032	धांय 09/04/2033	भ्राम 30/09/2033	भद्रि 21/04/2034	उल्क 09/12/2034
धांय 25/11/2032	भ्राम 26/04/2033	भद्रि 25/10/2033	उल्क 26/05/2034	सिद्ध 25/01/2035

धांय - मंग	धांय - पिंग	भ्राम - भ्राम	भ्राम - भद्रि	भ्राम - उल्क
25/01/2035	24/02/2035	26/04/2035	06/10/2035	25/04/2036
24/02/2035	26/04/2035	06/10/2035	25/04/2036	25/12/2036
मंग 26/01/2035	पिंग 28/02/2035	भ्राम 14/05/2035	भद्रि 03/11/2035	उल्क 05/06/2036
पिंग 27/01/2035	धांय 05/03/2035	भद्रि 06/06/2035	उल्क 07/12/2035	सिद्ध 22/07/2036
धांय 30/01/2035	भ्राम 12/03/2035	उल्क 03/07/2035	सिद्ध 15/01/2036	संक 15/09/2036
भ्राम 02/02/2035	भद्रि 20/03/2035	सिद्ध 03/08/2035	संक 29/02/2036	मंग 21/09/2036
भद्रि 07/02/2035	उल्क 30/03/2035	संक 09/09/2035	मंग 06/03/2036	पिंग 05/10/2036
उल्क 12/02/2035	सिद्ध 11/04/2035	मंग 13/09/2035	पिंग 17/03/2036	धांय 25/10/2036
सिद्ध 18/02/2035	संक 25/04/2035	पिंग 22/09/2035	धांय 03/04/2036	भ्राम 21/11/2036
संक 24/02/2035	मंग 26/04/2035	धांय 06/10/2035	भ्राम 25/04/2036	भद्रि 25/12/2036

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृष 13 वर्ष 2 मास 21 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : आश्लेषा - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
08/05/1965		29/07/1978		29/07/1985		30/07/1995		30/07/1999	
29/07/1978		29/07/1985		30/07/1995		30/07/1999		30/07/2003	
वृष	29/08/1965	मेष	02/03/1979	मीन	12/10/1986	कुंभ	08/10/1995	मक	08/10/1999
मेष	04/01/1967	मीन	04/01/1980	कुंभ	06/04/1987	मक	17/12/1995	धनु	01/04/2000
मीन	08/12/1968	कुंभ	06/05/1980	मक	29/09/1987	धनु	10/06/1996	मेष	02/08/2000
कुंभ	16/09/1969	मक	07/09/1980	धनु	12/12/1988	मेष	12/10/1996	वृष	11/05/2001
मक	24/06/1970	धनु	12/07/1981	मेष	16/10/1989	वृष	20/07/1997	मिथु	16/10/2001
धनु	28/05/1972	मेष	12/02/1982	वृष	20/09/1991	मिथु	26/12/1997	वृष	25/07/2002
मेष	03/10/1973	वृष	20/06/1983	मिथु	21/10/1992	वृष	03/10/1998	मेष	25/11/2002
वृष	03/11/1976	मिथु	23/03/1984	वृष	25/09/1994	मेष	04/02/1999	मीन	20/05/2003
मिथु	29/07/1978	वृष	29/07/1985	मेष	30/07/1995	मीन	30/07/1999	कुंभ	30/07/2003

धनु 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष	
30/07/2003		29/07/2013		29/07/2020		29/07/2036		29/07/2045	
29/07/2013		29/07/2020		29/07/2036		29/07/2045		00/00/0000	
धनु	12/10/2004	मेष	02/03/2014	वृष	29/08/2023	मिथु	20/07/2037	वृष	08/05/2048
मेष	16/08/2005	वृष	08/07/2015	मिथु	24/05/2025	वृष	15/04/2039		00/00/0000
वृष	21/07/2007	मिथु	10/04/2016	वृष	24/06/2028	मेष	17/01/2040		00/00/0000
मिथु	20/08/2008	वृष	16/08/2017	मेष	30/10/2029	मीन	16/02/2041		00/00/0000
वृष	25/07/2010	मेष	19/03/2018	मीन	04/10/2031	कुंभ	25/07/2041		00/00/0000
मेष	29/05/2011	मीन	21/01/2019	कुंभ	11/07/2032	मक	30/12/2041		00/00/0000
मीन	11/08/2012	कुंभ	25/05/2019	मक	19/04/2033	धनु	30/01/2043		00/00/0000
कुंभ	03/02/2013	मक	25/09/2019	धनु	24/03/2035	मेष	03/11/2043		00/00/0000
मक	29/07/2013	धनु	29/07/2020	मेष	29/07/2036	वृष	29/07/2045		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - वृष		वृष - मेष		वृष - मीन		वृष - कुंभ		वृष - मक	
24/05/2025		24/06/2028		30/10/2029		04/10/2031		11/07/2032	
24/06/2028		30/10/2029		04/10/2031		11/07/2032		19/04/2033	
वृष	27/12/2025	मेष	04/08/2028	मीन	22/01/2030	कुंभ	17/10/2031	मक	25/07/2032
मेष	01/04/2026	मीन	03/10/2028	कुंभ	25/02/2030	मक	31/10/2031	धनु	28/08/2032
मीन	15/08/2026	कुंभ	26/10/2028	मक	31/03/2030	धनु	04/12/2031	मेष	21/09/2032
कुंभ	08/10/2026	मक	19/11/2028	धनु	24/06/2030	मेष	27/12/2031	वृष	14/11/2032
मक	02/12/2026	धनु	18/01/2029	मेष	22/08/2030	वृष	20/02/2032	मिथु	14/12/2032
धनु	16/04/2027	मेष	28/02/2029	वृष	05/01/2031	मिथु	21/03/2032	वृष	07/02/2033
मेष	20/07/2027	वृष	03/06/2029	मिथु	23/03/2031	वृष	15/05/2032	मेष	02/03/2033
वृष	23/02/2028	मिथु	27/07/2029	वृष	05/08/2031	मेष	07/06/2032	मीन	05/04/2033
मिथु	24/06/2028	वृष	30/10/2029	मेष	04/10/2031	मीन	11/07/2032	कुंभ	19/04/2033

वृष - धनु		वृष - मेष		मिथु - मिथु		मिथु - वृष		मिथु - मेष	
19/04/2033		24/03/2035		29/07/2036		20/07/2037		15/04/2039	
24/03/2035		29/07/2036		20/07/2037		15/04/2039		17/01/2040	
धनु	13/07/2033	मेष	05/05/2035	मिथु	06/09/2036	वृष	20/11/2037	मेष	08/05/2039
मेष	10/09/2033	वृष	08/08/2035	वृष	13/11/2036	मेष	12/01/2038	मीन	11/06/2039
वृष	24/01/2034	मिथु	30/09/2035	मेष	13/12/2036	मीन	29/03/2038	कुंभ	24/06/2039
मिथु	10/04/2034	वृष	03/01/2036	मीन	25/01/2037	कुंभ	29/04/2038	मक	08/07/2039
वृष	24/08/2034	मेष	14/02/2036	कुंभ	11/02/2037	मक	29/05/2038	धनु	10/08/2039
मेष	22/10/2034	मीन	13/04/2036	मक	01/03/2037	धनु	14/08/2038	मेष	02/09/2039
मीन	15/01/2035	कुंभ	07/05/2036	धनु	13/04/2037	मेष	06/10/2038	वृष	26/10/2039
कुंभ	18/02/2035	मक	31/05/2036	मेष	13/05/2037	वृष	05/02/2039	मिथु	25/11/2039
मक	24/03/2035	धनु	29/07/2036	वृष	20/07/2037	मिथु	15/04/2039	वृष	17/01/2040

मिथु - मीन		मिथु - कुंभ		मिथु - मक		मिथु - धनु		मिथु - मेष	
17/01/2040		16/02/2041		25/07/2041		30/12/2041		30/01/2043	
16/02/2041		25/07/2041		30/12/2041		30/01/2043		03/11/2043	
मीन	05/03/2040	कुंभ	24/02/2041	मक	01/08/2041	धनु	16/02/2042	मेष	23/02/2043
कुंभ	24/03/2040	मक	04/03/2041	धनु	20/08/2041	मेष	21/03/2042	वृष	17/04/2043
मक	12/04/2040	धनु	23/03/2041	मेष	03/09/2041	वृष	06/06/2042	मिथु	17/05/2043
धनु	30/05/2040	मेष	05/04/2041	वृष	03/10/2041	मिथु	19/07/2042	वृष	10/07/2043
मेष	02/07/2040	वृष	06/05/2041	मिथु	21/10/2041	वृष	03/10/2042	मेष	02/08/2043
वृष	17/09/2040	मिथु	23/05/2041	वृष	20/11/2041	मेष	05/11/2042	मीन	04/09/2043
मिथु	30/10/2040	वृष	22/06/2041	मेष	03/12/2041	मीन	23/12/2042	कुंभ	18/09/2043
वृष	14/01/2041	मेष	06/07/2041	मीन	23/12/2041	कुंभ	11/01/2043	मक	01/10/2043
मेष	16/02/2041	मीन	25/07/2041	कुंभ	30/12/2041	मक	30/01/2043	धनु	03/11/2043

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - वृष	
03/11/2043	
29/07/2045	
वृष	05/03/2044
मिथु	12/05/2044
वृष	11/09/2044
मेष	04/11/2044
मीन	19/01/2045
कुंभ	19/02/2045
मक	21/03/2045
धनु	06/06/2045
मेष	29/07/2045

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

वृष - वृष	
29/07/2045	
08/05/2048	
वृष	03/03/2046
मेष	06/06/2046
मीन	20/10/2046
कुंभ	13/12/2046
मक	06/02/2047
धनु	21/06/2047
मेष	24/09/2047
वृष	29/04/2048
मिथु	08/05/2048

चर दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 12 वर्ष 0 मास 0 दिन

कर्क 12 वर्ष	
08/05/1965	
08/05/1977	
मिथु	08/05/1966
वृष	08/05/1967
मेष	08/05/1968
मीन	08/05/1969
कुंभ	08/05/1970
मक	08/05/1971
धनु	08/05/1972
वृश्चि	08/05/1973
तुला	08/05/1974
कन्या	08/05/1975
सिंह	08/05/1976
कर्क	08/05/1977

मिथुन 9 वर्ष	
08/05/1977	
08/05/1986	
वृष	06/02/1978
मेष	07/11/1978
मीन	08/08/1979
कुंभ	08/05/1980
मक	06/02/1981
धनु	07/11/1981
वृश्चि	08/08/1982
तुला	08/05/1983
कन्या	06/02/1984
सिंह	06/11/1984
कर्क	07/08/1985
मिथु	08/05/1986

वृष 12 वर्ष	
08/05/1986	
08/05/1998	
मेष	08/05/1987
मीन	08/05/1988
कुंभ	08/05/1989
मक	08/05/1990
धनु	08/05/1991
वृश्चि	08/05/1992
तुला	08/05/1993
कन्या	08/05/1994
सिंह	08/05/1995
कर्क	08/05/1996
मिथु	08/05/1997
वृष	08/05/1998

मेष 4 वर्ष	
08/05/1998	
08/05/2002	
वृष	07/09/1998
मिथु	07/01/1999
कर्क	08/05/1999
सिंह	07/09/1999
कन्या	07/01/2000
तुला	08/05/2000
वृश्चि	06/09/2000
धनु	06/01/2001
मक	08/05/2001
कुंभ	07/09/2001
मीन	06/01/2002
मेष	08/05/2002

मीन 10 वर्ष	
08/05/2002	
08/05/2012	
मेष	09/03/2003
वृष	07/01/2004
मिथु	06/11/2004
कर्क	07/09/2005
सिंह	08/07/2006
कन्या	08/05/2007
तुला	08/03/2008
वृश्चि	06/01/2009
धनु	07/11/2009
मक	07/09/2010
कुंभ	08/07/2011
मीन	08/05/2012

कुम्भ 9 वर्ष	
08/05/2012	
08/05/2021	
मीन	06/02/2013
मेष	07/11/2013
वृष	08/08/2014
मिथु	08/05/2015
कर्क	06/02/2016
सिंह	06/11/2016
कन्या	07/08/2017
तुला	08/05/2018
वृश्चि	06/02/2019
धनु	07/11/2019
मक	07/08/2020
कुंभ	08/05/2021

मकर 11 वर्ष	
08/05/2021	
08/05/2032	
धनु	08/04/2022
वृश्चि	09/03/2023
तुला	06/02/2024
कन्या	06/01/2025
सिंह	07/12/2025
कर्क	07/11/2026
मिथु	08/10/2027
वृष	06/09/2028
मेष	07/08/2029
मीन	08/07/2030
कुंभ	08/06/2031
मक	08/05/2032

धनु 5 वर्ष	
08/05/2032	
08/05/2037	
वृश्चि	07/10/2032
तुला	08/03/2033
कन्या	07/08/2033
सिंह	06/01/2034
कर्क	08/06/2034
मिथु	07/11/2034
वृष	08/04/2035
मेष	07/09/2035
मीन	06/02/2036
कुंभ	08/07/2036
मक	07/12/2036
धनु	08/05/2037

वृश्चिक 9 वर्ष	
08/05/2037	
08/05/2046	
तुला	06/02/2038
कन्या	07/11/2038
सिंह	08/08/2039
कर्क	08/05/2040
मिथु	06/02/2041
वृष	07/11/2041
मेष	08/08/2042
मीन	08/05/2043
कुंभ	06/02/2044
मक	06/11/2044
धनु	07/08/2045
वृश्चि	08/05/2046

तुला 7 वर्ष	
08/05/2046	
08/05/2053	
वृश्चि	07/12/2046
धनु	08/07/2047
मक	06/02/2048
कुंभ	06/09/2048
मीन	08/04/2049
मेष	07/11/2049
वृष	08/06/2050
मिथु	07/01/2051
कर्क	08/08/2051
सिंह	08/03/2052
कन्या	07/10/2052
तुला	08/05/2053

कन्या 6 वर्ष	
08/05/2053	
08/05/2059	
तुला	07/11/2053
वृश्चि	08/05/2054
धनु	07/11/2054
मक	08/05/2055
कुंभ	07/11/2055
मीन	08/05/2056
मेष	06/11/2056
वृष	08/05/2057
मिथु	07/11/2057
कर्क	08/05/2058
सिंह	07/11/2058
कन्या	08/05/2059

सिंह 4 वर्ष	
08/05/2059	
08/05/2063	
कन्या	07/09/2059
तुला	07/01/2060
वृश्चि	08/05/2060
धनु	06/09/2060
मक	06/01/2061
कुंभ	08/05/2061
मीन	07/09/2061
मेष	06/01/2062
वृष	08/05/2062
मिथु	07/09/2062
कर्क	07/01/2063
सिंह	08/05/2063

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मक - सिंह		मक - कर्क		मक - मिथु		मक - वृष		मक - मेष	
06/01/2025		07/12/2025		07/11/2026		08/10/2027		06/09/2028	
07/12/2025		07/11/2026		08/10/2027		06/09/2028		07/08/2029	
कन्या	03/02/2025	मिथु	04/01/2026	वृष	05/12/2026	मेष	05/11/2027	वृष	04/10/2028
तुला	03/03/2025	वृष	01/02/2026	मेष	02/01/2027	मीन	02/12/2027	मिथु	01/11/2028
वृश्चि	31/03/2025	मेष	01/03/2026	मीन	30/01/2027	कुंभ	30/12/2027	कर्क	29/11/2028
धनु	28/04/2025	मीन	29/03/2026	कुंभ	26/02/2027	मक	27/01/2028	सिंह	27/12/2028
मक	26/05/2025	कुंभ	26/04/2026	मक	26/03/2027	धनु	24/02/2028	कन्या	24/01/2029
कुंभ	23/06/2025	मक	23/05/2026	धनु	23/04/2027	वृश्चि	23/03/2028	तुला	21/02/2029
मीन	21/07/2025	धनु	20/06/2026	वृश्चि	21/05/2027	तुला	20/04/2028	वृश्चि	21/03/2029
मेष	17/08/2025	वृश्चि	18/07/2026	तुला	18/06/2027	कन्या	18/05/2028	धनु	18/04/2029
वृष	14/09/2025	तुला	15/08/2026	कन्या	16/07/2027	सिंह	15/06/2028	मक	16/05/2029
मिथु	12/10/2025	कन्या	12/09/2026	सिंह	13/08/2027	कर्क	13/07/2028	कुंभ	12/06/2029
कर्क	09/11/2025	सिंह	10/10/2026	कर्क	10/09/2027	मिथु	10/08/2028	मीन	10/07/2029
सिंह	07/12/2025	कर्क	07/11/2026	मिथु	08/10/2027	वृष	06/09/2028	मेष	07/08/2029

मक - मीन		मक - कुंभ		मक - मक		धनु - वृश्चि		धनु - तुला	
07/08/2029		08/07/2030		08/06/2031		08/05/2032		07/10/2032	
08/07/2030		08/06/2031		08/05/2032		07/10/2032		08/03/2033	
मेष	04/09/2029	मीन	05/08/2030	धनु	06/07/2031	तुला	20/05/2032	वृश्चि	20/10/2032
वृष	02/10/2029	मेष	02/09/2030	वृश्चि	03/08/2031	कन्या	02/06/2032	धनु	01/11/2032
मिथु	30/10/2029	वृष	30/09/2030	तुला	31/08/2031	सिंह	15/06/2032	मक	14/11/2032
कर्क	27/11/2029	मिथु	28/10/2030	कन्या	27/09/2031	कर्क	27/06/2032	कुंभ	27/11/2032
सिंह	25/12/2029	कर्क	25/11/2030	सिंह	25/10/2031	मिथु	10/07/2032	मीन	09/12/2032
कन्या	22/01/2030	सिंह	22/12/2030	कर्क	22/11/2031	वृष	23/07/2032	मेष	22/12/2032
तुला	19/02/2030	कन्या	19/01/2031	मिथु	20/12/2031	मेष	04/08/2032	वृष	04/01/2033
वृश्चि	18/03/2030	तुला	16/02/2031	वृष	17/01/2032	मीन	17/08/2032	मिथु	16/01/2033
धनु	15/04/2030	वृश्चि	16/03/2031	मेष	14/02/2032	कुंभ	30/08/2032	कर्क	29/01/2033
मक	13/05/2030	धनु	13/04/2031	मीन	13/03/2032	मक	12/09/2032	सिंह	11/02/2033
कुंभ	10/06/2030	मक	11/05/2031	कुंभ	10/04/2032	धनु	24/09/2032	कन्या	23/02/2033
मीन	08/07/2030	कुंभ	08/06/2031	मक	08/05/2032	वृश्चि	07/10/2032	तुला	08/03/2033

धनु - कन्या		धनु - सिंह		धनु - कर्क		धनु - मिथु		धनु - वृष	
08/03/2033		07/08/2033		06/01/2034		08/06/2034		07/11/2034	
07/08/2033		06/01/2034		08/06/2034		07/11/2034		08/04/2035	
तुला	21/03/2033	कन्या	20/08/2033	मिथु	19/01/2034	वृष	20/06/2034	मेष	20/11/2034
वृश्चि	02/04/2033	तुला	02/09/2033	वृष	01/02/2034	मेष	03/07/2034	मीन	02/12/2034
धनु	15/04/2033	वृश्चि	14/09/2033	मेष	13/02/2034	मीन	16/07/2034	कुंभ	15/12/2034
मक	28/04/2033	धनु	27/09/2033	मीन	26/02/2034	कुंभ	28/07/2034	मक	28/12/2034
कुंभ	10/05/2033	मक	10/10/2033	कुंभ	11/03/2034	मक	10/08/2034	धनु	09/01/2035
मीन	23/05/2033	कुंभ	22/10/2033	मक	24/03/2034	धनु	23/08/2034	वृश्चि	22/01/2035
मेष	05/06/2033	मीन	04/11/2033	धनु	05/04/2034	वृश्चि	04/09/2034	तुला	04/02/2035
वृष	18/06/2033	मेष	17/11/2033	वृश्चि	18/04/2034	तुला	17/09/2034	कन्या	16/02/2035
मिथु	30/06/2033	वृष	29/11/2033	तुला	01/05/2034	कन्या	30/09/2034	सिंह	01/03/2035
कर्क	13/07/2033	मिथु	12/12/2033	कन्या	13/05/2034	सिंह	12/10/2034	कर्क	14/03/2035
सिंह	26/07/2033	कर्क	25/12/2033	सिंह	26/05/2034	कर्क	25/10/2034	मिथु	26/03/2035
कन्या	07/08/2033	सिंह	06/01/2034	कर्क	08/06/2034	मिथु	07/11/2034	वृष	08/04/2035

चर दशा - प्रत्यन्तर

धनु - मेष		धनु - मीन		धनु - कुंभ		धनु - मक		धनु - धनु	
08/04/2035		07/09/2035		06/02/2036		08/07/2036		07/12/2036	
07/09/2035		06/02/2036		08/07/2036		07/12/2036		08/05/2037	
वृष	21/04/2035	मेष	20/09/2035	मीन	19/02/2036	धनु	20/07/2036	वृश्चि	19/12/2036
मिथु	03/05/2035	वृष	03/10/2035	मेष	03/03/2036	वृश्चि	02/08/2036	तुला	01/01/2037
कर्क	16/05/2035	मिथु	15/10/2035	वृष	15/03/2036	तुला	15/08/2036	कन्या	14/01/2037
सिंह	29/05/2035	कर्क	28/10/2035	मिथु	28/03/2036	कन्या	27/08/2036	सिंह	26/01/2037
कन्या	10/06/2035	सिंह	10/11/2035	कर्क	10/04/2036	सिंह	09/09/2036	कर्क	08/02/2037
तुला	23/06/2035	कन्या	22/11/2035	सिंह	22/04/2036	कर्क	22/09/2036	मिथु	21/02/2037
वृश्चि	06/07/2035	तुला	05/12/2035	कन्या	05/05/2036	मिथु	04/10/2036	वृष	06/03/2037
धनु	18/07/2035	वृश्चि	18/12/2035	तुला	18/05/2036	वृष	17/10/2036	मेष	18/03/2037
मक	31/07/2035	धनु	30/12/2035	वृश्चि	31/05/2036	मेष	30/10/2036	मीन	31/03/2037
कुंभ	13/08/2035	मक	12/01/2036	धनु	12/06/2036	मीन	11/11/2036	कुंभ	13/04/2037
मीन	26/08/2035	कुंभ	25/01/2036	मक	25/06/2036	कुंभ	24/11/2036	मक	25/04/2037
मेष	07/09/2035	मीन	06/02/2036	कुंभ	08/07/2036	मक	07/12/2036	धनु	08/05/2037

वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु	
08/05/2037		06/02/2038		07/11/2038		08/08/2039		08/05/2040	
06/02/2038		07/11/2038		08/08/2039		08/05/2040		06/02/2041	
वृश्चि	31/05/2037	तुला	01/03/2038	कन्या	30/11/2038	मिथु	31/08/2039	वृष	31/05/2040
धनु	23/06/2037	वृश्चि	24/03/2038	तुला	22/12/2038	वृष	22/09/2039	मेष	22/06/2040
मक	15/07/2037	धनु	15/04/2038	वृश्चि	14/01/2039	मेष	15/10/2039	मीन	15/07/2040
कुंभ	07/08/2037	मक	08/05/2038	धनु	06/02/2039	मीन	07/11/2039	कुंभ	07/08/2040
मीन	30/08/2037	कुंभ	31/05/2038	मक	01/03/2039	कुंभ	30/11/2039	मक	30/08/2040
मेष	22/09/2037	मीन	23/06/2038	कुंभ	24/03/2039	मक	23/12/2039	धनु	22/09/2040
वृष	15/10/2037	मेष	16/07/2038	मीन	16/04/2039	धनु	15/01/2040	वृश्चि	14/10/2040
मिथु	07/11/2037	वृष	08/08/2038	मेष	08/05/2039	वृश्चि	06/02/2040	तुला	06/11/2040
कर्क	29/11/2037	मिथु	30/08/2038	वृष	31/05/2039	तुला	29/02/2040	कन्या	29/11/2040
सिंह	22/12/2037	कर्क	22/09/2038	मिथु	23/06/2039	कन्या	23/03/2040	सिंह	22/12/2040
कन्या	14/01/2038	सिंह	15/10/2038	कर्क	16/07/2039	सिंह	15/04/2040	कर्क	14/01/2041
तुला	06/02/2038	कन्या	07/11/2038	सिंह	08/08/2039	कर्क	08/05/2040	मिथु	06/02/2041

वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष		वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक	
06/02/2041		07/11/2041		08/08/2042		08/05/2043		06/02/2044	
07/11/2041		08/08/2042		08/05/2043		06/02/2044		06/11/2044	
मेष	28/02/2041	वृष	29/11/2041	मेष	30/08/2042	मीन	31/05/2043	धनु	29/02/2044
मीन	23/03/2041	मिथु	22/12/2041	वृष	22/09/2042	मेष	23/06/2043	वृश्चि	23/03/2044
कुंभ	15/04/2041	कर्क	14/01/2042	मिथु	15/10/2042	वृष	16/07/2043	तुला	15/04/2044
मक	08/05/2041	सिंह	06/02/2042	कर्क	07/11/2042	मिथु	08/08/2043	कन्या	08/05/2044
धनु	31/05/2041	कन्या	01/03/2042	सिंह	30/11/2042	कर्क	31/08/2043	सिंह	31/05/2044
वृश्चि	23/06/2041	तुला	24/03/2042	कन्या	22/12/2042	सिंह	22/09/2043	कर्क	22/06/2044
तुला	15/07/2041	वृश्चि	15/04/2042	तुला	14/01/2043	कन्या	15/10/2043	मिथु	15/07/2044
कन्या	07/08/2041	धनु	08/05/2042	वृश्चि	06/02/2043	तुला	07/11/2043	वृष	07/08/2044
सिंह	30/08/2041	मक	31/05/2042	धनु	01/03/2043	वृश्चि	30/11/2043	मेष	30/08/2044
कर्क	22/09/2041	कुंभ	23/06/2042	मक	24/03/2043	धनु	23/12/2043	मीन	22/09/2044
मिथु	15/10/2041	मीन	16/07/2042	कुंभ	16/04/2043	मक	15/01/2044	कुंभ	14/10/2044
वृष	07/11/2041	मेष	08/08/2042	मीन	08/05/2043	कुंभ	06/02/2044	मक	06/11/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 2, 8, 7
शत्रु अंक	3, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	100%	स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	98%	धन, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	77%	व्यावसायिक उन्नति, धन
पुखराज	गुरु	75%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	73%	सन्तति सुख, धन
हीरा	शुक्र	65%	धनार्जन, सुख
गोमेद	राहु	64%	धनार्जन
पन्ना	बुध	12%	नेष्ट भाग्य, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

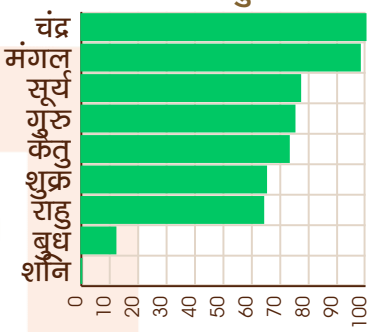

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	16/09/1973	83%	89%	98%	38%	75%	72%	0%	64%	73%
केतु	15/09/1980	64%	89%	100%	12%	75%	72%	0%	52%	86%
शुक्र	15/09/2000	64%	89%	98%	25%	75%	78%	0%	70%	80%
सूर्य	16/09/2006	89%	100%	100%	12%	81%	53%	0%	52%	61%
चंद्र	15/09/2016	83%	100%	98%	25%	75%	65%	0%	52%	61%
मंगल	16/09/2023	83%	100%	100%	0%	81%	65%	0%	52%	80%
राहु	16/09/2041	64%	89%	86%	12%	75%	72%	0%	77%	61%
गुरु	16/09/2057	83%	100%	100%	0%	88%	53%	0%	64%	73%
शनि	15/09/2076	64%	89%	86%	25%	75%	72%	0%	70%	61%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मोती, मूंगा, माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पुखराज आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा व माणिक्य रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, हीरा एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना व नीलम रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

विवरण निम्न प्रकार से है :-

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते है। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है। मंगल के शुभफल प्राप्ति के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण कर आप सहनशीलता का परिचय देंगे। वाकशक्ति का चातुर्य के साथ प्रयोग करेंगे। धन का प्रवाह तीव्र होगा। पराक्रम के कार्यो में आपकी अभिरुचि जागृत होगी। मूंगा रत्न आपके जोश और ऊर्जा शक्ति का भी विस्तार करेगा। इस रत्न को धारण करने के बाद आप जीवन की बाधाओं का साहस के साथ सामना करने लगेंगे। पहल क्षमता भी आपकी पहले से अधिक बढ़ जायेगी।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। सूर्य लग्नेश चंद्र का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। सूर्य रत्न की शुभता से आपको धन व कुटुम्ब एवं मान-सम्मान प्राप्त करा सकता है। माणिक्य के प्रभाव से आयु व दैनिक जीवन में सुख-शांति प्राप्त की जा सकती है। यह रत्न बातचीत में राजसिक प्रभाव, वाणी में आत्मविश्वास भाव दे सकता है। तथा यह रत्न आपको बैंक, रेवेन्यी, अकाउन्ट, सात्विक भोजन, कीमती धातु जैसे विषयों में शुभता दे सकता है। माणिक्य रत्न को धारण पर आप छोटे भाई- बहनों की विदेश यात्रा, कर्जा चुकाना, जेल, सजा, माता को होने वाले लाभ, मामा की यात्राएं, उच्च शिक्षा, दुर्घटना, ऋण इत्यादि में शुभता प्राप्त कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में

स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। रत्न शुभता से आप कुशाग्र और विचारवान बनेंगे। आप सत्यवक्ता बनेंगे तथा आपको सज्जन एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति प्राप्त होगी। पुखराज रत्न श्रीमान और कुलीन लोगों से आपकी मित्रता बनाएगा। रत्न की शक्तियां आपकी आशाओं और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगी। आपको अर्थलाभ और धन की प्राप्ति देगी। पुखराज रत्न से आपकी आमदनी के अनेक साधन होंगे। यह रत्न आपको पराक्रमी, पिता का सहायक और शत्रुओं को पराजित करने वाला बनाएगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते है। आपके कार्यो में जो बाधाएं आती है वो रत्न शुभता से दूर हो सकती है। छठे भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते है। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छ्ल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी मंगल दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। हीरे की शुभता आपको घर,

जमीन-जायदाद, वाहन, प्रतिष्ठा और माता के सुख प्राप्त हो सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। आय, उन्नति, सफलता के अतिरिक्त यह रत्न आपको बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी, दोस्त एवं उत्तम शुभ चिन्तक दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4

रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको अपने ज्ञान और बुद्धि पर घमण्ड करने से बचना होगा। यह रत्न आपको ज्ञान, धन और यश का अहंकार दे सकता है। पन्ना रत्न आपकी बुद्धि और तीर्थ यात्राओं में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपमें वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुणों में कमी कर सकता है। बुध रत्न पन्ना प्रभाव से आप धर्म, यज्ञ के विपरीत जाकर कोई काम कर सकते है। विभिन्न प्रकार के सुःखों में कमी हो सकती है। पन्ना रत्न आपके अपने पिता से संबंध खराब कर सकता है। सज्जनों की संगति के अवसर आपको कम मिल सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते है। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते है। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते है। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते है। रत्न

प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते है। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(16/09/2023 - 16/09/2041)

राहु की दशा में आपका मोती, मूंगा, गोमेद व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(16/09/2041 - 16/09/2057)

गुरु की दशा में आपका मोती, मूंगा, पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(16/09/2057 - 15/09/2076)

शनि की दशा में आपका मोती, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

बुध - 16/09/1973

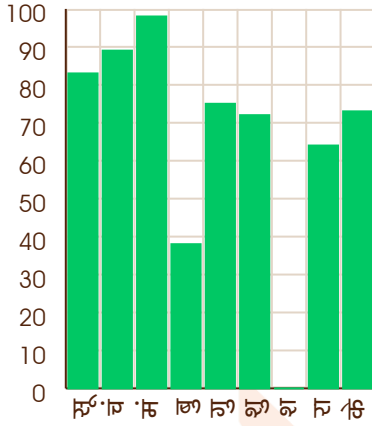

केतु - 15/09/1980

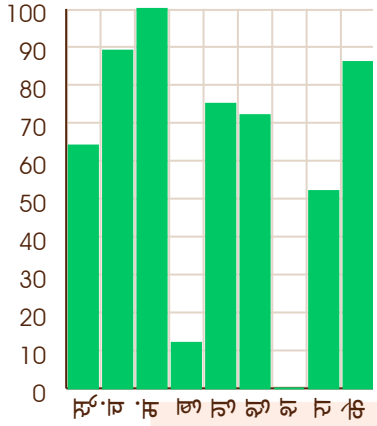

शुक्र - 15/09/2000

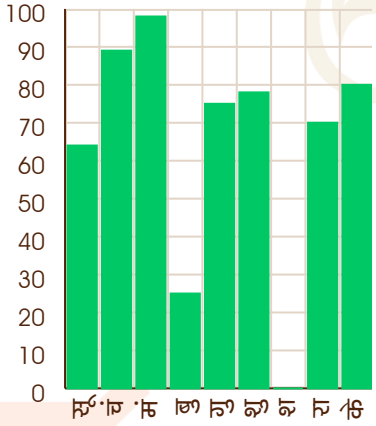

सूर्य - 16/09/2006

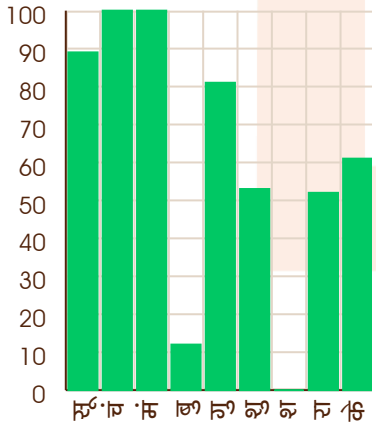

चन्द्र - 15/09/2016

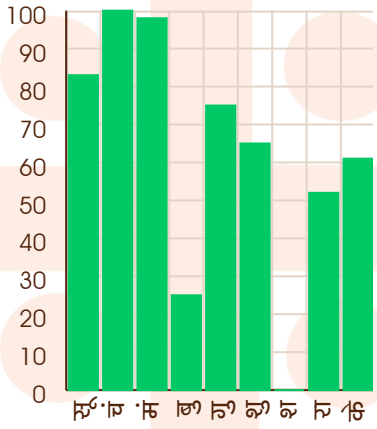

मंगल - 16/09/2023

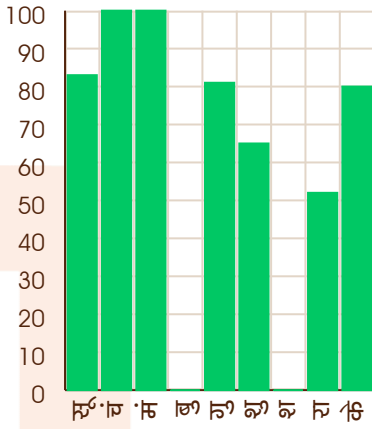

राहु - 16/09/2041

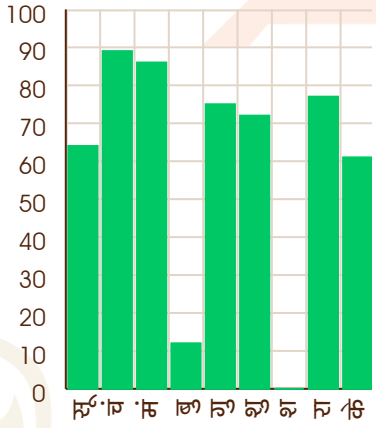

गुरु - 16/09/2057

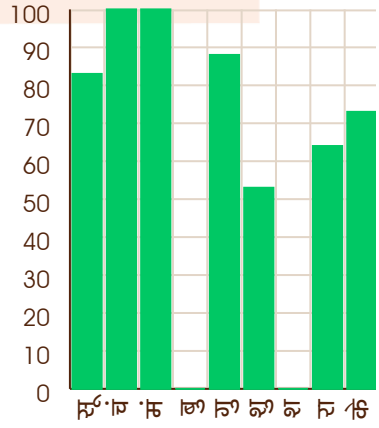

शनि - 15/09/2076

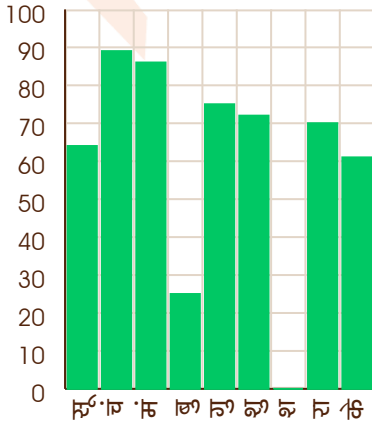

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मोती

आपका जन्म कर्क राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी चंद्रमा होता है। चंद्रमा सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कर्क राशि के लग्न वाले जातकों को कर्क राशि के स्वामी ग्रह चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मोती रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मोती रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मोती रत्न चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मोती को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

मोती को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही, सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मोती रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मोती रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

कर्क लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है,और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टो में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते है, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यहीं कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते है। जिसमें छठा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं सेकष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता हैं। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ट भाव के स्वामी या इस भाव में स्थितग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव हैं। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता हैं। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्टेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता हैं। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती हैं, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्ठम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता हैं।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध

चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/05/1965-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल, गुरु और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी

रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक आठ होने से आपका मूलांक आठ बनता है। मूलांक आठ का स्वामी शनिग्रह है। शनि के प्रभाव से आप अपने जीवन में धीरे-धीरे उन्नति प्राप्त करेंगे। व्यवधानों, कठिनाईयों से जूझते हुए सफलता प्राप्त करना आपकी प्रकृति में रहेगा। असफलताओं से आप घबडायेंगे नहीं। कभी कभी निराशा के भाव अवश्य आ जाया करेंगे। आलस्य आपका सबसे बड़ा शत्रु रहेगा और यही आलस्य आपकी असफलता का कारण रहेगा। अतः किसी भी कार्य को कल पर न टालें। जीवन में शनि ग्रह के प्रभाववश आप काफी महत्वपूर्ण कार्य करेंगे, जिससे आपको नाम, यश, कीर्ति, प्राप्त होगी। आपकी कार्यशैली को हर कोई समझ नहीं पायेगा, इससे आपके विरोधी भी उत्पन्न होंगे।

आपके अन्दर दिखावे की प्रवृत्ति कम रहेगी। इस कारण आपको कुछ लोग रूखा, शुष्क और कठोर हृदय समझेंगे। जबकि अन्दर से आप काफी भावुक एवं दयालु हृदय के होंगे। आप अधिकांश समय में अपने काम से ही मतलब रखेंगे एवं आपकी कोशिश रहेगी कि काम में ही लगे रहें। लेकिन आपके इस व्यवहार के कारण आपके आलोचक भी अधिक रहेंगे।

आपके अंन्दर त्याग की भावना अधिक रहेगी एवं श्रम में कभी पीछे नहीं हटेंगे। किसी भी कार्य में कितना भी श्रम, त्याग या बलिदान लगे आप पीछे नहीं हटेंगे। इसी कारण रुकावटों को पार करते हुये आप अपनी मंजिल अवश्य प्राप्त करेंगे। शनि प्रभावी व्यक्ति संधर्ष शील एवं परिश्रमी होते हैं एवं विध्नों को पार करते हुये उन्नति करने के कारण इनको सफलता देर से लेकिन स्थायी प्राप्त होती है।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रूझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 8 है तथा भाग्यांक 7 है। मूलांक 8 का स्वामी शनि है तथा भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून है। मूलांक 8 एवं भाग्यांक 7 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक तथा भाग्यांक के फल उचित मात्रा में प्राप्त होंगे। आपकी व्यावहारिक बुद्धि अच्छी रहेगी एवं आपके अंदर उच्च कोटि की कल्पना शक्ति निहित रहेगी, जो आपके रोजगार-व्यापार में आपको वांछित आर्थिक लाभ देती रहेगी। आप जीवन के प्रारंभिक मोड़ से ही मेहनतशील व्यक्ति रहेंगे तथा धीरे-धीरे आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। आपकी

विचारधारा एवं कार्य करने की शैली परिवर्तनशील रहेगी तथा आप जो भी रोजगार-व्यापार प्रारंभ करेंगे, उसमें समयोचित परिवर्तन अवश्य होते रहेंगे। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी दूरस्थ देशों की यात्राएं होती रहेंगी, जो जीवन पर्यंत चलती रहेंगी। कुछ यात्राएं आपके जीवन में विशेष प्रभाव उत्पन्न करेंगी और दूर-दूर के व्यक्तियों से आपके संबंध स्थापित होंगे। जीवन के प्रारंभिक काल की अपेक्षा मध्य काल से आपकी सामाजिक तथा आर्थिक पद-प्रतिष्ठा उत्तम होती चली जाएगी। समाज में आप काफी लोकप्रियता प्राप्त करेंगे तथा समय-समय पर आप को समाज द्वारा सम्मानित किया जाता रहेगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 34 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 43 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपका मूलांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 6, 7, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके जीवन में जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जून, जुलाई तथा अगस्त माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 7 एवं भाग्यांक 8 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए शुभफलदायक होंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67

6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 15, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य दिनांक 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा 14 जनवरी से 13 मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेंगे।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह में पड़ने वाले शनिवार, रविवार एवं सोमवार आपके लिए अनुकूल दिवस हैं। आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, विशिष्ट अधिकारी से संबंध आदि अपनी शुभ तारीखों में पड़ने वाले उपर्युक्त दिवसों में ही प्रारंभ करेंगे तो आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार सम्बंधी कार्य, पत्र या दस्तावेज लिखने हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। अतः आप कोशिश करें कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य उपर्युक्त तारीखों में ही संपन्न हो।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 3, 6, 12, 15, 21, 24 एवं 30, आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, व्यापार, पत्र लेखन एवं उच्च तथा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 14 जनवरी से 13 मार्च तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर के बीच हुआ हो, ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे। इनके सहयोग से आपको अच्छी उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आप अपने रोजगार, व्यवसाय या प्रेम, विवाह संबंध इत्यादि में ऐसी स्त्री का चुनाव करें, जिसका मूलांक 1, 4, 8 हो तथा उसका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके रोजगार, व्यवसाय तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेजी रंग शुभ होंगे। अपने घर के दरवाजे, पर्दे, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप करें। यदि आपका स्वास्थ्य ठीक न हो तब आप इन्हीं रंगों के कपड़े पहनें एवं रुमाल हर समय अपने पास रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य करते समय भी इन्हीं रंगों के वस्त्रों को धारण करना आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आप अपने लिए कॉम्पलेक्स, फ्लैट या मकान का चुनाव पश्चिम दिशा में करें। आपका मूलांक 8 होने से आपके लिए पश्चिम दिशा उपयुक्त रहेगी तथा भवन क्रमांक का योग 8 हो तो अच्छा रहेगा। अतः आप इस दिशा में फ्लैट या मकान खरीद सकते हैं। आप चाहें तो शहर में पश्चिम दिशा, या भवन के पश्चिम क्षेत्र में निवास करें ऐसा करना आपके लिए लाभकारी रहेगा तथा अपने आवश्यक कार्य भी इसी दिशा की ओर बैठ कर संपन्न करेंगे तो लाभ होगा।

शुभ वाहन नं

आपके मूलांक 8 के 1 और 4 मित्र हैं। अतः आप जब भी कोई नया वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण का योग इन्हीं अंकों में से एक होना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उदाहरणार्थ वाहन पंजीकरण क्रमांक 5237 = 8। आप यदि वाहन में यात्रा करते हैं तब भी आपके लिए शुभ अंक 1,4,8 ही रहेंगे और यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तब उसके लिए आपका कमरा नंबर 107 = 8 का चयन करना ही उचित रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको वायु रोग, वात रोग, शारीरिक क्षीणता, अंध रोग, हृदय की कमजोरी, रक्त की कमी, मलबद्धता, कब्जियत, गठिया, रक्तचाप, सिर की पीड़ा, कुष्ठ रोग, मूत्र के रोग, गंजापन तथा कान-नाक में पीड़ा होगी। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शनि की पूजा एवं आराधना करनी चाहिए।

व्यवसाय

कसरत, खेल-कूद, कूद-फांद, पुलिस और सैन्य विभाग, ठेकेदारी, टीन-चद्दर आदि का कार्य, कुलीगिरी, लघु उद्योग, वकालत, ज्योतिष कार्य, वैज्ञानिक कार्य, मुर्गी पालन, बागबानी, कोयला और लकड़ी का व्यवसाय, घड़ीसाज, न्याय वेत्ता, नेतृत्व, नीति निर्धारक, धर्म-कर्म, यज्ञादि कर्त्ता, अध्यापन, संगीतज्ञ आदि कार्य।

व्रतोपवास

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए नीलम सबसे अधिक लाभकारी रहेगा। इसके न मिलने पर आप बैंकॉक नीलम, लाजवर्त, काला नीली इत्यादि धारण कर सकते हैं। इसे आप शनि के दिन, शुक्ल पक्ष में, चौघड़िया मुहूर्त में, त्रिधातु या चांदी की अंगूठी में सवा तीन से सवा पांच रत्ती का नीलम बनवा कर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली की त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें। यह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

अनुकूल देवता

आप शनि ग्रह की उपासना करें अथवा आपको बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा। आप नित्य रुद्राक्ष की माला पर बटुक भैरव के मंत्र का एक सौ आठ बार जप किया करें। इससे आपकी सभी समस्याएं, रोग इत्यादि दूर होंगे। बटुक भैरव का मंत्र इस प्रकार है- 'ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं'। यह इक्कीस अक्षर का मंत्र सर्वसिद्धिदाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का, प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शनि गायत्री मंत्र - ऊँ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः दबर्चिन्रप्रप नमः।। जप संख्या 23000।।

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी विच्छु की जड़ ला कर, काले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या शीशे या लोहे के ताबीज में भर कर गले मे धारण करें। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आप प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शनि के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शनि की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शनि के पदार्थ-तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शनि को अनुकूल बनाए रखने हेतु शनि यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चन्दन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पुष्यनक्षत्र के चतुर्थ चरण में कर्क लग्नोदय काल हुआ था। उस समय मेदिनीय क्षितिज पर कर्क लग्न के साथ-साथ वृश्चिक राशि का नवमांश एवं वृश्चिक राशि में ही द्रेष्काण उदित था। आपके जन्म प्रभाव से यह संकेत प्राप्त होता है कि आपका जीवन उज्जवल एवं फलदायक है। परन्तु आपके स्वास्थ्य से सम्बंधित कतिपय सतर्कतापूर्ण निर्देश प्राप्त होते हैं।

प्रायः कर्क राशीय प्रभाव से आप शारीरिक रूप से बाल्यावस्था में सुकुमार रहेंगे। बल्कि आयु वृद्धि के साथ-साथ आपकी शारीरिक अभिवृद्धि भी होगी तथा शारीरिक स्थिति में सुधार संभव है। तथापि वृश्चिक नवमांश के प्रभाव से आप दुःसाहसिक कदम उठाएंगे। फलस्वरूप आप कतिपय रोगों से आक्रान्त हो सकते हैं। उत्तम तो यह है कि आप पाचन क्रिया के कारण कुष्ठ रोगादि उत्पन्न होने के पूर्व ही सतर्कता अपनाना ठीक है। आपको सतत ही सन्धिवात अर्थात् गाँठ के दर्द (गठिया) वाय, अलसर, गौस्टिक रोग एवं नितम्ब बेदना रोग उत्पन्न होने के प्रति रक्षित रहें। आप उत्तम स्वास्थ्य लाभ हेतु नियमितता बनाए रखें तथा अधिक भोजन करने की आदत नियंत्रण रखें।

अकारण मद्यपान की निवृति की अनुशंसा करे। अर्थात् त्याग करें।

आप बहुत धनोपार्जन करेंगे तथा आपके पास धन कोष पर्याप्त रहेगा। यह सुनिश्चित है, जबकि आप एकाग्रचित होकर स्वतः अपने कार्य उद्देश्य के सफलता की प्राप्ति हेतु दृढ़तापूर्वक प्रयासरत रहें। आपके जीवन का भाग्यशाली समय 36 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होगा। आप अपनी अति अभिलाषा पर नियंत्रण रखें तथा अपने उद्देश्य को कार्यरूप दें। आप में ऐसा गुण विद्यमान है कि आप विश्वसनीयता पूर्वक कार्य सम्पादन करेंगे। आप मंत्रि पद एवं उच्च कार्यकारी पदाधिकारी पद पर आसीन हो सकते हैं। बशर्ते कि विश्वास पूर्वक अपनी प्रतिष्ठा को सम्मान जनक बना सके। आपके लिए व्यवसाय जल से सम्बंधित कार्य है। यथा तटबन्ध, नहर-सिचाई, कृषि एवं जहाजरानी सम्बंधी कार्य अनुकूल होंगे।

आप जनसामान्य हेतु ज्योतिषीय कार्य अर्थात् भविष्यवक्ता, शिक्षण कार्य आदि आध्यात्मिक व्यवस्था को पसन्द करते हैं। क्योंकि आपने विश्वसनीयता पूर्वक आध्यात्मिक ज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आपकी उच्चाकांक्षा है कि आप दर्शनीय तीर्थस्थानों का भ्रमण कर, लोक कल्याणकारी कार्य प्रस्तुत करेगें। आपमें यह गुण विद्यमान है कि बहुसंख्यक प्राणी आपकी विश्वसनीयतापूर्ण आध्यात्मिक समर्पण की प्रशंसा करेंगे। आप विश्वसनीयता को प्राथमिकता देकर प्रशंसित व्यवसाय करेंगे तथा सदैव आपका व्यवहार जनसाधारण द्वारा प्रशंसित रहेगा।

आप उच्च कोटि के भावुक प्राणी है। आप अपने परिवार के साथ पूर्णतः सम्बंधित रहेगे। आप अपनी पत्नी के पूर्ण स्नेह प्रदान करने के लिए तत्पर रहकर अपने पारिवारिक सदस्यों की उन्नति और सुधार के लिए त्याग करेंगे। तथापि आप अपनी आश्चर्यजनक उत्तेजनात्मक प्रवृति को नियंत्रित करने के अभ्यास का आचरण करें। इसमें सन्देह नहीं कि आप सदैव शान्त रहते हैं, तथापि शीघ्रतापूर्वक पुनः समत्वबुद्धि (धैर्य) धारण कर लेते है। परन्तु इस

प्रवृति का दृश्यान्त आंशिक हानिप्रद होता है। अतः आप इस बेसुधपना को अनिवार्य रूप से शान्ति पूर्ण बना लें तथा निश्चिततापूर्वक विश्राम ग्रहण करें।

आप अपने स्तर के बहुसंख्यक मित्र अपनी यात्रा क्रम में बनाएंगे। आपकी अभिलाषा है कि आपका मित्रतापूर्ण संबंध शुभकांक्षाओं से युक्त एवं विश्वास जनक हो। आप अपने मित्रों के साथ आमोद-प्रमोद युक्त आनन्द एवं प्रीति मिलन मुक्तहस्त से अपने आवास पर उदारतापूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार एवं शनिवार पूर्ण आनन्द प्रदायक नही होगा। मंगलवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन सफलता प्रदायक होगा। बुधवार का दिन चिन्तनीय एवं व्ययकारी होगा। परन्तु रविवार का दिन सचेत रहने योग्य है।

आपके लिए अंक, 4 एवं 6 अंक भाग्यशाली प्रमाणित होगा एवं अंक 3 एवं 5 अंक अनुपयुक्त है। आपके लिए रंग ब्लू एवं हरा रंग उपयुक्त नहीं अस्तु आपके लिए लाल, पीला, सफेद एवं क्रीम रंग फलदायक प्रतीत होता है।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी,

वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शांत स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्छल भाव इनके अंदर विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते है तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। धर्म के प्रति ये श्रद्धालु होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में इनकी इच्छा रहती है। दूसरे लोगों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये चतुर होते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को अर्जित करने में सफलता प्राप्त करते हैं जिससे समाज में इनको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुदंर एवं दर्शनीय होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक विद्वान तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति भी प्रायः अच्छी रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे एवं अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से करेंगे। इनमें आपको सफलताएं भी प्राप्त होगीं जिससे आपके सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर होंगे।

आप एक कर्तव्यपरायण व्यक्ति होंगे तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। इससे आपके कार्य क्षेत्र के प्रभाव में सतत वृद्धि होगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगे। साथ ही मित्रों में भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय समझें जाएंगे तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत होगा। संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी विद्यमान रहेगी फलतः अन्य जनों के उपकार को आप स्वीकार करेंगे तथा उनका हार्दिक आभार प्रकट करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अवसरानुकूल सम्पन्न करते रहेंगे। जल क्रीड़ा के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इससे आपको आनंद की अनुभूति होगी। ज्यौतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा होगी तथा इसके ज्ञानार्जन में भी रूचिशील होंगे।

इस प्रकार आप शांत, दृढ़-प्रतिज्ञ, कर्तव्यपरायण, परिश्रमी एवं साहसी पुरूष होंगे तथा जीवन में सर्व सुखों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है तथा सूर्य इस राशि का स्वामी है। अतः इसके प्रभाव से आप अधिक बोलना पसन्द नहीं करेंगे तथा अधिकाशं समय शान्त रहना ही आपको रूचिकर लगेगा तथा अवसरानुकूल ही वार्तालाप करना पंसद करेंगे। वैभवशाली वस्तुओं की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में आप सर्वदा उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। आप कभी कभी शीघ्र ही क्रोधित भी होंगे लेकिन शीघ्र ही शांत भी हो जाएंगे। पारिवारिक शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को पूर्ण सुविधाएं प्रदान करेंगे। पैतृक सम्पति की आपको अवश्य प्राप्ति होगी। साथ ही बहुमूल्य वस्तुओं से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे।

जीवन में आपको जमीन जायदाद संबंधी लाभ होगा तथा गृह एवं वाहन आदि के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। सामाजिक जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने के लिए आप मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे। साथ ही आपके स्पष्ट तर्को से सभी लोग आपसे सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिवार में धार्मिक कार्यक्रम या उत्सव समय समय पर होते रहेंगे। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन पोषण करने में भी आप समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप एक जागरूक, धार्मिक तथा परोपकारी प्रवृति से युक्त होकर समाज में मान सम्मान अर्जित करके अपना समय व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्याराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे परन्तु आयु के साथ.साथ आपसी संबंधों में तनाव भी हो सकता है। आप अपने क्षेत्र में नेतृत्व प्राप्त करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथायोग्य आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक अच्छे वक्ता होंगे तथा भाषा पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा।

संचार की सुख सुविधाओं यथा वाहन, दूरभाष तथा दूरदर्शन आदि उपकरणों से सम्पन्न रहेंगे। आप संगीत के प्रिय होंगे एवं कला के प्रति भी आपकी रूचिशीलता रहेगी। आपका कंठ मधुर रहेगा जिससे अन्य जनों को अपने गायन से आकर्षित कर सकते हैं लेकिन सर्वप्रथम आप अपने सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगे उसके बाद ही संगीत आदि कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आप समय समय पर यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको भविष्य में इच्छित लाभ होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। आपकी पड़ोसी देशों की यात्राएं भी हो सकती हैं। इसके साथ ही पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध रखना पसन्द करेंगे। नीति के आप ज्ञाता होंगे अतः आम चुनाव लेख लिखने या पुस्तक आदि प्रकाशन से भी आप ख्याति तथा लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या के ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव तथा मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक वृति के पुरूष होंगे ।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सर्व सुखों से आप युक्त होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में अपना अनुकूल स्तर बनाएं रखेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको माता के द्वारा विशिष्ट सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। विवाह के बाद पत्नी के सहयोग एवं प्रभाव से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपको जीवन में उत्तम एवं विस्तृत क्षेत्र में स्थित गृह भी प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगे। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तमवाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका आप आनंद पूर्वक उपभोग करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं तेजस्वी महिला होगी तथा पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा वं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्या अध्ययन के क्षेत्र में आप परिश्रमी होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सफल होंगे। प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करेंगे तथा स्नातक परीक्षा काफी अच्छे अंकों से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाने में समर्थ होंगे। आप व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ हो सकते है क्योंकि आपमें परिश्रम तथा बुद्धिमता दोनों भाव विद्यमान है। इसके अतिरिक्त मित्र संबंधी एवं अन्य लोग भी आपकी सफलता से प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त महत्वपूर्ण कार्य कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपके कार्य-कलापों में बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप शीघ्र निर्णय लेने एवं आसानी से समस्याओं के समाधान में भी समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान विशेष रूप से भौतिक शास्त्र में आप विशेष रूचि रखेंगे तथा स्वपरिश्रम, बुद्धिमता एवं योग्यता से इस क्षेत्र में वांछित ज्ञानार्जन में सफल होंगे। आप इस क्षेत्र में कोई शोधकार्य या नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी कर सकते है जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचमभावास्थ केतु के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी परन्तु मंगल की राशि में स्थिति के प्रभाव से आपका प्रेम आदर्श एवं मर्यादित होगा तथा भावनात्मक आकर्षण तथा लगाव अधिक होगा जिससे आपका प्रेम प्रसंग काफी चल सकता है या इसकी परिणिति विवाह के रूप में हो सकती है। लेकिन भावुकता से आप कोई कार्य नहीं करेंगे।

पंचमभाव में केतु के प्रभाव से आपको सन्तति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन सन्तति अवश्य होगी। आपकी संतति पराक्रमी, बुद्धिमान एवं तेजस्वी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनका पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी तत्पर होंगे तथापि यदा-कदा वे अपने मन की भी अवश्य करेंगे लेकिन आपको उनके विषय में विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने से रोकना नहीं चाहिए। माता की अपेक्षा पिता के प्रति उनका विशेष लगाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान पिता के माध्यम से करेंगे लेकिन आदर एवं सम्मान माता-पिता के लिए समान होगा। इसके अतिलिक्त वृद्धावस्था में भी वे आपकी सेवा करने में तत्पर होंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं प्रतिभाशाली होंगे तथा इसमें वांछित सफलता अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का आधुनिक परिवेश में उचित प्रबन्ध करेंगे। वे व्यावहारिक होंगे तथा अन्य जनों को अपनी बुद्धिमता एवं उत्तम कार्य-कलापों से प्रभावित करने में समर्थ होंगे। फलतः सभी लोग उनसे सन्तुष्ट एवं प्रभावित होंगे एवं उन्हें वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सन्तति पर गर्व की अनुभूति करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विद्वान तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा शत्रुता के भाव की हमेशा उपेक्षा करेंगे। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते है परन्तु आपके शत्रु इसमें बाधाएं उत्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही वे आपके सम्मान को हानि तथा सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करेंगे। इसे रोकने के लिए आप समयानुसार कोर्ट या मुकद्दमे आदि का सहारा ले सकते है। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रुपक्ष का सामना करेंगे तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगे। इस कार्य में आपकी बुद्धिमता तथा आपके सद्मित्रों का मंडल भी आपको सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा पारिवारिक या बन्धुवर्ग से भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च नैतिकता का अनुपालन करेंगे अतः शत्रुपक्ष को पराजित करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में सक्रियता से कार्यरत होकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाएंगे।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी होगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा इससे आपकी महानता में वृद्धि होगी। जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम आएंगे जब आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्त हो जाएंगे। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि इनसे जीवन में आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता रहेगी तथा वे आपको कम ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा आपको मुकद्दमे आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्त में इसमें विजय प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप समाज में एक माननीय पुरूष होंगे तथा अपने अच्छे संबंधों से आपको सभी लोगों से यथोचित सहयोग एवं सम्मान मिलता रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया मकर राशि की सप्तम भाव में स्थिति के प्रभाव से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है परन्तु सौम्य एवं जलीय ग्रह चन्द्र के प्रभाव से वह सुशील सहिष्णु एवं बुद्धिमान होता है तथा अपने कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी चंचल तथा सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यो को शांत मन से सम्पन्न करेंगी वह एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। कला एवं संगीत के प्रति भी उनकी रूचि होगी। चन्द्रमा जैसे शुभ ग्रह के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव रहेगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक एवं सुंदर महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। उनकी शारीरिक संरचना भी उत्तम रहेगी तथा अन्य अंग प्रत्यंगों की पुष्टता एवं सुडौलता से उनके सौन्दर्य की अभिवृद्धि होगी एवं इसके लिए वह आधुनिक सुख संसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। जलीय राशि मकर एवं जलीय ग्रह चन्द्रमा के प्रभाव से उनमें आयु के साथ साथ स्थूलता भी आ सकती है। साथ ही कला एवं सुंदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह संबंधियों के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा महिला संबंधियों का इसमें विशेष योगदान रहेगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे के मनोभावों का पूर्ण आदर करेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आपसी सहमति तथा सहयोग से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा परस्पर विश्वास का भाव भी बना रहेगा।

आपका विवाह सामान्य परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उनकी स्थिति साधारण रहेगी। सास ससुर से आपके सामान्य संबंध अच्छे रहेंगे तथाा वे भी आपको यथोचित स्नेह तथा नैतिक सहयोग प्रदान करेंगे। इससे आपका परस्पर मेल मिलाप भी होता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने मृदु व्यवहार एवं वाणी से प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी एवं माता या अन्य स्त्री वर्ग के साथ साझेदारी से वांछित लाभ एवं उन्नति होगी तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगे क्योंकि आप एक व्यावहारिक पुरूष होंगे तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको अच्छा नहीं लगता। पैतृक सम्पत्ति आपको प्राप्त होगी लेकिन प्रचुर मात्रा में नहीं परन्तु इसका आप पर कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा क्योंकि स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपके पास प्रचुर मात्रा में धन ऐश्वर्य होगा। साथ ही आवश्यक सुख संसाधन भी उपलब्ध होंगे। आप का दहेज के लेन देन में कोई विश्वास नहीं रहेगा तथा न ही आप उसे स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप इस सामाजिक बुराई के प्रति अन्य जनों को भी जागरूक करने के लिए तत्पर रहेंगे।

जीवन में यदा कदा आपके घर में कोई चोरी आदि की भी संभावना है लेकिन यह सामान्य होगी तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा पुलिस या अन्य जनों की सहायता से आपका चोरी का समान वापस मिल जाएगा जिससे हानि नहीं होगी। बीमा आदि करने से आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः आप इस पर अनावश्यक रकम या पूंजीनिवेश न करें। केवल चोरी के मामलों में प्रौढ़ावस्था में आपको बीमे का लाभ मिल सकता है।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा अनावश्यक जोखिम नहीं लेना चाहिए क्योंकि न्यूनाधिक रूप से आप दुर्घटना से कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्यतया सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका समय व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित दौरान आपकी- मन में इसके लिए पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा रहेगी। ध्यान या समाधि के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। आपकी अर्न्तदृष्टि प्रबल रहेगी अतः ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही धर्माचार्य या कोई उपदेशक भी हो सकते हैं। आप नियमित रूप से भगवत पूजा करेंगे तथा वेद एवं आध्यात्मिक विषयों पर आपकी विद्वता रहेगी तथा इन विषयों पर आप धाराप्रवाह, लम्बे समय तक भाषण या उपदेश देने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप किसी धार्मिक संस्था के संस्थापक संचालक या अध्यक्ष अथवा सक्रिय सदस्य भी हो सकते हैं।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगे इससे समाज से ख्याति तथा मान सम्मान अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप रूचिशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रंथों का भी व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करेंगे। दैनिक पूजन आदि करने से आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति विकसित होगी फलतः आपके पूर्वाभास सत्य होंगे तथा अन्य जनों के प्रति सही भविष्यवाणियां भी करने में समर्थ रहेंगे।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको प्रसिद्धि तथा धनऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। आप दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकते हैं। साथ ही परोपकार तथा सामाजिक जनों की भलाई के लिए कार्य करने में तत्पर रहेंगे अपने पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा पूर्वजन्म के पुण्यों से इस जीवन में आनन्द एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक साधुजनों के सेवक मंदिर तालाब आदि परोपकार के लिए बनाने वाले एवं आर्थिक रूप से सुसम्पन्न रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही सूर्य भी अपनी उच्चराशि में स्थित है। मेष राशि एवं सूर्य दोनों अग्नितत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा इसमें आप अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से निरन्तर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही आपको मानसिक सन्तुष्टि की भी प्राप्ति होगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सुतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

सूर्य की अपनी उच्चराशि मेष में दशमस्थ स्थिति के अनुसार आपका आजीविका क्षेत्र प्रशासक, प्रबन्धक, सेना, पुलिस, मेडिकल, सरकारी क्षेत्र, ऊर्जा विभाग, राजनीति, प्रतियोगी परीक्षा द्वारा उत्तम कार्य क्षेत्र आदि होगा। साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में भी आप विशिष्ट अनुसंधान या उपलब्धि अर्जित कर सकते है। अतः अपने उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही कार्य करना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा अनावश्यक कठिनाइयों एवं समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए औषधि व्यापार, ऊनी वस्त्र तथा रत्न संबंधी कार्य विद्युत उपकरण इंजीनियरिंग उपकरण सरकारी ठेके, आदि से वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा। यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में अपना व्यापार प्रारंभ करेंगे तो इनमें आप उन्नति के शिखर पर पहुंचने में समर्थ होंगे तथा कार्य का विस्तार भी शीघ्र ही करेंगे। आपकी चहुंमुखी उन्नति को देखकर अन्य लोग आपके प्रसंसक होंगे। अतः आपको परिश्रम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने व्यापारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

सूर्य की स्वोच्चराशि एवं दिग्वली दशमस्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही किसी उच्च पद पर भी आपकी नियुक्ति होगी जिससे सामाजिक यश में अभिवृद्धि होगी। आपको किसी धार्मिक, सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में कोई उच्चपद मिल सकता है। इसके अतिरिक्त आपके प्रभाव को सभी लोग स्वीकार करेंगे एवं हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप जीवन में उच्च मान सम्मान प्रदान करके सुख एवं सन्तुष्टि के भाव की अनुभूति करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

आपके पिता तेजस्वी, पराक्रमी एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही वे अन्य जनों के हित के लिए भी समय समय पर कार्य करने में तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा एवं आपकी शिक्षा के प्रति वे पूर्ण सजग रहेंगे तथा उच्चस्तर पर इसकी व्यवस्था करेंगे। कार्य क्षेत्र में आप उनके प्रभाव से पूर्ण उन्नति एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। साथ ही अपने कार्य कलापों से पिता

के प्रभाव एवं मान सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा एक दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य होगा। इसके अतिरिक्त पिता के आप आज्ञाकारी पुत्र होंगे तथा उनकी आज्ञा या सलाह से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही महत्वाकांक्षा के भाव से भी युक्त रहेंगे तथा इन सबकी प्राप्ति जीवन में दृढ़ता एवं परिश्रम से करने में समर्थ रहेंगे। प्रचुर मात्रा में आय के साथ साथ आपकी बचत करने की प्रवृत्ति भी रहेगी अतः आर्थिक रूप से आपको कभी परेशानी नहीं होगी। बड़े भाई बहिनों से आपको विशिष्ट सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा साथ ही आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता विद्यमान रहेगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाना पसन्द करेंगे तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक तरीकों से आप मित्रों तथा अन्य जनों का मनोंरजन करने में तत्पर रहेंगे। आपका मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान को रखने वाले व्यक्तियों से अधिक रहेगा। इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन मित्रों के सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में एक आदरणीय तथा प्रतिष्ठित पुरूष समझें जाएंगे। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा सहयोग प्रदान करना अपना कर्तव्य समझेंगे। यदा कदा आप स्वयं अत्यंत ही एकाकीपन की अनुभूति भी करेंगे। जीवन में आपको समाजिक सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी। साथ ही खेल आदि के क्षेत्र में भी में भी आप दक्षता प्राप्त कर सकते है । इस प्रकार आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा आजीवन इसका अनुपालन करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगे। आप एक ईमानदार व्यक्ति होंगे अतः बेईमानी को सहन करने में असमर्थ रहेंगे साथ ही धन को आप अपने परिश्रम एवं योग्यता से अर्जित करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे।

जीवन में आपको आर्थिक समस्याओं से नहीं जूझना पड़ेगा। आपकी आवश्यकताएं अत्यंत ही सीधी सादी होंगी क्योंकि आप भौतिकता की ओर नहीं भागते तथा सामान्य रूप से ही आवश्यक वस्तुओं को घर में रखेंगे। आप शीघ्र लाभ की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ के प्रति अधिक इच्छुक रहेंगे। प्रारंभ से ही धन संग्रह के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ बचत भी करेंगे। अतः आपके समस्त पारिवारिक एवं सांसारिक व्यय आवश्यक रहेंगे जिससे आर्थिक स्थिति विशेष प्रभावित नहीं होगी। अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य में कल्याण संबधी योजनाओं पर भी आपका व्यय होगा तथा अपने धन को बड़ी बड़ी योजनाओं या निवेशों में लगाएंगे जहां से आपको अधिक लाभ की प्राप्ति होगी।

परिवार की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनकी समृद्धि एवं खुशहाली के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही एक मित्र की तरह उनका पालन करेंगे। आपकी समय समय पर लम्बी दूरी की यात्राएं भी होगी जिससे लाभ होगा। आपकी यात्राएं विभागीय या व्यापार संबधी होंगी। साथ ही जीवन में आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से प्रसन्न रहेंगे।

नक्षत्रफल

आप आश्लेषा नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग श्वान, नाड़ी अन्त्य, योनि मार्जार तथा राक्षस गण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम "डे" से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों के अर्न्तगत की जाती हैं। अतः इस नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आप माता के लिए कष्टकारी होंगे। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रोक्त रीति से शान्ति करवानी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करवाएं तथा 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आए तो इस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करें तभी शान्ति होगी तथा कष्टयोग भी समाप्त होगा। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाना चाहिए।

मंत्र – ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप अपने जीवन काल में भ्रमण एवं यात्रा करने में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगे। आपकी चेष्टायें उग्रता से पूर्ण होंगी तथा अपनी इन उग्र चेष्टाओं से समाज के अन्य लोगों को यदा कदा परेशान करेंगे। धन की आपके पास न्यूनता नहीं रहेगी परन्तु अपने धन को अनावश्यक रूप से शीघ्र ही व्यय करेंगे। साथ ही आप विलासी प्रवृति के पुरूष भी होंगे।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को बुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आप प्रायः आकर्षित रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। साथ ही आप अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उनके द्वारा किए गये कार्यों का श्रेय उन्हे अल्प ही प्रदान करेंगे।

लुब्धः खञ्जः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।
आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगड़ा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यों को करने वाला होता है।

आप सात्विक तथा तामसिक दोनों प्रकार के भोजनों का आस्वादन करेंगे तथा भक्ष्य अभक्ष्य का कोई भेद नहीं रखेंगे। आपके कार्य कठोर भी होंगे जिससे अन्य जनों को यदा कदा असुविधा होगी। अवसरानुकूल आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय लेते रहेंगे।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यों को करने वाला होता है।

आपमें ज्ञान तथा बुद्धि का भाव मध्यम रूप से विद्यमान रहेगा तथा आप कृतज्ञता पूर्ण शब्दों का भी प्रयोग करेंगे। आपको क्रोध भी शीघ्र एवं अधिक मात्रा में आएगा। इसके साथ ही आपका चाल चलन भी सामान्य रहेगा। समाज या अन्य जनों से आप को मान सम्मान या सहानुभूति जीवन में प्राप्त होती रहेगी।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

कर्क राशि में जन्म लेने के कारण आप का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपने कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने में हमेशा सक्षम रहेंगे तथा बहुत सी धन दौलत को अर्जित करके समाज में धनाढ्य बनेंगे। आपके पराक्रम को सभी लोग मानेंगे तथा शीघ्र ही आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। आप पूर्ण रूप से धर्मनिष्ठ रहेंगे तथा समस्त धार्मिक कार्यकलापों को श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करेंगे। अपने श्रेष्ठजनों तथा गुरूजनों के आप हमेशा स्नेह पात्र रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग की आपको प्राप्ति होती रहेगी। आपकी बुद्धिमता से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। लेकिन कभी कभी आप में क्रोधाधिक्य की भावना उत्पन्न होगी एवं आप अपने को सबसे दुःखी प्राणी के रूप में अनुभव करेंगे। आपके सभी मित्र सद्गुणों से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य कार्यों तथा कलाओं के विषय में भी ज्ञान रखने वाले होंगे। शारीरिक रूप से आप मध्यम बली रहेंगे तथा आपको अपने वास्तविक गृह में अनासक्ति रहेगी तथा आप अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से प्रवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रवृति वातकफ से युक्त रहेगी। आपका रूप अलौकिक सौन्दर्य से युक्त होकर तेजस्वी रहेगा। साथ ही अपने बुद्धिबल तथा परिश्रम से अजित धन से धनवान बनेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं की आप हार्दिक सेवा तथा सत्कार करने में तत्पर रहेंगे। उच्चकुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा इनकी सेवा करने में आप अत्यन्त ही शान्ति का अनुभव करेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के ज्ञान प्राप्त करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक आप इस कार्य में परिश्रम से सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य कलाओं के विषय में भी आपको ज्ञान रहेगा। आप सदाचारी होंगे तथा सभी लोग आपके श्रेष्ठ आचरण की प्रशंसा करेंगे। फूलों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करने से आप परम संतुष्टि की अनुभूति करेंगे। साथ ही अपनी बुद्धि से आप समाज में विख्यात एवं कीर्ति शाली पुरूष होंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

स्त्री के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे। आप अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा जलक्रीड़ा से आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे। आपके द्वारा बहुत से भवनों का निर्माण किया जाएगा अथवा आप बहुत से मकानों के स्वामित्व को प्राप्त कर सकते हैं। आप मध्यम कद के होंगे तथा टेढी चाल से शीघ्र गति से चलना आपकी प्रिय प्रवृति होगी। इसके अतिरिक्त संतति संख्या में पुत्र आपके अल्प संख्या में ही उत्पन्न होंगे।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्‌र्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोळल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप जीवन में नाना प्रकार के द्रव्यों तथा सुखों का उपभोग करेंगे। तथा ज्योतिष शास्त्र के भी जानने वाले होंगे। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में संघर्ष करते रहेंगे क्योंकि चन्द्रमा की कलाओं की तरह आप हानि वृद्धि को प्राप्त होते रहेंगे। आपकी एक मुख्य विशेषता यह रहेगी कि आप केवल प्यार से ही वश में रहेंगे तथा कोई भी कार्य करने को तत्पर रहेंगे। इसके विपरीत दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों का आप पूर्ण आदर तथा सम्मान करेंगे। फलतः मित्र वर्ग के आप हमेशा प्रिय रहेंगे। आपकी जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण कार्य में गहन रूचि रहेगी तथा इसका प्रदर्शन भी आप करते रहेंगे।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्स्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङ्कैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा भाग्यबल से अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में सिद्धि प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप धैर्यशाली होंगे तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। शीघ्रता से कार्य करना आपकी प्रवृति के विरूद्ध होगा। आप यात्राओं तथा भ्रमण में अधिक रहेंगे। अतः अधिकांश समय इन्ही पर व्यतीत होगा। आप स्वभाव से ही विनम्र रहेंगे तथा अन्य जनों से भी विनम्रता का ही व्यवहार करेंगे। कामाग्नि की भी प्रबलता आप में विद्यमान रहेगी तथा आप किसी दूसरे से उपकृत होने पर उसके प्रति कृतज्ञता का भाव अवश्य प्रकट करेंगे। आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित करेंगे। जीवन में आप सत्य तथा मधुर बोलने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

आपका जन्म राक्षस गण में हुआ हैं। अतः आप कभी कभी निरर्थक भाषण करेंगे

तथा मन में दया तथा करूणा का भाव भी अल्प मात्रा ही रहेगा। लेकिन साहस तथा धैर्य का आपमें अभाव नहीं रहेगा। अतः आप अधिकांश साहसिक कार्यों को ही सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप क्रोधी स्वभाव के भी होंगे तथा छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगे। अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए आप किसी भी सीमा को भी पार करने के लिए तैयार रहेंगे। शारीरिक रूप से आप बलवान रहेंगे तथा दूसरे लोगों से वाद विवाद भी प्रायः होते रहेंगे। अतः संयम पूर्वक अन्य लोगों से वार्तालाप करना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते है। आपके चेहरे की सुन्दरता सामान्य ही होगी तथा आप कभी कभी कठोर शब्दों का ही प्रयोग करेंगे। जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः मधुर शब्दों को यत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को आप कुशलता से सम्पन्न करेंगे। मीठा भोजन तथा मीठा पेय आपके प्रिय होंगे। इनका सेवन करने से आप अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। आप भयहीन रहेंगे तथा निर्भयता से अपने जीवन के कार्य सम्पन्न करते रहेंगे। आपके अर्न्तमन में दुष्टता की प्रवृति भी उत्पन्न होगी जिससे आप का मन दुष्कार्यो को करने के लिए भी यदा कदा प्रवृत होगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यो को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा

पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण बुधवार, तृतीय प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट कारक होगा। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ एवं कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण आदि कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अच्छा नहीं चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए तथा सोमवार का उपवास करना चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, चांदी,श्वेत वस्त्र, चावल आदि पदार्थों को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ॐ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप किसी संस्था के प्रधान, जज, सरपंच, नेता भी हो सकते हैं। आप किसी से धोखा-फरेब नहीं करेंगे। सरकारी विभाग, नौकरी-व्यापार में धन-लाभ, मान-सम्मान मिलेगा। नौकर-चाकरों का अच्छा सुख मिलेगा। राज्य पक्ष से लाभान्वित होंगे। आप बहुत वहम करेंगे। संतान पक्ष कमजोर रहेगा। 19 वर्ष की उम्र के लगभग पिता से दूर होना पड़ सकता है। आपको इज्जत, सेहत और दौलत का सुख मिलेगा। परिवार में कोई व्यक्ति उच्चपद पर संस्था प्रधान या सरकार द्वारा सम्मानित होगा।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, नंगा सिर रखने की आदत रही, अपना भेद दूसरों को बताया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। आप मशीनरी या लकड़ी से संबंधित नौकरी-व्यापार करेंगे तो हानि होगी। खानदानी विरासत और पिता का सुख कम मिलेगा। लकड़ी, लोहा, भैंसों से संबंधित व्यापार या काली चीजों के व्यापार से नुकसान होगा। आपके घुटने में दर्द हो सकता है। आपकी आंखों की नजर और उम्र पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। ससुराल में रहना ससुराल पक्ष वालों के साथ कोयले, बिजली का धंधा करने से हानि होगी। सत्ता से परेशानियां भी रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपना भेद किसी को भी न देवें।
2. सूर्य की रोशनी नंगे सिर पर न पड़े।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती पगड़ी या टोपी पहनें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से आपका जन्म आपके माता-पिता की तपस्या के बाद हुआ होगा या भगवान की मिन्नतें-मन्नतें मांग कर या आपके जन्म से पहले कई बहनों का जन्म हुआ होगा। आप सबको वशीभूत कर लेते हैं। आप शांत स्वभाव के सुंदर और सफेद कपड़े पहनने के शौकीन हैं। आप विभिन्न भाषाओं के विद्वान होंगे। आपको पैतृक मकान का सुख मिलेगा। आपको जीवन भर संपत्ति की कमी महसूस नहीं होगी। 28 वर्ष की उम्र में विवाह हो तो जीवन भर सुख मिलेगा। पराई अमानत पास रह जायेगी जिससे अमीर हो जाऐंगे। जब तक माता जीवित रहेंगी धन-दौलत का अभाव नहीं

रहेगा। लंबी उम्र के मालिक होंगे। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आपके जन्म के बाद पिता की माली-हालत अच्छी होगी। लम्बी आयु, कारोबार तथा धन लाभ के लिए शुभ होगा। बुढ़ापा उत्तम रहेगा। 24 या 27 साल की उम्र में अगर सफर करें तो सफर से वापस घर आकर मां का आशीर्वाद लेने से माता की आयु बढ़ेगी। 24 वर्ष आयु से पहले मकान न बनावें।

यदि आपने 24 वर्ष आयु से पहले मकान बनाया होगा, 28 वर्ष आयु में विवाह किया हो, आपने नौकरानी से झगड़ा या गाय को कष्ट दिया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से पानी में डूबने का भय, मानसिक रोग, पुत्र सुख का अभाव, अति चिन्ता रहना, शारीरिक कमजोरी, आंख की पुतली खराब होना, घर में बाग-बगीचा हो तो उजड़ा सा रहेगा, आपको दिल की बिमारियां हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. माता या बूढ़ी स्त्री से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. चांदी के गिलास में दूध-पानी आदि पियें।
2. बट के वृक्ष को कभी-कभी पानी डालें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दयालु, रक्षक, भाई और मित्रों के पालनहार, आप दूसरों की जरूरत हमेशा पूरी करेंगे। आप किसी संस्था के प्रधान भी हो सकते हैं। आप बहुत लोगों को सहारा देने वाले होंगे। आप दूसरों को खाली हाथ नहीं लौटाएंगे। आपको ससुराल से सहायता मिलेगी। आप छोटे भाई से पुत्र जैसा प्यार करेंगे और उसे सहायता देंगे। छोटे भाई की सहायता से आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सहायता करते रहेंगे। इस वजह से आप भी भरपूर रहेंगे। आपको दूसरों की भलाई के लिए धन-संपत्ति मिलती रहेगी। आप दूसरों के लिए लंगर लगाएंगे। आप नेक और पक्के इरादे के हैं। आप परिश्रम से धनी होंगे। आपको खुराक, पोशाक तथा अन्य जीवन के सुख प्राप्त होंगे। जरूरत पड़ने पर खुद ब खुद पैसे मिल जाएंगे। आपको भगवान की कृपा से बहुत धन मिलेगा। आप अधिकारी बन कर हुकूमत करेंगे। आप तीर्थ यात्रा करने से शुभ फल को प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी दौलत में बढ़ोत्तरी होगी। ससुराल पक्ष से सुखी रहेंगे।

यदि आपने दूसरों के धन-स्त्री पर बुरी नजर रखी, बुरी आदतों के शिकार हुए या छल-कपट करके भाई-बंधुओं, मित्रों के साथ ठगी की तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से अगर विद्या में रुकावट, जरूरत पड़ने पर आपको धन मिलता रहेगा। नौकरी-व्यापार में बार-बार हानि हो सकती है। 28

वर्ष से पहले बड़े भाई को शरीर कष्ट संतान की चिंता, धन हानि होगी। यदि आपका बड़ा भाई है तो उसका सुख आपको नहीं मिलेगा या वह आपसे हालत में कमजोर होगा या आप और आपका भाई निःसंतान भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. लड़ाई-झगड़े से दूर रहें।
2. मेहमानों की सेवा से मुंह न फेरें।

उपाय :
1. बच्चों को दोपहर के समय गुड़-गेहूं बांटें।
2. नाश्ते में मीठा भोजन करें।

बुध

आपकी कुंडली में नौवें घर में बुध पड़ा है। इसकी वजह से संगीत या ज्योतिष में रुचि रह सकती है। आप परिवार का भरण-पोषण करते रहेंगे। आपको अपना भाग्य बनाने में अधिक समय लगेगा। धन-दौलत में बरकत होने में समय लगेगा फिर भी आप खुश रहेंगे। आपके काम-धन्धे पर तथा राजदरबार में आपका अच्छा असर रहेगा। जन्मस्थान से दूर विदेश तक की यात्रा करनी पड़ सकती है परंतु विदेश प्रवास का फल भी अच्छा या अनुकूल रहेगा।

यदि आपके घर में गाने-बजाने का सामान और रेडियो-घड़ियां आदि खराब पड़े होंगे, जुबान में तोतलापन, हरे रंग की चीजें अधिक होंगी या साधू-महात्मा आदि ताबीज़ लेकर रखा तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपके काम से आपके पिता की बदनामी हो सकती है। धोखेबाजी से कदम-कदम पर मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। गृहस्थ जीवन और औलाद से संबंध में खराबियां पैदा होंगी। मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। अधर्म के कार्य करेंगे तो भाग्य में भी रुकावटें आती रहेंगी। जीवन में उत्थान-पतन से तंग आ जाएंगे। जीवन के हालात से तंग आकर साधू-फकीर बनने की इच्छा होगी परंतु साधू-फकीर बनना अच्छा नहीं होगा। आप पिता के लिए मनहूस रहेंगे। पिता के सुख का अभाव हो सकता है। आप अपने पिता की आयु पर भारी हैं। पिता के नौकरी-व्यापार में बाधा हो सकती है। जलील और खराब काम करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. जल-भभुतिया, धागे-ताबीज न रखें।
2. मकान की सीढ़ियां गिरा कर दुबारा न बनायें बल्कि उसकी मरम्मत करें।

उपाय :

1. गऊ ग्रास देवें।
2. लोहे की गोली पर लाल रंग करके पास रखें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पिता का सहयोग प्राप्त होगा। भाई आपके मदद्गार हो सकते हैं और उनसे लाभ भी होगा। कारोबार में भाई का साथ भाग्य जगाता है। आपके जीवन के 16 वर्ष से 28 वर्ष तक का समय भाग्य आपका खूब साथ देगा। आपके भाग्य से ससुराल वालों को बहुत लाभ होगा आपको धन-संपदा प्राप्त होगी। आप गरीबों की मदद करेंगे तथा धर्म में विश्वास रखेंगे, तो आपका भला होगा। पिता की उम्र तक आपकी हालात अच्छी रहेगी। आपको लाभ तो होगा परंतु आप कर्जदारी में भी रहेंगे। सरकारी कामों से संबंधित कमाये धन में बहुत बरकत होगी। आपके जीवन में आमदनी के और भी कई रास्ते हो सकते हैं। आप दूसरों के मदद्गार होंगे आप अपनी आमदनी का अपव्यय भी कर सकते हैं या आप अपने धन को संभाल कर नहीं रख सकेंगे। आपकी दोस्ती से दूसरों को लाभ मिलेगा। आप अपने भाई-बंधुओं, दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार रखेगें। आप अपनी किस्मत पर भरोसा नही करेंगे।

यदि आपने पूजा स्थान घर में रखा, चाल-चलन खराब किया, घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से परंतु पिता की मृत्यु के बाद कोई सहायता नहीं करेगा। आप परिवार के साथ रह कर सुखी परंतु अकेले रहने में दुःखी रहेंगे। आप की आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। बुढ़ापे में आपकी किस्मत ढीली हो जाएगी। परिवार कितना बड़ा हो मगर कफन पराया मिले ऐसा शक है। आप शराब-बीयर आदि न पीएं वरना आपके पास धन नहीं टिकेगा। पिता की मौत के बाद आपके भाग्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपकी मौत शान और सम्मान से होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. अण्डे न खावें।
2. पूजा स्थान घर में न रखें। धर्म मंदिर में पूजा करें।

उपाय :
1. पीला रुमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपकी पत्नी दिखने में भोली-भाली परंतु काम धंधे में स्वभाव से

अच्छी होगी। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपकी पत्नी में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आप भोले स्वभाव के प्राणी होंगे। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने के आदी हो जाएंगे। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहे, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके कुश्ता फौलाद या मछली का तेल प्रयोग करें वैसे चांदी का कुश्ता भी लाभदायक रहेगा)। आपकी पत्नी के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या स्त्री द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड, जेल यात्रा का भय रहेगा। आपका चाल-चलन शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगे। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :
1. स्त्री से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में आठवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप नये अविष्कार या विषयों की खोज करेंगे। आप मनमौजी होंगे। आर्थिक हालत सामान्य रहेगी। भागीदारी के काम से लाभ अधिक होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं तो आपको सरकारी विभाग में धीरे-धीरे तरक्की प्राप्त होगी। आप विदेश की यात्रा भी करेंगें, ऐसी पूरी संभावना है। वैसे आपको जल से, जलीय पदार्थ या समुद्री यात्रा से लाभ हो सकता है, परंतु आपकी विदेश यात्रा पूर्ण संभावित है। आपको एक जगह बैठे रहने वाले स्थायी काम करना ही अच्छा है।

यदि आपने अपनी रिहाईश गली की नुक्कड़ पर या आगे बंद गली के घर में रखी, मकान में दरारें हुई, घर से बिच्छू निकलते रहे, आप अपने नाम पर मकान बना लेवें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपको पिता का सुख कम ही प्राप्त हो सकता है। किसी भी दुर्घटना की आशंका है। आपके भाई आपसे शत्रुता कर सकते हैं। आपकी टांगों पर बुरा असर पड़ सकता है। शराब-मांस, अंडे

का सेवन-भोजन आपको नीच बना देगा इसका सेवन नहीं करें। आपका बुढ़ापा गरीबी से गुजरे और बुढापे में आंखों की दृष्टि कमजोर होने की आशंका है। आपके अभिमान के कारण नुकसान हो सकता है। कोई जवाबदेही पूर्ण कार्य से अथवा नीच कार्य से बहुत बड़ा नुकसान और पछतावे का कारण बन सकता है। आपको सरकार से भय रहेगा। अपने नाम पर मकान बना लेंगे तो असमय मौत को बुलावा हो सकता है। नौकरों द्वारा हानि का भय, संतान सुख में कमी हो सकती है। शराब-मांस, मछली का सेवन आपको हानि दे सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपने नाम से मकान न बनायें।
2. सांप न मारें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 किलो उड़द जल प्रवाह करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका बचपन खुशहाली से बीतेगा। आपको उच्च शैक्षणिक संस्थान में विद्याध्ययन का मौका मिलेगा। आपको पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप बिना माता-पिता के सहयोग के भी आगे बढ़ते रहेंगे। आप ताकतवर और न्यायप्रिय होंगे। आप अपनी कमाई पर ही जीवन बसर करेंगे। माता-पिता से मधुर संबंध में कटुता की संभावना है। विदेशी यात्रा या कार्यों द्वारा धन भी प्राप्त होगा। दूसरो पर भरोसा रखने से विश्वासघात होगा ऐसी शंका है।

यदि आपने बंदूक-पिस्तौल रखी, नीलम या नीला नग पहना, बिजली का खराब सामान या बिजली की तारें घर में पड़ी होगी, दराज या कैश बॉक्स खाली रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके पिता को कष्ट होने की आशंका है। आपकी साढ़े दस-21-42 वर्ष आयु में पिता की मृत्यु होगी। पिता की मृत्यु गोली, जहर, ब्रेन हैमरेज से संभाव्य है। पिता की मौत के बाद बहुत क्षति होगी। आप ऐय्याश लोगों की संगति में रहेंगे, ऐसी आशंका है। अनुचित ढंग से धन कमाएंगे। आपकी परेशानी धातु संबंधी रोगों से बढ़ सकती है। आपकी संतान कमजोर और अपाहिज हो सकती है। आपकी जवानी गरीबी में कटेगी। पिता और दादा से नहीं पटेगी। आपके जन्म के पश्चात् आपके पिता की आर्थिक दशा तंग होने की संभावना है। आप काम में दक्ष होंगे और धूर्त लोग आपके साथ होंगे। फिजूल के झगड़े-फसाद होने की आशंका है। धन की हानि भी होती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. नीलम या नीला नग न पहनें।
2. घर में बंदूक/पिस्तौल न रखें।
3. बिजली का सामान ठीक रखें।

उपाय :
1. सिर पर चोटी रखें या सिर ढांप कर रखें।
2. 4 किलो सिक्के का चौरस टुकड़ा 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।
3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाइप में लगा कर पियें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पांचवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति होगी। आपको विलक्षण अतिद्रिय शक्ति प्राप्त होगी। आप गुरु भक्त रहेंगे। 24 वर्ष की उम्र के बाद आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जीवन में 34 वर्ष आयु में पुत्र द्वारा, उसके पश्चात पौत्र द्वारा सुख प्राप्त होगा। 48 वर्ष की उम्र तक माता का सुख मिलेगा। पत्नी के साथ अच्छा संबंध रहेगा। आपके धर्म-ईमान के अनुसार ही आपकी संतान होगी। आप अपना चाल-चलन ठीक रख कर सुखी रह सकते हैं। आपकी आर्थिक हालत ठीक रहेगी। इच्छित संख्या के अनुसार संतान होगी। पुत्र संतान उत्पत्ति के पश्चात् आपकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आप धर्माचरण करते रहें तो जीवन के अशुभ फल दूर हो जाएंगे।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया, किसी के पुत्र को या अपने पुत्र को कष्ट दिया कुत्ते को मारा या मरवाया या कुत्ता आपके वाहन से टकरा कर मर गया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 45 वर्ष तक आयु का समय बेकार रहेगा। पुत्र से कोई खास सुख प्राप्त नहीं होगा। संतान को कष्ट रहेगा। आपको श्वास संबंधी या दमे के रोग की आशंका है। 48 वर्ष की आयु का समय भी ठीक नहीं रहेगा। सुख में कमी और बाधा उत्पन्न हो सकती है। आयु बढ़ने के साथ आप बुरे लोगों की संगति में रहेंगे। गुप्त रोग का भय, संतान को दमा रोग रहने की संभावना रहेगी। आपका पुत्र आपकी माता के लिए अशुभ रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दुश्चरित्र लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक में ताला लगाकर बंद न रखें। उन्हें कभी-कभी खोलते रहें।

उपाय :
1. गुरु-पिता दादा की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु नवम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि नवम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि लग्न स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप व्यापार में उन्नति करेंगे। अनुभवी लोगों कह सलाह अवश्य लें। व्यापार में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या बिरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें अन्यथा परिणाम प्रतिकूल होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों व पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद राहु एवं गुरुग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपको कोई बड़ा निवेश न करें। यदि निवेश करना अत्यधिक जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों से परामर्श लेकर निवेश करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे।

मई के बाद गुरुएवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपनी वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि विवाह योग्य है तो विवाह हो सकता है। मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है, अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। किसी प्रकार की कोई चिंता परेशानी न होने के कारण आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अपने शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे।

मई के बाद आपका समय थोड़ा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय छोटी-मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरुके पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग या मौसम जनित बीमारियों से परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगी। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उत्तम शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ शुभ है।

मई के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल रोजगार प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु मई के बाद द्वादश स्थान के गुरु विदेश यात्रा करा सकते है।

नवम स्थान के शनि आपको लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की उनकी जन्मभुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। मई के बाद गुरुग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान

पुण्य, भण्डारा इत्यादि धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली वस्तुएं जैसे दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें एवं राहु मन्त्र का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं दुर्बलता की अनुभूति करेंगे साथ ही शत्रुपक्ष से भी अनावश्यक भय एवं चिन्ता का वातावरण रहेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस समय आपके घर में या अन्यत्र चोरी आदि भी हो सकती है। अतः आपको चोरों से सावधान रहना चाहिए। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का उलंघन न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे साथ ही धन का भी अनावश्यक व्यय होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी इस समय सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। सम्बन्धियों एवं मित्रों से भी आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा समाज से उपेक्षा प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आशाओं की पूर्ति में भी आप असफल ही रहेंगे।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे जिससे आप स्त्री से सुखी रहेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से अपने प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं यत्नपूर्वक आप इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ एवं परेशानी उत्पन्न करने वाला होगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं की ओर से भी नित्य चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। आपके उत्साह में भी इस मास अल्पता रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा।जिससे आर्थिक परेशानी हो सकती है।साथ ही आप शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे तथा मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। स्वबन्धुजनों से भी आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा एवं तनाव का भाव रहेगा जिससे मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। अतः मानसिक तनाव से आप ग्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से विवाद या संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय अनुसार चलने का प्रयत्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस मास में अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

समान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है।साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे।अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्णरूपेण संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। साथ ही घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति प क्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में भी अभिवृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगे। समाज में इस समय आपके यश की वृद्धि होगी एवं भाग्योदय सम्बंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा एवं यात्रा से आप पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। जिसके कारण आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं या किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानीपूर्वक कार्यो को सम्पन्न करें।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे एवं अशुभ फल न्यून ही घटित होंगे। इसके प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे एवं वे सभी आपसे संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग

प्रदान करेंगे तथा उनसे सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे।आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा उनकी सेवा एवं पूजन के कार्य को आप अवश्य सम्पन्न करेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करके मानसिक शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभ फलदायक ही सिद्ध होगा।

साथ ही यदा कदा अशुभ फलों के प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा को आंच आएगी एवं आप उसके लिए पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का योग भी बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आप पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करेंगे। आपका स्वास्थ्य इस मास अच्छा रहेगा तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता नहीं रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा मित्र वर्ग से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करके आप प्रसन्नता को प्राप्त करेंगेत संतति पक्ष से भी आपको शुभ फल ही प्राप्त होंगे तथा किसी प्रकार से चिन्ता नहीं रहेगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित होगी। फलतः आप आनंदपूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

इसके साथ ही आप पुत्र एवं स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा विद्याध्ययन में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या द्रव्य आदि की भी आपको उपलब्धि हो सकती है। इस प्रकार आप शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगे तथा व्यय भी काफी होगा जिससे आर्थिक एवं मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति होगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे। काफी परिश्रम के बाद भी आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता ही प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों को आप उचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा नौकरी या व्यापारिक कार्यों में भी अनावश्यक रूप से बाधाएं या रूकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रु पक्ष से भी

आपके मन में भय तथा चिन्ता रहेगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः समय समय पर मन से बेचैनी भी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगे तथा रक्तविकार का भी योग बनता है अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हो सकें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुखदायक एवं आनंदवर्द्धक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं का नाश होगा तथा लाभमार्ग भी नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आर्थिक रूप से आप पूर्ण सुदृढ़ रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे।साथ ही समाजिक जनों से आप पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। यह मास आपकी भाग्योन्नति में भी सहायक रहेगा तथा कई ऐसे शुभ कार्य जो समय से सिद्ध न हो रहे हों इस समय सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से संबन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे तथा इनसे आप अनुकूल सहयोग होता रहेगा।

साथ ही आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा सुख पूर्वक मास को व्यतीत करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी धनार्जन होगा। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव

उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपको यश तथा सम्मान की भी प्रप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा तथा सत्कार की भावना उत्पन्न होगी। आप अन्य जनों की भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करके यश की प्रप्ति करेंगे। साथ ही आपकी मानप्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस मास भाइयों से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही अन्य शुभ फलों के प्रभाव में भी नित्य वृद्धि होती रहेगी। इससे शरीर में आरोग्यता मन में संतुष्टि एवं बुद्धि के प्रभाव में वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक होगा एवं मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न रहेंगे।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिकत शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का अभिवर्द्धन होगा तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही संतति पक्ष से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी हो सकता है। इस मास में आपका प्रभुत्व बढ़ेगा तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस माह में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों का आप पूर्ण सम्मान करेंगे तथा श्रद्धापूर्वक उनका पूजन भी केरेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल सिद्ध होंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी जिससे आप मन से सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य कई प्रकार से भी आवश्यक सुखों को प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आप इस मास को पूर्ण सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

02 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा नयी योजनाओ को जन्म देगा जिसका लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यरहेगा।द्वादश स्थान केगुरु धनागम में रूकावट उत्पन्न करेंगे। जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है, परन्तु आपको मातुल पक्ष से लाभ होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको रूका हुआधन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुधारने में इनका पूर्ण सहयोग होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर भी पैसा खर्च करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह

के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत उत्तम रहेगा। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद करा सकता है।

02 जूनके बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपकेसम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान कीदृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थगुरुपर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएंहो सकती हैं।आपके बच्चों का स्वास्थ्य व शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

02 जून के बाद गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है। तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रमण, सांस व पेट संबंधित बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

02 जून के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारिरीक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा रहेगा।षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को मनोनुकूल सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को वर्षारम्भ में नौकरी मिल सकती है।

02 जून केबाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है। द्वादशस्थगुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

02 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी दर्शा रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थगुरुएवं नवमस्थ शनि के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। 02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आपगुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। मन्त्र जाप कर आध्यात्मिक शक्ति को बढाएंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। आपके शत्रु इस समय अधिक प्रबल होंगे फलतः शत्रु पक्ष से भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है ।अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। नौकरी या व्यवसाय में अपने उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित या जुर्माना प्राप्त कर सकते हैं। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके साथ ही आप किसी कठोर कार्य को भी सम्पन्न कर सकते हैं। जिसका प्रभाव आपकी प्रतिष्ठा पर पड़ेगा तथा इससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। आपकी मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी इस समय सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा आशाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में भी असमर्थ रहेंगे।

साथ ही इस समय आप पित्तादि दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः इस मास शारीरिक सुरक्षा का भी आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए जिससे अल्प मात्रा में ही कष्ट हो।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री या बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा आपके बन्धु वर्ग तथा स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट होगा। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आपको नित्य चिन्ता तथा भय बना रहेगा। आपमें इस मास उत्साह की अल्पता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी तथा अनावश्यक रूप से धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कष्टानुभुति प्राप्त करेंगे आपके मन में लालच के भाव की भी वृद्धि होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। बन्धु जनों से आपके सम्बन्धों में तनाव व्याप्त होगा तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आपको मानसिक रूप से असन्तुष्टि रहेगी। साथ ही अन्य पारिवारिक या समाजिक जनों से भी वादविवाद होते रहेंगे।

लेकिन इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इससे आपको स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा इनसे आप पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों तथा द्रव्य आदि को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। अतः शत्रु पक्ष से आप

चिन्तित रहेंगे तथा ये आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः चोरों से आपको सावधान रहना चाहिए। इस महीने में आपका अनावश्यक धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे फलतः आपकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होगा। साथ ही इस महीने आप घर से दूर किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी आपको कष्ट होगा तथा मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी एसे कार्य को भी आप सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी मान प्रतिष्ठा को आघात पहुचेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार से हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन लाभ अर्जित करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे। इस मास में आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। सन्तति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे तथा इनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन एवं सम्मान करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। इस मास में समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की प्रबलता रहेगी एवं दूर समीप की आप कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग से इस समय सम्बन्धों में घनिष्ठता होगी। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इसके साथ ही इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा वातोत्पन्न रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय होगा जिससे हानि की आशंका बनी रहेगी। अतः संयम एवं सर्तकता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके उच्चाधिकारी या वरिष्ठ सहयोगी आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे फलतः आप कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति प्राप्त करेंगे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्योंको भी सम्पन्न करेंगे साथ ही आपके सभी शुभ एवं

महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सिद्ध होंगे। फलतः आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों में आपकी श्रद्धा होगी तथा इनकी पूजा एवं सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इसके साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन स्थान या गृह आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पिछली असफल आशाओं को पूर्ण करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप पुत्र एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी प्राप्ति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ, महत्वपूर्ण एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा जिसमें आपको अपने असफल कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ होगा तथा सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपका स्वास्थ भी उत्तम रहेगा तथा मन से भी पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। आपको इस मास वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा इनका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। समाज तथा समाजिक जनों से आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे साथ ही विगत रूके हुए कार्यों में भी आप इच्छित सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसके साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार का योग भी बनता है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी धन हानि होने की सम्भावना है अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लए मध्यम रहेगा अर्थात शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे अतः आप का व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति भी करेंगे। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से ठीक नहीं रहेगा इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पराक्रम एवं परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। मित्रों एवं सम्बन्धियों के मध्य आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा उनसे उचित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र

में भी इस मास में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा शत्रुओं से नित्य भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। साथ ही मन से भी अशान्त रहेंगे एवं बैचेनी की अनुभूति करेंगे।

इसके साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं उससे आपको अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूपेण धन लाभ तथा सुख प्राप्त करेंगे। साथ ही आप समाज में कीर्ति भी प्राप्त कर सकेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन में सन्तुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा। आपके पराक्रम में इस समय पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही आपके लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे। इस मास आप भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा ऐसे महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे जिनको आप काफी समय से सिद्ध करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके दृढ़ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा सबसे आप यथोचित मान सम्मान अर्जित करेंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफलता अर्जित करेंगे राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण प्रतिष्ठा तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने उत्साह द्वारा धन को अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप अपने बन्धुओं तथा मित्रों के मध्य उचित प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। साथ ही मिष्ठानोपभोग भी आप अधिक मात्रा में करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं व्यापारादि कार्यों में भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी

अर्जित करेंगे। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी अभिवृद्धि होगी तथा सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में आपको सफलता मिलेगी।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों के मध्य यशार्जन करने में भी आप समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। साथ ही अन्य जनों का परोपकार करने के लिए भी आप उद्यत रहेंगे। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा किसी भी प्रकार से आप शारीरिक या मानसिक कष्ट प्राप्त नहीं करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनके आश्रय से समाज में ख्याति अर्जित करेंगे।मित्र एवं भाइयों से इस मास आपको उचित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इस समय आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं जिससे आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों को भी आप प्राप्त करेंगे या इनसे युक्त होंगे। अतः यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं आनंददायक रहेगा।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शत्रु बलवान रहेंगे जिसके कारण आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही पारिवारिक जनों से सम्बन्धों में भी तनाव का वातावरण रहेगा जिससे परिवार में अशान्ति रहेगी। अतः मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या अजीविका संबधी कार्यों में मंदी आएगी या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से आपका विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का योग भी बनता है एवं शरीर में कोई रोग भी हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री का आपको पूर्ण सुख मिलेगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा बुद्धि बल से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने के लिए उत्सुक होंगे।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस मास में आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र सुख भी आपको प्राप्त होगा। आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे। इस मास आपके शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इनका आप यथोचित सम्मान एवं पूजन करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप यथोचित लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगे एवं समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।अतः मानसिक रूप से पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से आवश्यक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक कार्य क्रम का आयोजन करने में भी आप प्रवृत होंगे।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से नयी योजनाओं से लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। आप कम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा।

साझेदारी में काम करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है। 26 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियो की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। रूके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी पत्नी के स्वास्थ पर भी धन का व्यय हो सकता है।

26 नवम्बर के बाद सामाजिक कार्यो में व धार्मिक कार्यो में पैसा खर्च कर सकते हैं। भाइयों या ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है। अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से जीवनसाथी कास्वास्थ्य खराब हो सकता है।

26 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद आपके सामाजिक मान संमान में और बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

संतान के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा।

26 नवम्बर के बाद दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे व आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे और प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसम जनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 26 जून के प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। 03 जून के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें है।

आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आप का अटूट विश्वास रहेगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 26 जून के बाद मन्त्र सिद्धी व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन राहु ग्रह का दान आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। सप्तम स्थान के राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं परन्तु आप उसे भी अपने बौद्धिक बल से अनुकूल बना लेंगे।

24 मई के बाद व्यवसाय में सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो 24 जुलाई के बाद अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने कि उम्मीद है। अनुभवी व्यापारिक एवं वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे। आपका मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। आप बचत करने में सफल रहेंगे। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकते हैं।

फरवरी के बाद आपको रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पिता का अहम सहयोग होगा। मातुल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों में भी पैसे खर्च हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। फरवरी के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय शुभ है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा चल रहा है यदि बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी।

राहु ग्रह के गोचर के साथ आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो उससे छुटकारा मिल सकता है। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए सामान्य रहेगा। आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि शिक्षा की दृष्टि से उत्तम है।

24 मई के बाद षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों को ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से लम्बी यात्राएं व तीर्थ यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि, नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है, जिसके कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर गरीबों की सहायता भी करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में बांट दें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।
- गौ सेवा करें या गौशाला में चारा दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण सारे विरोधी शान्त होंगे। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अति उत्तम रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के लिए नये-नये तरीके अपनाएंगे व सफल भी होंगे। आपको लाभ मिलता रहेगा। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की अच्छी उन्नति होगी। छठे स्थान का राहु आपको ब्राण्ड नेम भी दिला सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख सुविधा पर आप अधिक खर्च करेंगे। आय के स्रोत और उत्तम होंगे। निवेश के लिए समय अच्छा चल रहा है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की स्थिति पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति के योग बना रही है। अचानक धनागम का योग बनेगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

08 अगस्त के बाद आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

तृतीयस्थ मंगल के प्रभाव से सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप

अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। माता-पिता के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। उच्च शिक्षा के लिए समय उत्तम नहीं है परन्तु प्रतियोगिता परीक्षा में आप सफल होंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

आपके बच्चों का किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ा रहे हैं जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते है, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

इस समय के अंतराल में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में और अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अहं भाव ना आने दें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

29 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। 05 अक्टूबर के बाद तीर्थ यात्रा या परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी। किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं तो उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें, अन्यथा उसमें व्यवधान आ सकता है। 25 अगस्त के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष आयोजन कर सकते हैं जैसे- भगवती जागरण, माता की चौकी इत्यादि।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं और केतु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। फरवरी से आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने काम को पूरा करके ही रहेंगे

17 अप्रैल से समय व्यावसायिक स्तर आपके लिए बेहतर होने वाला है। आपको पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। भले ही गुरु एवं राहु की युति थोड़ी अड़चने देगी किन्तु सफलता आपके कदम चूमेगी। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आय भाव पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। 04 फरवरी से आपकी आर्थिक उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। वित्तीय मामलों में आपको निराशा हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। आपकी राह में अवरोध उत्पन्न किया जा सकता है। जोखिम भरे कार्यो में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं।

01 मई से आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे यह समय आपके लिए लाभकारी रहेगा। यदि अनपेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिए मत अपितु उसका लाभ उठाएं। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी मौके आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। परिवार के प्रत्येक मसले पर आपको बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

मई से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा, क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो परिवार के लिए हितकर होंगे। परिवार के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान में गुरु चण्डाल योग संतान हानि का योग बना रहा है।

गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। अप्रैल के बाद सन्तान के लिए समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप आलसी हो जाएंगे और आपके रवैये में भी परिवर्तन आएगा। आपको अपने खान-पान और दिनचर्या पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है ताकि आप इस तरह की भावनाओं से बच सकें। आपके जीवन में इस साल कुछ अच्छे पल भी आएंगे किन्तु ऐसा भी समय आएगा जब आप अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन से सम्बंधित चिंताओं से घिरे रहेंगे

स्वस्थ रहने के लिए आप योग और ध्यान का सहारा लें और प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। स्वास्थ्य को लेकर यह साल वैसे तो आपके लिए ठीक-ठाक ही रहेगा लेकिन अपने खान-पान को लेकर सतर्क रहें। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति उदर रोग दे सकती है। अतः मसालेदार या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठतम रहेगा परन्तु 04 फरवरी के बाद से समय प्रभावित हो रहा है। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। विदेश यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र भी ले सकते हैं और उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा भी करेंगे। अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं और महालक्ष्मी मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- राहु ग्रह का दान करें और उसके मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप अपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। चतुर्थ मंगल के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

09 अगस्त के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से आपका खुद का विकास होगा। आपका धैर्य आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपकी आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। 18 फरवरी के बाद अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है। परन्तु 14 जून से एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको कई अत्यंत लाभकारी अवसर भी मिलेंगे। अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे।

15 अक्टूबर के बाद जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान के मंगल आपके घरेलू माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी माता स्वास्थ्य भी

अच्छा नहीं रहेगा। 18 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है।

09 अगस्त से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावुक लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके पिताजी एवं बड़े भाई के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों के स्वास्थ्य व शिक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। 18 फरवरी के बाद गर्भवती स्त्रियों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

09 अगस्त से बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भधान के लिए उत्तम समय रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान रह सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फिर भी आपको स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम करते रहना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

8 अगस्त के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 15 अक्टूबर से समय आपके लिए काफी बेहतर हो रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विदेश यात्रा का योग नहीं बन रहा परन्तु 18 फरवरी के बाद विदेश यात्राएं होंगी। राहु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। इस स्थानान्तरण से आप प्रसन्न नहीं रहेंगे।

14 जून से नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु 18 फरवरी के बाद आप दान पुण्य करेंगे। राहु ग्रह के गोचर के बाद मन्त्र जप या साधना अधिक करेंगे। साधु, संन्यासी, देवता एवं अपने से बड़े लोगों में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं एकादश भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुछठे भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

5 मार्च के बाद का समयआपकेकार्य-व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। परिश्रम की बदौलत उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपनी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। अधिकारी आपसे प्रभावित होंगे और उनका अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

किसी के साथ मिल कर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा।12 अगस्त से आपको किसी पर अत्यधिक विश्वास नहींकरना है,नहीं तो आपको धोखा मिल सकता है। 23 अक्तूबर से आपका समय अनुकूल हो रहा है फिर भी आपको सतर्क रहना चाहिए।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। एकादश स्थान का शनि आर्थिक उन्नति के लिए काफी शुभ है फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुवभी लोगों की सलाह अवश्य लें।

5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। पुत्र एवं आपके मित्रों से अच्छा लाभ होगा। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन व्यय करेंगे। 12 अगस्त से 23अक्तूबर तक निवेश के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें। आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

गुरु के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। वर्षान्त में आपके

परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बढ़िया नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुआपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी जिससे उनकीशिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही नकरें। दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता में कुछ अनुकूलता आएगी। आप स्वस्थ महसूस करेंगे परन्तु अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। पेट की तकलीफें व मोटापा बढ़ सकता है।व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठ रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत उत्तमरहेगा।विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राओंके प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है। 5 मार्च के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के

कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है परन्तु 5 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा और बढ़ेगी।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक जीवन में इस वर्ष आप कुछ विशेष करेंगे। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगों वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। वर्षान्त में किसी प्रकार का जोखिम न लें।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय के कम एवं व्यय के ज्यादा योग बन रहे हैं। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 मार्च से आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा हैं। धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपके पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसे खर्च हो सकते हैं। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। ऐसी विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना चाहिए। छठे स्थान में वक्री मंगल आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेंगे। फिर भी आर्थिक स्थिति को लेकर सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव के कारण घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में न पड़ें। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए आपको अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। इस समय आपके

ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है।

तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। भाई-बहनों का अच्छा सहयोग मिलेगा। समाज में आपका पराक्रम और बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होना आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा, जिसके कारण संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम है। परन्तु 18 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। आपको पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क जाना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

छठे स्थान में मंगल ग्रह के प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिसके कारण आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। 8 अक्टूबर के बाद वाहन इत्यादि से सावधान रहें और यात्रा भी कम से कम करें। नहीं तो शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता अभ्यार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है।

व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साइंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग

बन रहें है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को प्रेम सौहार्द के साथ मनाएंगे। 8 मार्च से आप दान पुण्य व दूसरों की सहायता अधिक करेंगे, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा व नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- सरसों के तेल से निर्मित वस्तुओं को गरीब मजदूरों को खिलाएं।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों में दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक जीवन के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश शनि के कारण आप कुछ गलत फहमियों से व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। निश्चित तौर पर आपको बेहतर परिणाम मिलेगा। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें अन्यथा सकारात्मक परिणामों की जगह आपको नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं एवं आप कानून की जद में आ सकते हैं। संचित धन का सही जगह उपयोग करें। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उसमें आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से बड़े व अनुभवी लोगों का साथ आपको अच्छी सफलता दिला सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको धोखा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्ग एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूवार्द्ध घर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पायेंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। आपका छोटे भाई-बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। दशम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि पिता के साथ कुछ मतभेद उत्पन्न करा सकता है और आप दोनों के बीच हमेशा कुछ न कुछ तनाव भी रहने वाला है। मार्च के बाद यह तनाव खत्म हो जाएगा और संबंधों में मधुरता आएगी

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य सम्पन्न करेंगे। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को सावधानी बरतें नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

28 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी प्रारम्भ हो जाएगी।

आप अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 12 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः ज्यादा तेल युक्त आहार लेने से बचें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नंबर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यह समय माध्यमिक शिक्षा ग्रहण

कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनाएगा। 28 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको नीतियो में बदलाव करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ है। तृतीयस्थ राहु के कारण छोटी मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 28 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका अच्छे कार्यों के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को दान देना व दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। मजदूरों को खाना खिलाकर व किसी की सहायता कर आप अत्यधिक संतुष्ट होंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान करें, जिससे आपकी शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि लग्न स्थान में और सिंह राशि का राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। लग्नस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठाकर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश कर सकते हैं। परन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

तृतीयस्थ राहु के कारण आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण धन हानि व धनागमन के मार्ग प्रभावित होंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। यदि आपने ऋण के लिए आवेदन डाला है तो 6 अप्रैल के बाद पास हो जाएगा। इस वर्ष आपके संचित धन में कमी होगी। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

गुरु ग्रह का गोचर भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं के लिए बहुत ही शुभ है। भूमि व भवन खरीदते समय कागजी मामले में बहुत ही सावधान रहना चाहिए नहीं तो आपको धोखा मिल सकता है, जिसमें आपका पैसा फंस सकता है। कोई बड़ा निवेश करने से बचें। यदि निवेश करना जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगो का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं।

आपकी धर्मपत्नी के लिए यह समय शुभ नहीं है। आलस्य व स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपके घरेलू वातावरण के लिए काफी शुभ है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। घर में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। माता पिता की खूब उन्नति होगी। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि सामाजिक पद प्रतिष्ठा में कमी कर सकती है। अतः सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग ले पाएंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे समाज में आपका सम्मान और बढ़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे की शिक्षा प्रभावित हो सकती है और उन्नति में भी बाधा उत्पन्न होगी। अतः दूसरी संतान के लिए तुला दान करना लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप संक्रमण संबंधित बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य लिए अच्छा नहीं रहेगा। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण स्वस्थ रहते हुए भी आप अपने को बीमार जैसा अनुभव कर सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं।

आपको दुरुस्त रहने के लिए व्यायाम व योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें। महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। विद्यार्थियों को अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 6 अप्रैल के बाद नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। दशमस्थ गुरु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती

रहेंगी। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्राएं होंगी। यह यात्रा मनोरंजनात्मक एवं आनन्ददायक रहेंगी।

यात्रा करते समय आपको कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। यात्रा के दौरान आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है या आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ से ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 6 अप्रैल के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें व प्रत्येक दिन शिव का दुग्धाभिषेक करें।
- गरीब व जरूरतमंद लोगों को काली वस्तुओं का दान करें।
- अपने वजन के बराबर अन्न दान आपके शारीरिक कष्टों को दूर कर सकता है।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु दशम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारभ्म अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अचानक व्यवसाय में परिवर्तन होने की संभावना बन रही है। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

15 अप्रैल के बाद एकादश स्थान का गुरु आपके व्यापार में आय की मात्रा बढ़ा सकते हैं। व्यापार में आमदनी के स्रोत सृजित होंगे। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। 27 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले लोगों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके के लिए अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण भूमि, क्रय-विक्रय व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु परिवार में अधिक खर्च होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है।

13 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में राहु एवं शनि का गोचर आर्थिक हानि का योग बना रहा है। उस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी जिन्दगी धन के मामले में बहुत सुदृढ़ हो जाएगी। 27 अगस्त से द्वितीय स्थान का शनि परिवार पर कुछ अनावश्यक खर्च करा सकता है, जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी । द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना लाभप्रद रहेगा।

15 अप्रैल के बाद आपको प्रेम-प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। सप्तम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की अच्छा उन्नति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

15 अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय मे शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आप का बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बन सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आप कमजोर होते जा रहे हैं।

अप्रैल के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि आप मसालेदार और तेल वाले आहार पर विशेष ध्यान देंगे। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपकी उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः

समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

15 अप्रैल के बाद समय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु लम्बी यात्राओं का योग कम ही बन रहा है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यवसाय से संबंधित यात्रा भी करा सकती है। इस वर्ष आपकी पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं होगी। मुख्यतः सारी यात्राएं अचानक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकता है। जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। तन्त्र, यन्त्र व सिद्धि के प्रति आपका रुचि बढ़ेगी। 15 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह-शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य भी अधिक करेंगे।

- राहु मन्त्र का पाठ करें व शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ायें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं द्वादश में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान के गुरु व्यापार में उन्नति का योग बना रहे हैं। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यावसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। बड़े लोग व वरिष्ठ अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। क्योंकि आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे। सितम्बर के बाद काफी हद तक सफल भी रहेंगे। उस समय आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। धनार्जन करने में आपको भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु अप्रैल के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेद देन में सावधान रखें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

गुरु, राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी उसेके निवारण में भी आपका व्यय होगा। रिश्तेदारी व मित्रों के साथ आर्थिक लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के

कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। द्वितीयस्थ शनि की चतुर्थ स्थान पर दृष्टि पारिवारिक माहौल खराब कर सकती है। ऐसे में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। नहीं तो आपका घरेलू माहौल ज्यादा अशान्त हो सकता है।

अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें। इस वर्ष आपका दाम्पत्य जीवन भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। समाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसके उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

अप्रैल के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर बच्चे की उन्नति रोक सकता है। अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी। सितम्बर के बाद समय फिर से उत्तम हो रहा है। उसके बाद से अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। अप्रैल के बाद चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 16 सितम्बर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

अप्रैल के बाद उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। यदि आप अपने लक्ष्य में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। 26 अप्रैल के बाद आपकी विदेश यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा जिससे आप दुःखी रहेंगे।

यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

साल का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्य के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। सितम्बर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या अनुशासित होगी। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं द्वितीय भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किए अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। 11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्ययवास में कुछ सुधार होगा।

अक्टूबर के बाद कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकते हैं। यदि आप खनिज एवं खान विभाग व रासायनिक विभागों से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो बहुत अच्छी उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत सृजित होंगे। इस अवधि में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, उसमें अच्छी सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जाएगी। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। घर परिवार में रोग व्याधि की अधिकता होने से भी आपके अपव्यय होंगे। पैसे के लेन देन के समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। धनागम के मार्ग भी प्रभावित होंगे। ऐसे स्थिति में आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए और जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश नहीं करना चाहिए, नहीं तो नुकसान हो सकता है। मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। पत्नी के द्वारा धन संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। संतान की उच्च शिक्षा पर भी आपका पैसा खर्च होगा।

अक्टूबर के बाद आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप अत्यधिक व्यय करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या भाईयों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी। रुके या फंसे हुए धन की पुनः प्राप्ति के संकेत हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष उत्तम नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के शनि आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। वर्ष के प्रारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। परन्तु मई के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपकी पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह संस्कार हो जाएगा।

आपके पिताजी के लिए समय बहुत ही शुभ है। आपकी संतान एवं भाईयों की उन्नति होगी। अक्टूबर के बाद आप उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके समाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी। सरकारी क्षेत्रों में आपको काफी सम्मान मिलेगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे सभी लोग आपके प्रभाव से प्रभावित होंगे तथा यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

संतान के लिए साल का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। परन्तु 11 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति के मार्ग खुलेंगे। वे अपने परिश्रम एवं पराक्रम के बल पर उन्नति करने में समर्थ होंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी श्रेष्ठ है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि विवाह योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु छोटी मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। मई के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह एवं परिश्रम से करेंगे। धर्म पत्नी का पूर्ण सहयोग मिलने से मानसिक प्रसन्नता बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

अक्टूबर के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आप प्रतियोगिता में सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। वांछित उन्नति तथा सफतला अर्जित करके मानसिक शान्ति की अनुभूति कर सकते हैं। अन्य लोग आपके कार्य से प्रभावित होंगे तथा आपके प्रशंसक बनेंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

अक्टूबर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी सुखद रहेगी। यात्रा करते समय बहुत ही सावधान रहें नहीं तो अचानक आपके साथ दुर्घटना हो सकती है क्योंकि पूरे साल राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंद्वता के कारण आपका मन पूजा पाठ मे नहीं लगेगा। 11 मई से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि का वास होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू-संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- आठमुखी रुद्राक्ष लाल धागे में सोमवार के दिन धारण करें।
- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं एवं ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय में उन्नति के लिए यह साल उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ शनि के कारण आप अपने परिश्रम के बल पर व्यापार में उन्नति करेंगे। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से कुछ प्रतिद्वन्दी आपके व्यापार में व्यवधान डालने की कोशिश करेंगे। लेकिन उस योजना में वे सफल नहीं हो पाएंगे। 7 अप्रैल से अचानक आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी। जो लोग सूद-ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो सफलता आपके कदम चूमेगी।

13 जुलाई के बाद मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर शुभ होने से आपके मान-मर्यादा में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा। आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे समय से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वन्दियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने से बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्य स्थल पर आपकी एक अलग पहचान होगी।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। व्यावसायिक अनुकूलता के कारण धन का आगमन भी निर्बाधा होता रहेगा। परन्तु 5 अप्रैल से 13 जुलाई के अंतराल में आपके संचित धन में बढ़ोत्तरी नहीं होगी। उसके बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। निवेश के मामले में यह समय अत्यधिक श्रेष्ठ है।

आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। उसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। 4 नवम्बर के बाद जमापूंजी और लेन-देन के मामले में किसी प्रकार की कोताही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाल है। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारी जनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। आप दोनों परिवारों के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे परन्तु अप्रैल से जून पर्यन्त आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है। यदि दोनों आपस में सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधो मे मधुरता बनी रहेगी।

2 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। उन लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 13 जुलाई से पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका एक अलग प्रकार का प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपकी संतति बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी। अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आपके आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर होंगे।

3 मार्च के बाद आप अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। 4 नवम्बर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। 3 मार्च से समय और भी शुभ हो रहा है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी तथा आप मानसिक रूप से प्रसन्न व सन्तुष्ट बने रहेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे, जिसके कारण रोग व्याधि आपसे दूर ही रहेगी।

5 अप्रैल से 13 जुलाई के बीच आप किंचित बीमार हो सकते हैं। परन्तु उसके बाद आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा अन्यथा आपका बजन बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 3 मार्च के बाद समय बहुत ही शुभ

हो रहा है।

7 अप्रैल के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों को नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों को 13 जुलाई के बाद सफलता मिलेगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय काफी अच्छा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। द्वादश स्थान का राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहा है।

5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिर्वतन आपके लिए अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परन्तु 3 मार्च के पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। मार्च के बाद दान पुण्य करेंगे। साथ ही धार्मिक गतिविधियों जैसे जागरण, सांई संध्या इत्यादि कार्यों में भी संलग्न रहेंगे। 4 नवम्बर के बाद तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन भी करेंगे।

- अपने पूजा घर में पारद शिव लिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यापार तथा कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता अर्जित करने के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। एकादशस्थ राहु के कारण वांछित उन्नति करने में सफल रहेंगे। नौकरी व राजनीतिक क्षेत्र में आप किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करेंगे तथा समाज में आपके मान प्रतिष्ठा तथा यश में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को हृदय से स्वीकार करेंगे। यदि आप स्वर्ण, चांदी व आभूषण से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो उम्मीद से अधिक लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद पदोन्नति का योग बन रहा है। बड़े अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा कर्मचारियों के बीच आपका प्रभाव बढ़ेगा।

साल के उत्तरार्द्ध में कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं जिसमें आपको ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त होगा। यदि आप किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो वांछित सफलता मिलेगी तथा आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। यदि आप व्यापारिक उन्नति के लिए लोन लेना चाहते हैं तो 3 दिसम्बर के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है। उस समय आपको वांछित लोन मिल सकता है।

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक मामलों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में वसीयत व अप्रत्याशित धन मिलने की संभावना बन रही है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप वांछित बचत करने में सफल होंगे। मार्च के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे तथा इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी।

जून के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। धन संचय करने में आपकी धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे तथा अपनी पारिवारिक सुख सुविधाओं पर भी अधिक खर्च करेंगे। 3 दिसम्बर के बाद आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाएंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी तथा एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। मार्च के बाद परिवार में किसी सदस्य कि वृद्धि होगी। भाई बहनों के लिए समय काफी शुभ है।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। वांछित मान-सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धी दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। 3 दिसम्बर के बाद माता पिता जी का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा उनसे आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण संतान संबंधित कुछ चिंताएं बनी रहेंगी। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आपके बच्चे वांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित करेंगे। लेकिन वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी। आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उसका आकर्षण बढ़ेगा।

जून के बाद उनके मन में आपके प्रति आदर व सम्मान का भाव बढ़ेगा। प्रथम संतान की अपेक्षा दुसरी संतान ज्यादा उन्नति करेगी। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपके दृढ़ निश्चय और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण ही आप एकदम दुरुस्त रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। मार्च के बाद आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुतिवान बने रहेंगे तथा आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करेंगे। योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें जिससे आपके सकारात्मक विचारों में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। यदि पहले से किसी बीमारी से परेशान हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है। ऐसा समय भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे, परन्तु घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि कोई स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंता मुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए यह वर्ष काफी श्रेष्ठ है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। आपको वांछित सफलता मिलेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ

मिलेगा। विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय बहुत शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

वर्षान्त में आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी।यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। 28 जून के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा हैए वाक्य को चरितार्थ करेंगे वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक सोमवार को शिवलिंग पर जल चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष राहु एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे। कार्यस्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। मई से जुलाई तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

25 सितम्बर के बाद आजीविका के क्षेत्र में कुछ कमी आ सकती है। आय के स्रोत प्रभावित होंगे। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए आपको कर्ज भी लेना पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। 6 मई से जुलाई तक पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। सोच समझकर धन निवेश करें, नहीं तो हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश में धन व वसीयत की प्राप्ति होगी। गुप्त रूप से भी आपको धन लाभ होगा। यदि आप निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी श्रेष्ठ है। 25 सितम्बर के बाद आपके कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे, उस समय अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावरण विद्यामान रहेगा। आपकी माताजी के लिए यह समय शुभ है, परन्तु 6 मई के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी। मित्र आपसे नराज हो सकते हैं। राहु के कारण आप

मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं, लेकिन जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी अच्छा रहने वाला है। ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। 25 सितम्बर से परिवार में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी अनुकूल बना लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दे सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। आपके प्रति बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। मई के बाद दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों को किसी नौकरी या रिसर्च के कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि वे किसी प्रतियोगिता में भाग ले तो सफलता सम्भव है। 26 सितम्बर के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें।

26 सितम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप आलसी हो सकते हैं तथा आपकी दिनचर्या अव्यवस्थित हो सकती है और आप बीमार भी हो सकते है। इस समयान्तराल में आपको अपनी सेहत पर विशेष ध्यान देना होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए साल का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहने वाला है। आपको इच्छित प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त होंगे। 6 मई के बाद विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

26 सितम्बर के बाद करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय काफी श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 मई के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभुमि की यात्रा होंगी। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राएं करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा। काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपका रुझान ज्यादा होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें तथा सोमवार के दिन शिवजी को दूध चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय पीपल के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं चतुर्थ भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। कुछ गलतफहमियों से भी आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना होगा। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। हालांकि 10 जून से 27 अगस्त तक का समय कुछ अनुकूल रहेगा। इस अवधि आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेगें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको कई मामलों में सफलता मिलेगी। किसी अनुभवी व्यक्ति के मिलने से आपके काम को एक नया आयाम मिलेगा। अपने काम को पूरा करने के लिये आप में प्रचुर उत्साह और विश्वास रहेगा। व्यवसाय के लिए की गई लम्बी यात्राएं सफल सिद्ध होंगी। लेकिन राहू और शनि की प्रतिकूलता के कारण रोजगार के कार्यों में आपको सावधान रहने की आवश्यकता है। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें और करना बहुत जरूरी हो तो महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृति पर भी अंकुश लगाएं

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें।

10 जून से 27 अगस्त के अंतराल में आपको संचित धन की प्राप्ति हो सकती है। भूमि, भवन व वाहन मिलने के योग बन रहे हैं। बच्चों की उच्च शिक्षा पर आप अधिक खर्च करेंगे। माता पिता की बीमारी में आपका अधिक व्यय होगा। परन्तु धनागन में निरंतरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए शुभ नही है। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ

तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी।

10 जून से 27 अगस्त के अंतराल में पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। पारिवारिक माहौल से आपको सहारा मिलेगा। परिवार में सब लोग एक-दूसरे की सहायता करेंगे। अगस्त के बाद अचानक आपकी माताजी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा तथा आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंतित रहेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

बच्चों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके बच्चों की उन्नति होगी तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़कर कार्य करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही शुभ है।

आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं। आपकी दूसरी संतान के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के मामले में यह समय अधिक आनंद देने वाला नहीं है। आपको मौसमजनित बीमारियाँ अपनी चपेट में ले सकती हैं। किसी लंबी चली आ रही बीमारी के उपचार में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। आकस्मिक चोट लगने की संभावनाएं भी बनी हुई हैं। अनिद्रा की शिकायत आपको परेशान कर सकती है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें वरना मानसिक तनाव बढ़ सकता है।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेषकर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। अतः शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन व महामृत्यंजय का पाठ कराएं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्ड वेयर से संबंधित कार्य करने वाले जातकों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा रहने वाला है। नौकरी करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

विदेश गमन के कार्यक्रम बाधित हो सकते हैं। धर्म-कर्म से संबंधित गतिविधियों में आपकी रुचि आपको कई धार्मिक यात्राएं करा सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कहीं घूमने जा सकते हैं। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। वर्षान्त में कुछ अवांछित यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक होंगे। पूजा पाठ यज्ञ अनुष्ठान में आपका मन खूब लगेगा। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे, और कर्म ही पूजा है, इस बात को चरितार्थ करेंगे। पंचमस्थ गुरु के कारण आप गुरु मन्त्र ले सकते हैं तथा उस मन्त्र की साधना करेंगे। गुरु के प्रति आपकी श्रद्धा व विश्वास बढ़ेगा तथा आप उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- प्रत्येक सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- मंगलवार का व्रत करें व हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपकी व्यापारिक दक्षता की परीक्षा लेने वाला है। कारोबार में मुनाफे के लिए यह आवश्यक है कि आप गहन चिंतन करने और लोगों से सलाहादि करने के बाद ही कोई कदम उठाएं। आपकी एक छोटी गलती आपके बड़े नुकसान का कारण बन सकती है। किसी के ऊपर आंख बन्द करके विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है क्योंकि कोई करीबी या दोस्त आपको धोखा दे सकता है। व्यावसायिक लेन-देन को लिखित रूप में ही पूरा करें नहीं तो बाद में आपको ज्यादा नुकसान होने की संभावना है।

दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि नौकरी करने वालों के लिए शुभ है। कार्यस्थल पर आपका प्रदर्शन बेहतर रहेगा और वरिष्ठों तथा अधीनस्थों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में पदोन्नति तथा सैलरी में वृद्धि होने का योग बन रहा है। व्यापारियों के लिए वर्षान्त ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं, जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध किसी हानि की ओर संकेत कर रहा है। गलत निवेश नीति के कारण नुकसान होने की संभावना है। अतः पूरी एहतियात बरतें। किसी भी अंजाम पर पहुंचन से पहने तथ्यों की पूरी तरह से जांच-पड़ताल कर लें। अति-आत्मविश्वास और अहंकार आपके नुकसान का कारण बन सकता है। लेकिन सही दिशा में उठाया गया कदम और कड़ी मेहनत जरूर रंग लाएगी तथा स्थितियों में सुधार होगा क्योंकि 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय आपके लिए अनुकूल हो रहा है।

काम करने की क्षमता और आय के नए स्रोतों में वृद्धि होगी। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को मुनाफा हो सकता है फिर भी कोई प्रमुख निर्णय लेते वक्त समझदारी का परिचय देना आवश्यक है तथा भावनाओं में बहकर पैसे खर्च करने से बचें क्योंकि सितम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अष्टम स्थान का राहु अचानक कोई बड़ा खर्च ला सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपकी माता के साथ कुछ अनबन हो सकती है और उनकी सेहत भी खराब हो सकती है। अतः उनका पूरा ख्याल रखें। पिता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे और उनके साथ अच्छा समय व्यतीत होगा। 30 जुलाई से सितम्बर तक का समय आपके भाईयों एवं बच्चों के लिए शुभ है।

सितम्बर के बाद आपके ईष्ट-मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं तथा उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। आप अपने घर परिवार के सदस्यों के हित के बारे में सोचेंगे। यदि उनके लिए आपको पैसे भी खर्च करने पड़े तो आप हिचकिचाएंगे नहीं, इन सबके बावजूद भी बीच-बीच में परिवार के कुछ सदस्यों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अपनी समस्याओं के समाधान के लिये परिवार पर अधिक निर्भरता उचित नहीं होगी।

संतान

पंचम भाव पर राहु की दृष्टि संतान के लिए अच्छी नहीं है। संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। 30 जुलाई से गुरु ग्रह के गोचर के कारण बच्चों को आनन्द एवं अभूतपूर्व खुशियों का अनुभव होगा।

आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। सफलता के मार्ग पर सबसे आगे रहेंगे। आप उम्मीदों से बढ़कर उन्नति करेंगे। उनके अच्छे कार्यों के कारण आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आपके प्रति उनके दिल में सम्मान का भाव बढ़ेगा तथा वे आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए 11 सितम्बर से पहले गर्भाधान का सुन्दर योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि अचानक आपके स्वास्थ्य को खराब कर सकती है। अतः इस वर्ष आपको ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है। कंधो, जांघ, जननांग या लीवर प्रभावित हो सकता है। पीठ दर्द व पैद दर्द से भी परेशानी हो सकती है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमारियों से बचा जा सकता है। हालांकि 30 जुलाई से सितम्बर तक का समय अनुकूल रहेगा।

सितम्बर के बाद समय बहुत ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। अष्टम स्थान का राहु लम्बी बीमारी दे सकता है। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की ज्यादा

आवश्यकता है। तुला दान या महामृत्यंजय जाप के माध्यम से नकारात्मक प्रभाव को कुछ कम किया जा सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक है। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने होंगे। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ ाई करना चाहते हैं उनके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है। विदेश में आपको अच्छी सफलता मिल सकती है।

30 जुलाई से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। तकनीकी, कानून, इंजीनियरिंग, मेडिकल जैसे क्षेत्र से जुड़े विद्यार्थियों के लिए समय लाभप्रद है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। राहु केतु के प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्राएं आपकी अचानक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी मोटी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है। जो आपके लिए सुखद नहीं रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा। राहु शनि एवं गुरु ग्रह के गोचर प्रतिकूल होने के कारण पूजा पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अपेक्षाकृत कम ही कर पाएंगे।

घर में साफ-सफाई, पूजा-पाठ व पवित्रता का माहौल बनाने व माता की सेवा करने से शनि के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से कार्यों में आने वाले व्यवधानों से तथा संतान संबंधी चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा दान करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- नित्य दुर्गा कवच का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए मिला-जुला रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर व्यवसाय में उन्नति करेंगे। 16 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको व्यवसाय में सफलता मिलेगी। किसी के साथ साझेदारी में कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं जिसमें आपको वांछित सफलता मिलेगी तथा आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। व्यापार में पूंजी लगाने वाले नए लोग मिलेंगे। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण कुछ विरोधी व गुप्त शत्रु आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

व्यापार का विस्तार करने से पहले नुकसान होने की संभावनाओं का ध्यान भी अवश्य रखें, क्योंकि अष्टम स्थान में राहु ग्रह का गोचर शुभ नहीं है। धैर्य से काम लें तथा जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। जो लोग नौकरी या व्यवसाय के चलते विदेश जाने की योजना बना रहे हैं, उन्हें सफलता मिलने की संभावना है। यदि आप शेयर बाजार से जुड़े हैं तो अधिक लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

16 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति के लिए मददगार साबित होगी। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी। आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए बेहतर साबित होगा।

किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है। अतः पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें नहीं तो अष्टम स्थान का राहु अचानक धन हानि करा सकता है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपको भाईयों का सहयोग मिलता रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिसमें परिवार के सभी लोग सम्मिलित होंगे। सप्तमस्थ गुरु

के कारण धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे।

मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इस वर्ष आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाएगा तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेगा।

संतान

इस वर्ष आप संतान को लेकर अत्यधिक चिंतित रहेंगे, क्योंकि आपके बच्चे पढ़ाई में लापरवाही बरतेंगे और जिद्दी भी होंगे, जिससे घर के वातावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए यह समय शुभ नहीं है।

द्वितीय संतान के लिए समय अपेक्षाकृत बेहतर होगा। उसके कार्य व्यवसाय के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे परंतु स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां रह सकती हैं।

स्वास्थ्य

16 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए शुभ है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अष्टम स्थान का राहु अचानक मौसम संबंधित बीमारियों से ग्रस्त कर सकता है। मोटापा तथा उदर जनित बीमारियां भी दे सकता है। तली हुई चीजों का सेवन कम करें नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। जो विद्यार्थी विदेश या दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। आध्यात्मिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा शोध कार्य करने वालों के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ है। इन लोगों को वांछित सफलता मिल सकती है।

यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या ग्रहण करना चाहते हैं तो समय अनुकूल है। इस समय का किया गया परिश्रम आने वाले समय के लिए लाभप्रद रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ विदेश यात्रा के लिए शुभ है। द्वादश स्थान पर राहु एवं गुरु की दृष्टि अचानक विदेश यात्रा करा सकती है। 16 फरवरी के बाद आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। धर्मपत्नी के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द की अनुभूति करेंगे।

इस वर्ष मुख्यतः सारी यात्राएं लाभप्रद होंगी। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय एकाग्रता बहुत ही जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में राहु ग्रह का गोचर दुघटर्ना इत्यादि की संभावना बनाता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप अत्यधिक व्यस्त रहेंगे परन्तु 16 फरवरी के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा तथा दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा। साधना, योग के माध्यम से आप अपनी आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाने की कोशिश करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा नीली वस्तु का दान करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें तथा प्रतिदिन गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(16/09/2023 - 16/09/2041)

राहु की महादशा 16/09/2023 को आरम्भ और 16/09/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष। आपकी जन्मकण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपके जीवनचर्या में उन्नति, भाई-बहनों तथा सम्बन्धियों से लाभ, छोटी यात्रा तथा शक्ति में वृद्धि होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा इच्छाओं की पूर्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सुखी तथा आशावादी होंगे। राहु के कारण आपको हर तरह की भोजन के मामले में हर तरह की अतिशयता से बचना चाहिए। गरिष्ठ भोजन से बचें। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन क्रिया में गड़बड़ी, चर्मरोग, पित्त से सम्बन्धित रोग, बुखार, कान तथा निचली भुजा में कष्ट हो सकता है। सावधानी बरतने से इनमें से अधिकांश बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपके पास धन होगा, आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे और निवेश तथा सट्टा लाभदायक होगा। इस अवधि में आपको सम्पत्ति, समृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा। आपकी अनेक इच्छाएं आकांक्षाएं पूरी हो सकती हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेखा, कम्प्यूटर, खेल, पराविज्ञान तथा जलसेवा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, एण्टीबायोटिक दवाओं, चमड़े के सामान, लोहा और इस्पात आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को विरोधियों पर विजय, कार्यस्थान में अनुकूल स्थिति, लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके सहकर्मी तथा अधीनस्थ कर्मचारी आपके सहयोगी होंगे। आपका स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आर्थिक समृद्धि तथा महत्वाकांक्षा की पूर्ति और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आवास में परिवर्तन सम्भव है। जमीन-जायदाद के मामलों में हानि कम करने के लिए सावधानी बरतना चाहिए। आप वाहन खरीद सकते हैं। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु लाभदायक यात्रा होगी। शुक्र तथा शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने महत्वाकांक्षा की पूर्ति

करेंगे। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। अर्थशास्त्र, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप पराविज्ञान, खेल, दर्शनशास्त्र आदि में रूचि रखते हैं और शिक्षा से अलग गतिविधियों में आगे बढ़ेगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे आपकी खुशी के साधन होंगे। आपके जीवनसाथी को सुख, निवेश तथा सट्टे में सफलता, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी अचानक छोटी यात्रा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि आपके पिता को संबंधियों से लाभ मिलेगा और यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, सम्पत्ति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सम्पत्ति-समृद्धि की प्राप्ति और इच्छाओं की पूर्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपको हर प्रकार का लाभ और प्रतिष्ठा मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्यति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्नति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शिक्षा उत्तम होगा और सट्टे में लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शादी, साझेदारों से लाभ तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, संबंधियों से सहायता तथा जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

अंर्तदशा :- राहु - राहु
(16/09/2023 - 29/05/2026)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 29/05/2026 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। एकादश भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी और प्रसिद्ध बनेंगे। गरीबवर्ग के लोगों के नेता बन सकते हैं। विदेश जा सकते हैं। कान के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु गायत्री मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - गुरु
(29/05/2026 - 22/10/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 29/05/2026 को प्रारंभ होकर 22/10/2028 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 3, 5, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, ज्ञानवान, धनी और बुद्धिमान बनेंगे। पर्याप्त संख्या में उत्तम मित्र होंगे। जरुरतमंदों की मदद करेंगे। इस अवधि में विकसित गुणों का समुचित उपयोग भविष्य तक लाभकारी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- राहु - शनि
(22/10/2028 - 29/08/2031)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 22/10/2028 को प्रारंभ होकर 29/08/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। अष्टम भाव में स्थित शनि दीर्घायु का परिचायक होता है।

इस अवधि में आप कर्मठ होंगे। नेत्रदोष से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। निम्न स्तर के विपरीत लिंग के व्यक्ति से मित्रता हो सकती है। श्वसन तंत्र के रोगों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(29/08/2031 - 17/03/2034)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 29/08/2031 को प्रारंभ होकर 17/03/2034 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान बनेंगे, विज्ञानादि विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। विभिन्न नगरों में व्याख्यान दे सकते हैं। पिता और गुरु से संबंध मधुर रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(17/03/2034 - 05/04/2035)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 17/03/2034 को प्रारंभ होकर 05/04/2035 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप भावनात्मक रूप से विचलित हो सकते हैं। प्रत्येक कार्य में सावधानी अपनाना श्रेयस्कर रहेगा। उदर रोग हो सकता है, अतः खानपान में संयम अपनाने से लाभ होगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(05/04/2035 - 05/04/2038)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 05/04/2035 को प्रारंभ होकर 05/04/2038 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके उत्तम मित्र होंगे, सामाजिक जीवन सफल रहेगा, उच्चपद पर आसीन होंगे, धनी बनेंगे। सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। बहुत सी यात्राएं करेंगे, लोकप्रिय बनेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से मित्रता होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(05/04/2038 - 27/02/2039)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 05/04/2038 को प्रारंभ होकर 27/02/2039 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और

उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धनी बनेंगे ; ज्ञानार्जन करेंगे। बुद्धिमत्ता, प्रसिद्धि और वाहन का योग है। विरासत में जायदाद प्राप्त हो सकती है। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा, संगीत में रुचि होगी, लोकप्रियता बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें।

प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- राहु - चन्द्र
(27/02/2039 - 28/08/2040)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 27/02/2039 को प्रारंभ होकर 28/08/2040 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

चंद्रमा मन और माता का कारक है। लग्न में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

आप सुंदर, संवेदनशील और मूड़ी हैं। इस अवधि में घरेलू सुख और माता से संबंध उत्तम होंगे।

आप बेचैन, संवेदनशील और कल्पनाशील होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी मगर कुछ बाधाएं आएंगी। आय अच्छी होगी, उच्चपद प्राप्त होगा। क्रोध में आपा खोने से बचना अनिवार्य है, अन्यथा बहुत हानि होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

चंद्रमा को चंद्र उदय के समय मंत्रोच्चार करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- राहु - मंगल
(28/08/2040 - 16/09/2041)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 16/09/2023 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 28/08/2040 को प्रारंभ होकर 16/09/2041 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और

महादशा :- गुरु
(16/09/2041 - 16/09/2057)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 16/09/2041 शुरू तथा 16/09/2057 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, आमदनी, लाभ, समृद्धि, स्वास्थ्य लाभ और भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति आपकी कुण्डली में एकादश भाव में है तथा तृतीय, पंचम एवं सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए साहस एवं समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु एकादश भाव में स्थित होकर तृतीय भाव को (पंचम एवं सप्तम भावों के अतिरिक्त) देख रहा है जिसके फल स्वरूप आप हिम्मत, बहादुरी तथा मजबूती के साथ सभी समस्याओं को झेल पाएंगे और कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको या आपके स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं कर पाएगी और आपको सामान्य कार्य करने में असुविधा नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु एकादश भाव अर्थात आय भाव में स्थित है तथा अपने ही भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिसके फलस्वरूप आप इस दशा काल में चल या अचल संपत्ति अर्जित नहीं कर पाएँगे और भोग विलास की वस्तुओं पर खर्च करते हुए एक सामान्य जीवन का आनन्द लेंगे।

व्यवसाय :

यदि आप नौकरी में हैं तो आपको उन्नति तथा आय एवं धन में वृद्धि मिलेगी। व्यवसाय के प्रति अनेक नये विचार आपके दिमाग में आएंगे जिससे आप अपने व्यवसाय में नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अपके मित्र व्यवसाय में उन्नति करने की आपको प्रेरणा देंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय तथा उत्साहपूर्ण बनाएँगे। गुरु की एकादश भाव से सप्तम अर्थात जीवन साथी के भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपके जीवन साथी हमेशा आपकी परेशानी में हाथ बँटाने के लिए तैयार रहेंगे। आपके बड़े भाई तथा मित्र भी आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी ज्ञान की खोज के प्रति रुचि रहेगी।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(16/09/2041 - 04/11/2043)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 16/09/2041 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 16/09/2041 को प्रांरभ होकर 04/11/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको भौतिक प्रगति के बहुत अवसर मिलेंगे। बड़े भाई-बहनों और चाचा से संबंध उत्तम रहेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी, सम्मान बढ़ेगा, पुरस्कृत हो सकते हैं। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। बुद्धि और विवेक उत्तम रहेंगे। घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं। विदेश यात्रा संभव है। जीवनस्तर उच्च होगा, चुनाव और अन्य गतिविधियों में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता को साहित्य से लाभ होगा। माता को साझेदार से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, धन, कार्यों में सफलता और आत्मविश्वास में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा और कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा; यात्राएं होंगी, जीवनस्तर सुधरेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधासंपन्न होगा, बहुत से सुअवसर मिलेंगे, शत्रु परास्त होंगे। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान और शरीर के निचले हिस्से में कोई मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं, हल्दी और पीले अनाज दान में दें।

अंर्तदशा :- गुरु - शनि
(04/11/2043 - 17/05/2046)

आपकी बृहस्पति की महादशा 16/09/2041 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/11/2043 को प्रारंभ होकर 17/05/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। वसीयत, विरासत या उपहार द्वारा धनागम हो सकता है। अचानक, अप्रत्याशित धन आ सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। जीवनशैली में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आप शक्तिशाली, प्रसिद्ध, साहसी और प्रसन्न होंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। सुख-साधन और घरेलू सुख उपलब्ध रहेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है। शिशु का जन्म संभव है।

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे मगर आय

भी अच्छी होगी। माता सुखी और भाग्यशाली रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, सम्मान में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; नींव सुदृढ़ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, सुख-साधन उपलब्ध होंगे; अचल संपत्ति से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मामूली परिवर्तन हो सकता है, यात्रा होगी, उत्साह उत्तम रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदारों से लाभ होगा।

गंभीर बीमारियों का ठीक से इलाज करवायें। अरिष्ट से बचाव के लिए मछलियों को भोजन दें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

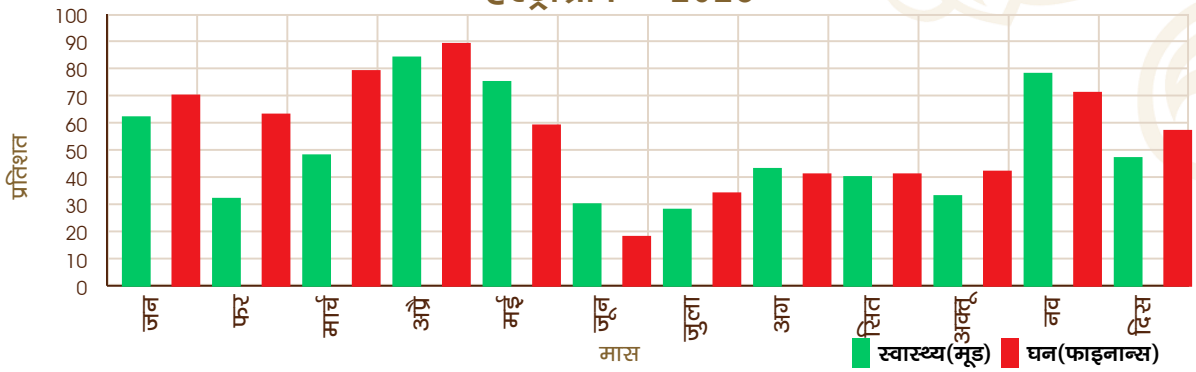

एस्ट्रोग्राफ - 2026

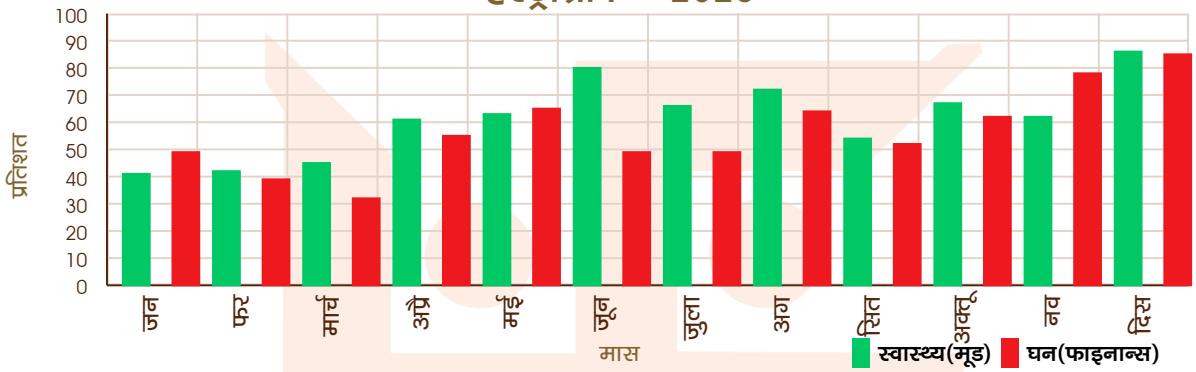

एस्ट्रोग्राफ - 2027

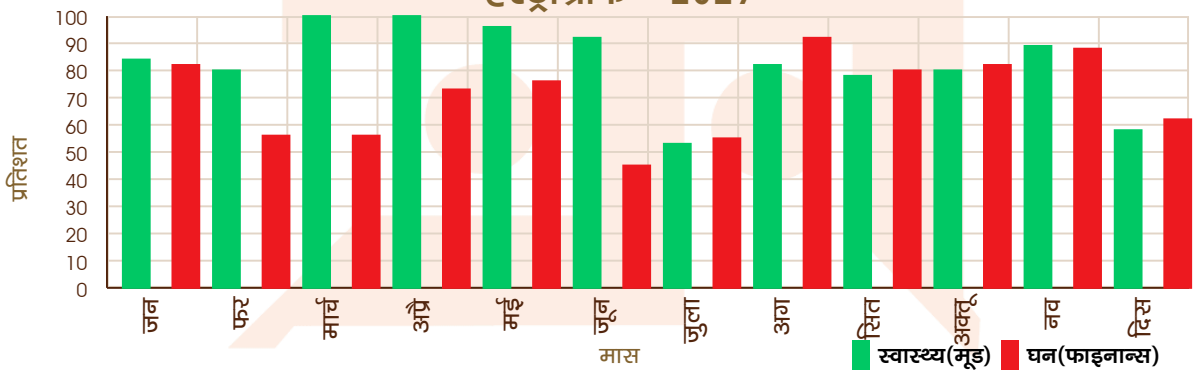

एस्ट्रोग्राफ - 2028

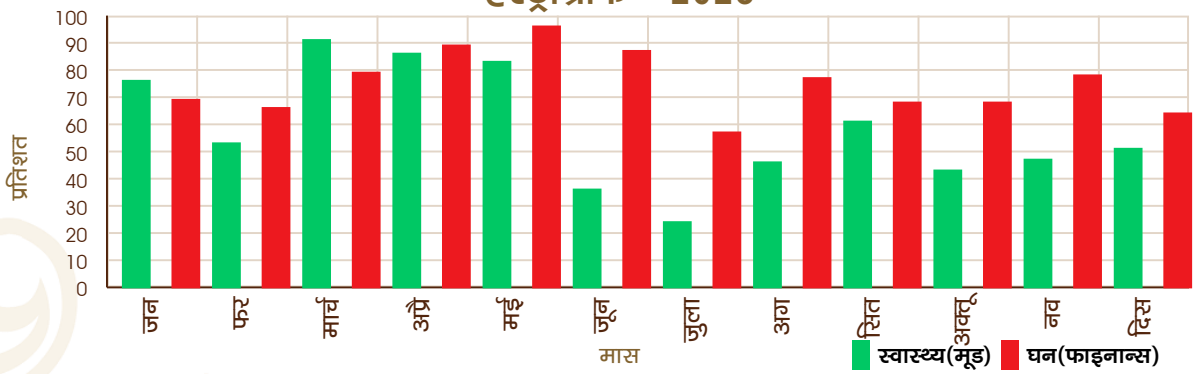

एस्ट्रोग्राफ - 2029

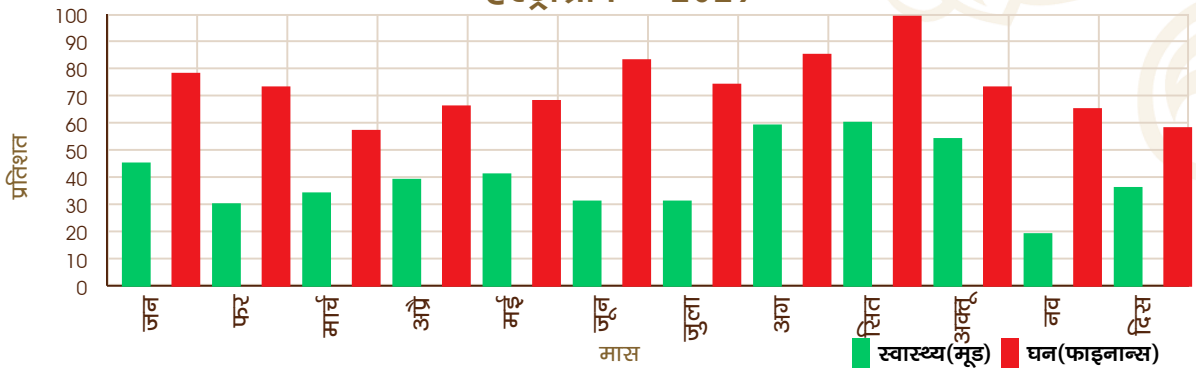

एस्ट्रोग्राफ - 2030

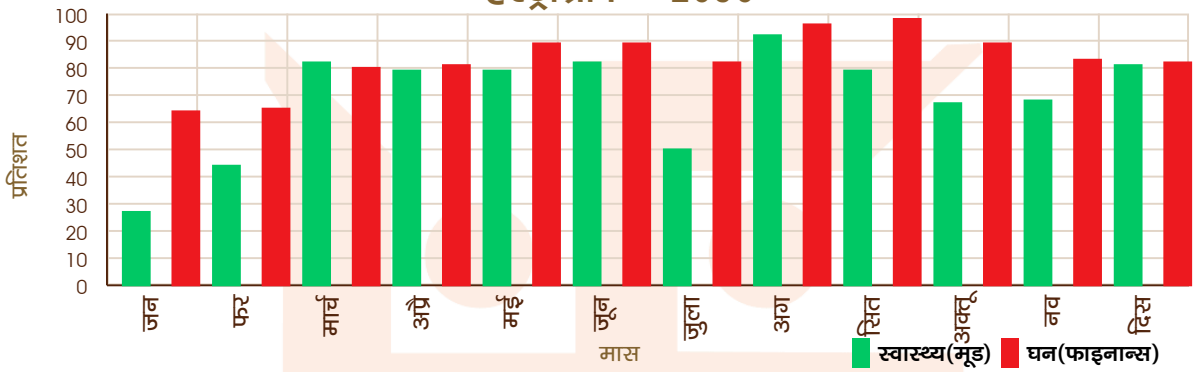

एस्ट्रोग्राफ - 2031

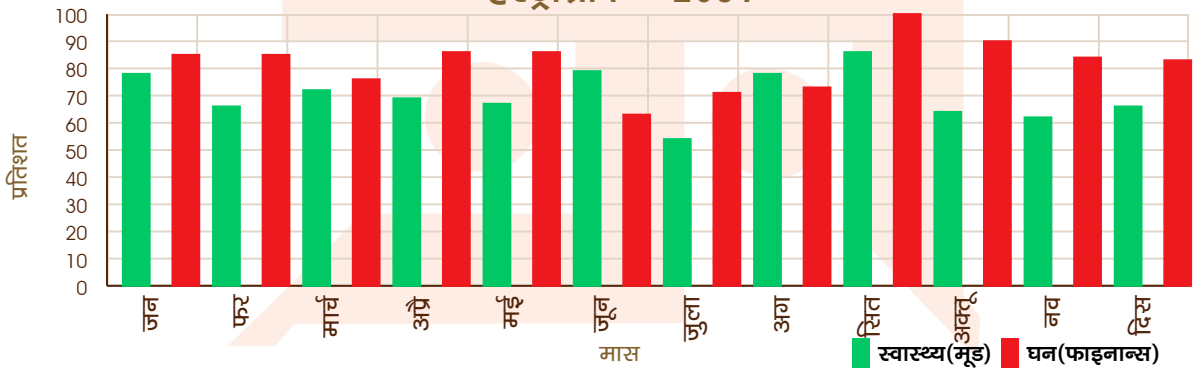

एस्ट्रोग्राफ - 2032

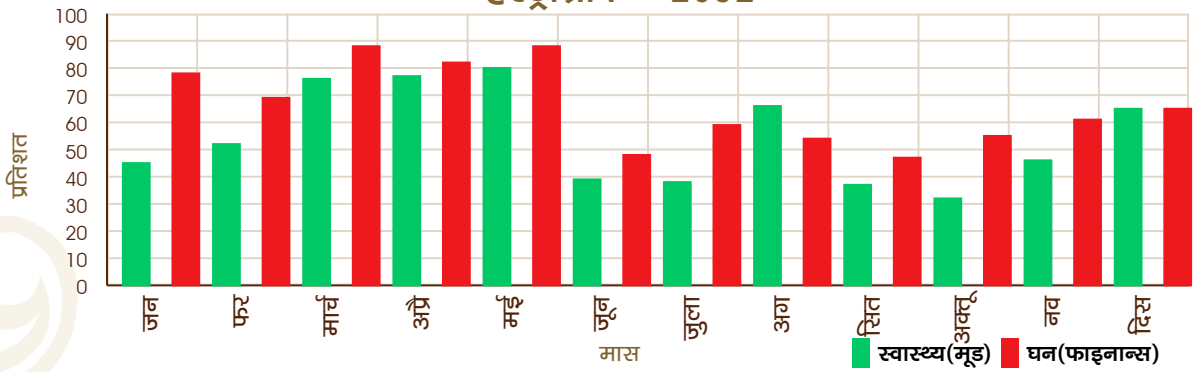

एस्ट्रोग्राफ - 2033

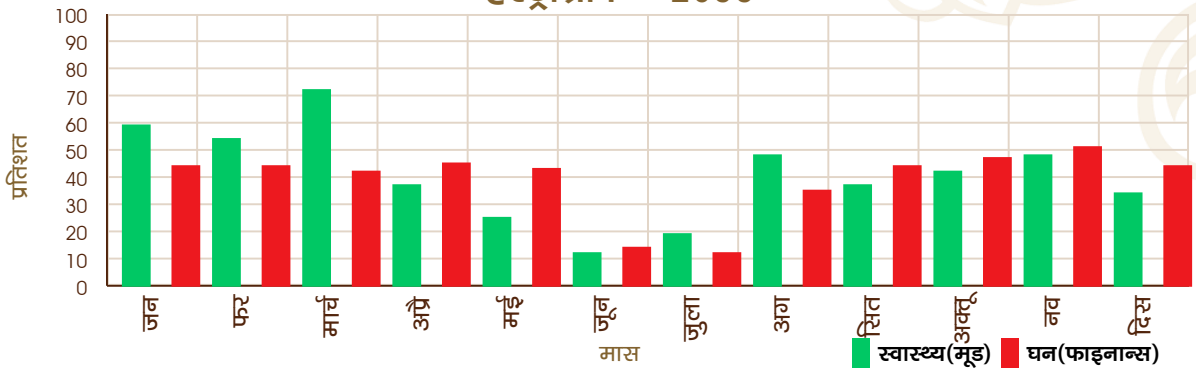

एस्ट्रोग्राफ - 2034

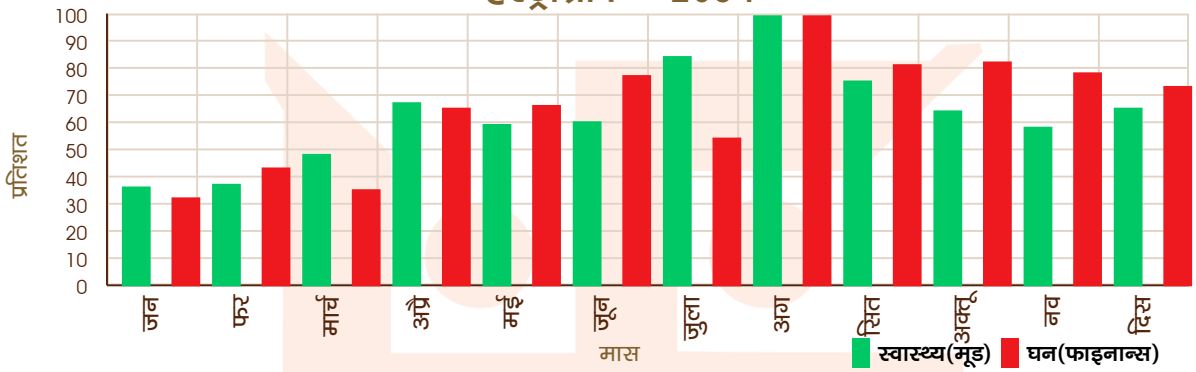

एस्ट्रोग्राफ - 2035

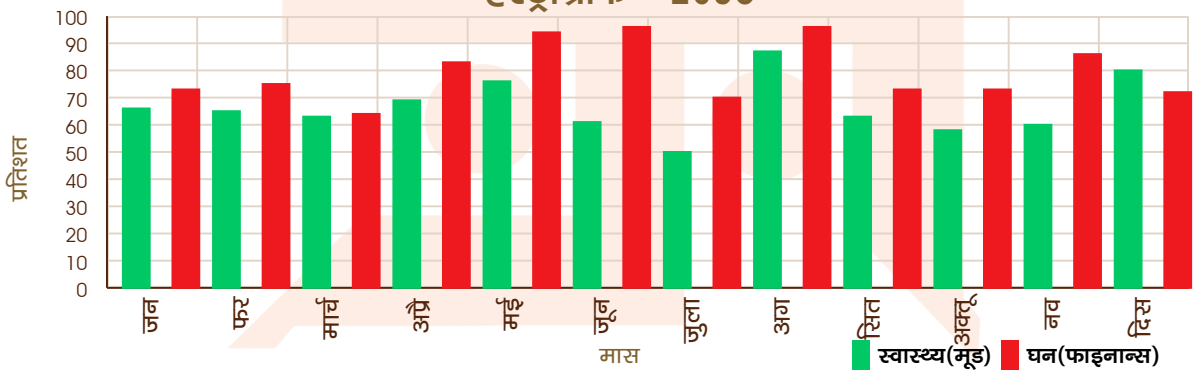

एस्ट्रोग्राफ - 2036

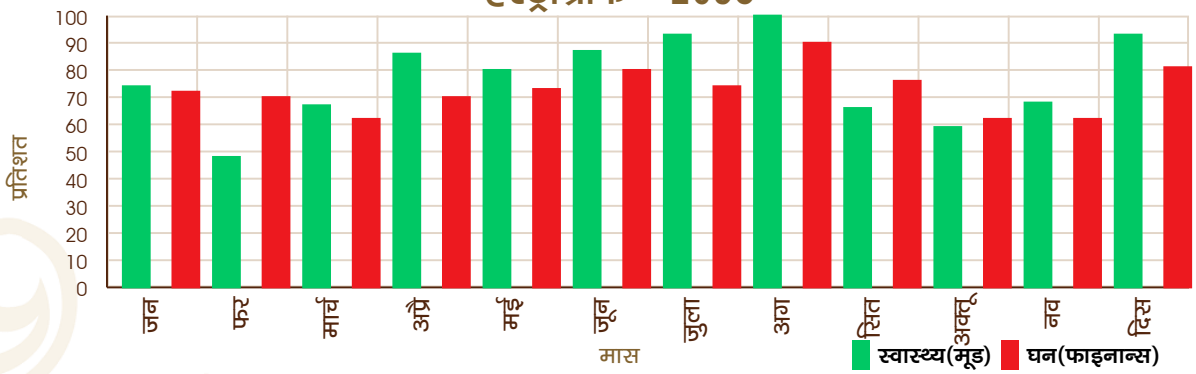

एस्ट्रोग्राफ - 2037

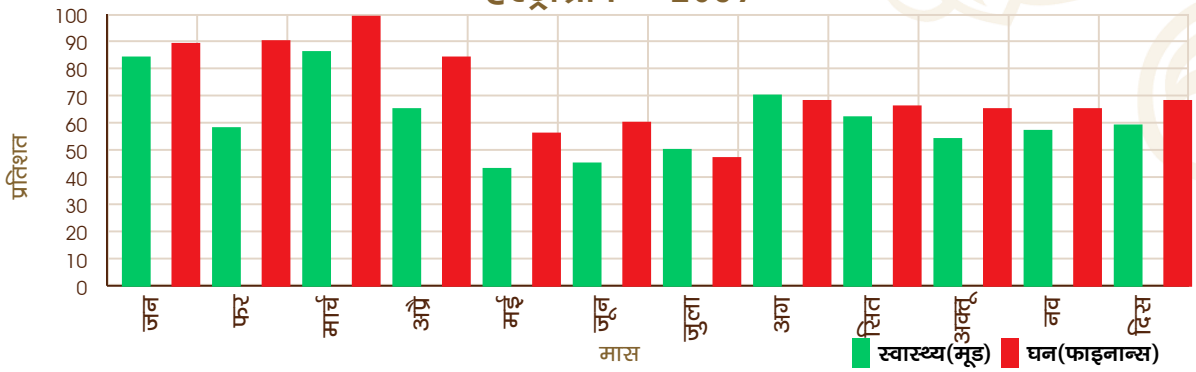

एस्ट्रोग्राफ - 2038

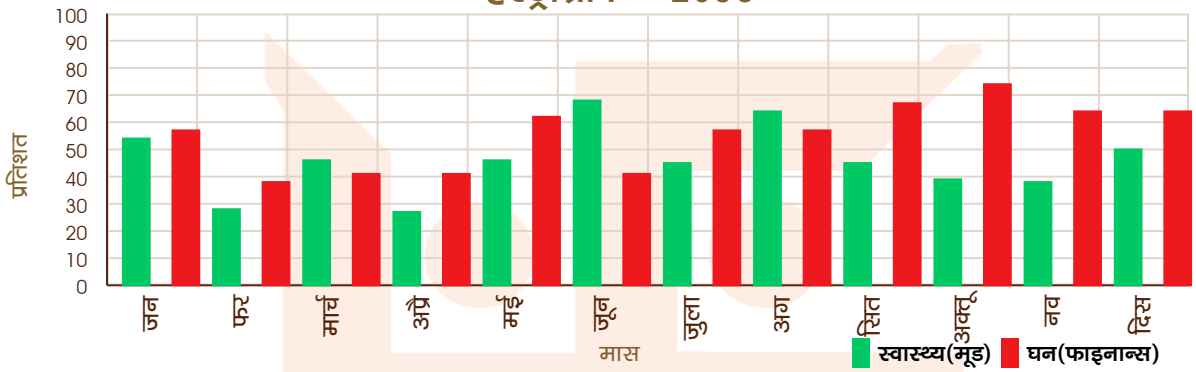

एस्ट्रोग्राफ - 2039

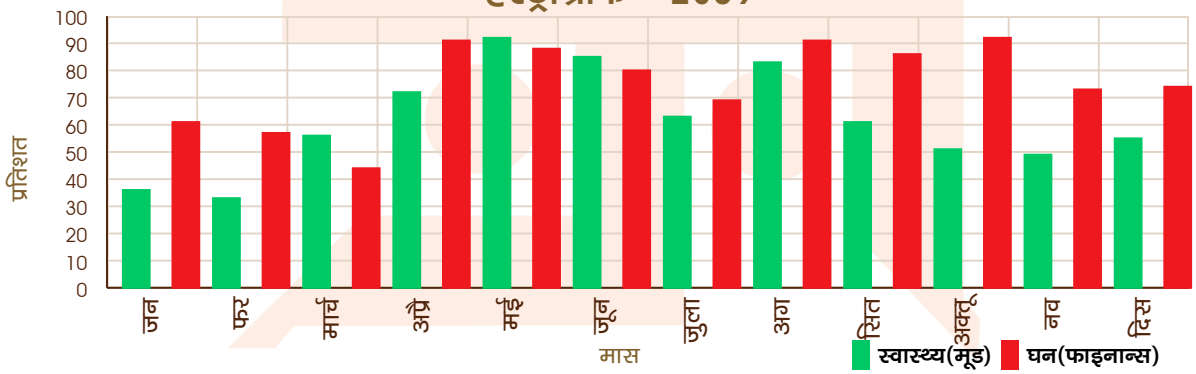

एस्ट्रोग्राफ - 2040

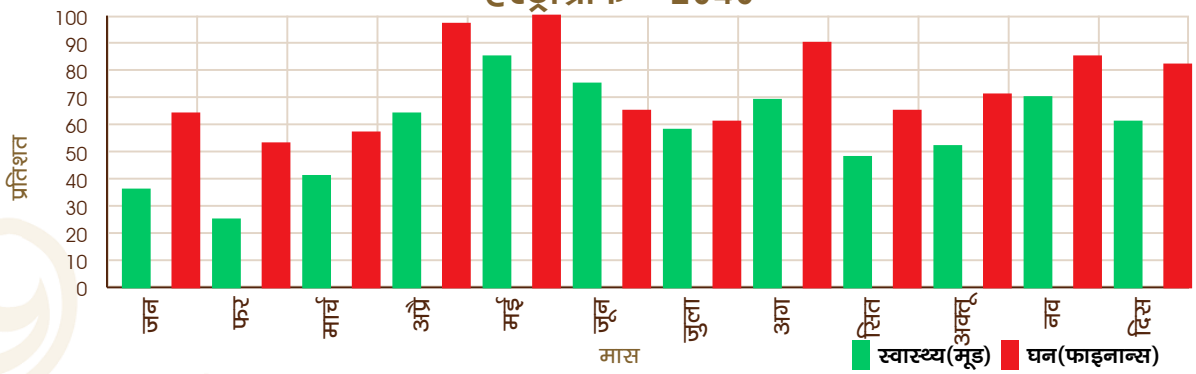

एस्ट्रोग्राफ - 2041

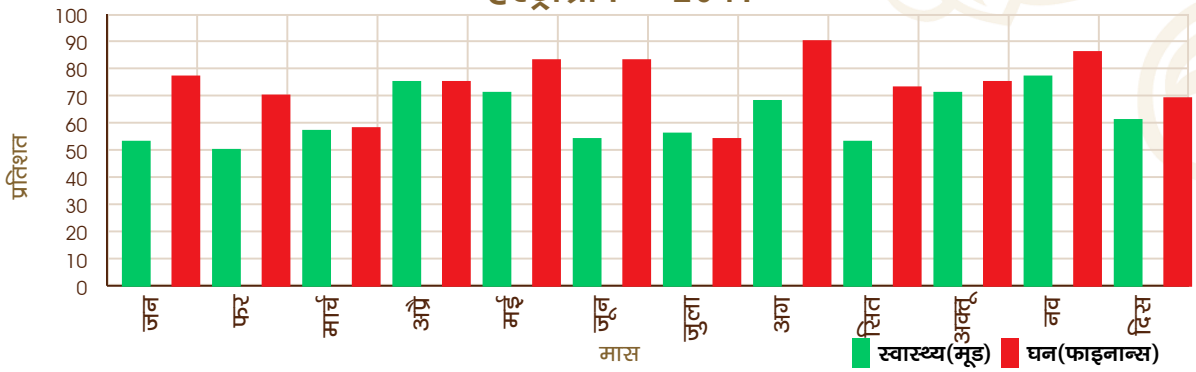

एस्ट्रोग्राफ - 2042

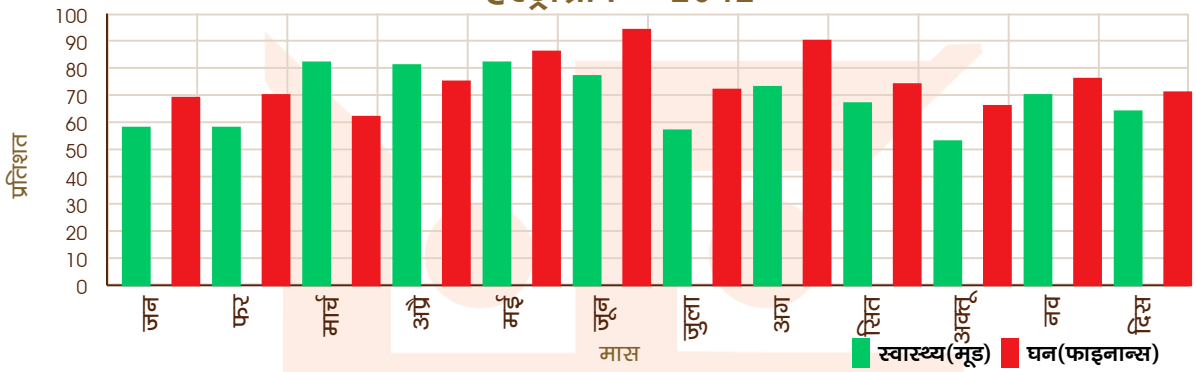

एस्ट्रोग्राफ - 2043

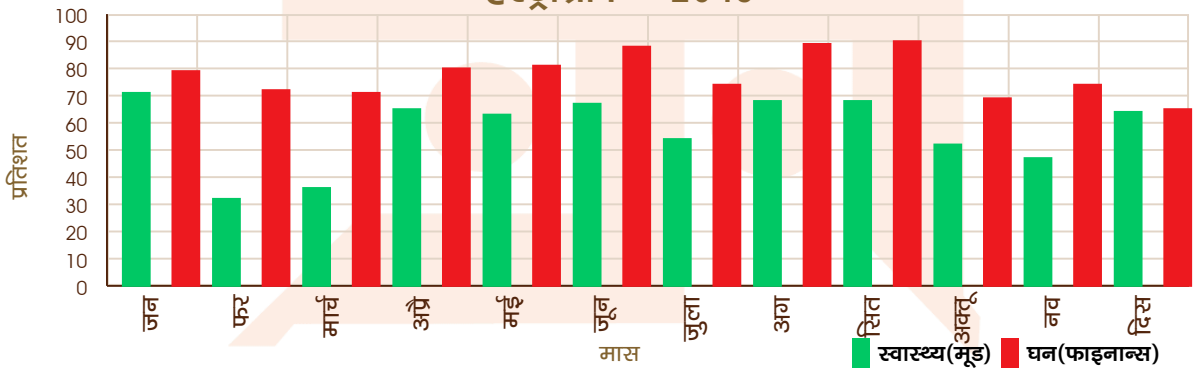

एस्ट्रोग्राफ - 2044

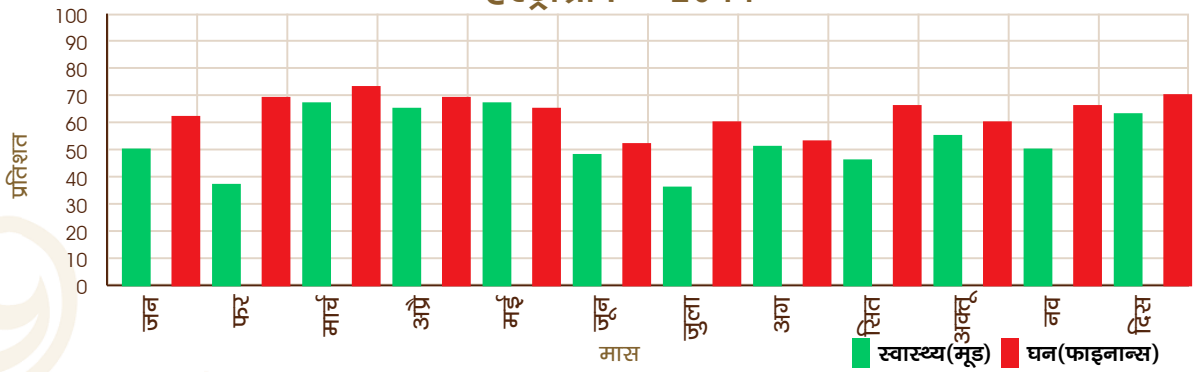

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,शुक्र,शनि

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्यातारव्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।
योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35, 36।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।

प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदग्रां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः।
कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः।।
।। फलदीपिका।। अ.6/ श्लोक 44-45।।

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप शुक्ल पक्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे। उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे। आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान, दीर्घायु और लोकपति होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप ल क्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप

सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,केतु,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अनेक वाहन प्राप्ति योग

सौख्याधिपे शोभनखेचरेण भाग्येश्वरेणापि युतेथ वा स्यात् ।
सेनाबहुत्वं समुपैति जातो बहुत्वदेशाभरणानि यानम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-161 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश शुभ ग्रह हो तथा भाग्येश से भी युक्त हो तो जातक बहुत सेना तथा देश-विदेश के वस्त्राभरणभूषणवाहनादि से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सभी सुखों से युक्त होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,केतु,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।

।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग शरीर योग

केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ विकलाङ्गः।
।। बृहद्योगरत्नाकर पृ. -5.।।

यदि जन्मकुंडली में केंद्र (1-4-7-10) में सूर्य और चंद्रमा दोनों ग्रह स्थित हो तो

जातक विकलांग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अंग से हीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन

अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।